CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूदान-दीपिका

भूदान-यज्ञ तथा सम्पत्तिदान-यज्ञ का हृदयग्राही विवेचन

एवं

[१९५५ से ६३ तक लिखे गये व 'भूदानयज्ञ' पत्रिका में प्रकाशित]

भूदान-सम्बन्धी लेख तथा यात्रा संस्मरण

तथा दादा धर्माधिकारी का

मुखदर्पण

विमला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

S.3
CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूदान-दीपिका

[भूदान-यज्ञ तथा सम्पत्तिदान-यज्ञ का हृदयग्राही विवेचन]

एवं

[—१९५५ से ६३ तक लिखे गये व 'भूदानयज्ञ' पत्रिका में प्रकाशित—]

भूदान-सम्बन्धी अन्य लेख तथा यात्रा-संस्मरण

तथा दादा धर्माधिकारी का

'नखदर्पण'

विमला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

© विमला ठकार / विमल-प्रकाशन-ट्रस्ट
शिवकुटी, आबू पर्वत, ३०७५०१

संयुक्त संस्करण—प्रथम
जनवरी १९९३

देय—२०/-

मुद्रक :—
वर्द्धमान मुद्रणालय,
जवाहर नगर, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निवेदन

परम श्रद्धेया "दीदी"—विमलाजी—द्वारा लिखे गये लेख एवं उनके निजी स्वाध्याय के नवनीत-रूप सङ्कलन जो उन्हीं की लेखनी से (१९५४ से ६३ तक) अङ्कित व सज्जित होकर (जब तक वे भूदान-आन्दोलन में सक्रिय रूप से सम्मिलित रहीं एवं फिर ६३ में आबू जाकर जीवन के अन्तः प्रवाही स्रोत में प्रतिष्ठित होकर तदनुसार रहने लगीं—तब तक) 'भूदानयज्ञ'—पत्रिका में प्रकाशित होते रहे थे, कुछ स्वतन्त्र पुस्तिकाओं के रूप में भी प्रकाशित हुए थे, फिर क्रमशः सर्वथा अप्राप्य हो गये थे, उन सबको 'भूदानयज्ञ' की ही पुरानी पंजिकाओं में से एकत्र करके पुनः भारत के सम्मुख लाने की प्रेरणा इस हृदय में अन्तर्यामी प्रभु ने दी। अपने भारत की वर्तमान अधिकांश प्रौढ़-युवा-किशोर-बालक पीढ़ियों की स्थिति आज दिङ्मूढ़ (कोई राह न सूझने वाली) और अतिशय भ्रामक परिवेश तथा वातावरण के कारण भटका कर बरबाद करने वाली दिखती है। ऐसे में श्र० दीदी की विमल-प्रेरणा-भरी वाणी जीवनोत्सुक हृदयों में अवश्य ही उत्साह बल एवं श्रद्धा का सञ्चार करते हुए जीवन जीने की दिशा दिखायेगी ऐसा गहरा विश्वास है।

यद्यपि पुनः १९६८ से अब तक श्र० दीदी के द्वारा सतत चल रही विविध प्रकार की मानव-सेवाओं की गूँज के रूप में भारतीय एवं विदेशी अनेक भाषाओं में उनकी वाणी प्रकाशित होती आई है, होती रहेगी, फिर भी उनकी युवावस्था में उनके द्वारा जो कार्य हुए—अपने अध्ययन का प्रसाद जिस प्रकार जन-सुलभ कराया गया—वह आज की युवा पीढ़ी के लिये विशेष प्रेरणाप्रद अवश्य होगा। क्योंकि दिखाई देता है कि आजकी अधिकांश नई पीढ़ी (प्रायः ५० वर्ष के प्रौढ़ों से लेकर १२ वर्ष के किशोरों तक) में अध्ययन का रस नहीं, अपनी भारतीय एवं वैश्विक सांस्कृतिक विरासत से बेखबर होने के कारण मानसिक-बौद्धिक कंगाली है, इसीलिये आहार-विहार-विचार-भाषा में कहीं तरतीब नहीं, संस्कारिता नहीं। ऐसे में श्र० दीदी की यह वाणी सर्वतोमुख शुभ संस्कार-सिञ्चन करेगी ऐसी आशा है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूदान-सम्बन्धी एवं अन्य विविध लेखों का तीन संकलनों में प्रकाशन एक-साथ किया जा रहा है—

१—भूदान-दीपिका एवं भूदान-सम्बन्धी अन्य लेख, यात्रासंस्मरण, श्र० दादा धर्माधिकारी के 'नख-दर्पण'—सहित।

२—पञ्चामृत—श्र० दीदी का स्वाध्याय-नवनीत एवं विविध लेख,

३—साम्ययोग—साम्यवाद एवं साम्ययोग-विषयक लेख, तत्सम्बन्धी कवितायें।

इनमें कहीं-कहीं 'पृष्ठ-पूर्ति' के लिये श्र० दीदी के ही पुराने-नये लेखनों में से, 'मौन के अनुनाद, 'पावक स्फुलिङ्ग' 'सख्य संवाद' 'युग की माँग' आदि अब अनुपलब्ध पुस्तकों में से कुछ अंश भी उद्धृत हुए हैं।

इसी पुनः प्रकाशन-प्रक्रम में श्र० "दीदी" के द्वारा ही उसी अवधि (१९५६-६०) में लिखित, सम्पादित व सर्वसेवासंघ द्वारा प्रकाशित श्र० दादा धर्माधिकारो जी के लेखों की पुस्तिकायें भी इसी वर्ष क्रमशः प्रकाशित होंगी।

इन सभी नव-संकलित-संस्करणों में श्र० दीदी का नामोल्लेख उसी प्रकार का रहने दिया गया है जैसा प्राचीन प्रकाशनों के समय था। (कहीं 'विमला', कहीं 'विमलाबहन' तो कहीं 'विमलताई'—जैसा कि उन दिनों में उन्हें सम्बोधित किया जाता था एवं स्वयं 'दीदी' द्वारा लिखा जाता था।)

इन सभी प्रकाशनों के लिये बड़े मनोयोग एवं मुस्तैदी से परिश्रम में लगे वर्द्धमान मुद्रणालय के हमारे सभी भाई साधुवाद के पात्र हैं।

इन सभी नवसंस्करणों के सङ्कलन-सम्पादन-प्रूफसंशोधन एवं प्रकाशन में हुई समस्त त्रुटियों-दोषों के लिये क्षमाप्रार्थी—

मकरसङ्क्रान्ति
१९९१

श्र० "दीदी" की ही एक
स्मृतिजीवी सन्तान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुक्रम

[१]

विषय | पृष्ठ

भूदानदीपिका

किसी का अनुवाद-प्रतिवाद नहीं,	१
भारत की मिट्टी का माकूल जवाब	१
समस्या का त्रिविध स्वरूप	४
नयी प्रक्रिया की प्रतीक्षा	५
प्रतिक्रान्ति की आशंका	५
यथार्थ क्रान्ति	६
शस्त्र और कानून का रास्ता	७
कानून की मर्यादायें	७
प्रतिगामी वृत्ति का प्रहार	७
कानून दिल का नहीं	८
कानून की दूसरी मर्यादा	८
तीसरी मर्यादा	९
शासनहीन समाज का आदर्श	९
क्रान्ति का दर्शन	१०
'दान' और 'यज्ञ'	१०
सर्वतोभद्र 'दान'-नीति	१२
कुछ उदाहरण	१२
रोमाञ्चकारी अनोखी प्रक्रिया	१३
लोकशाही का आधार	१४
भगवान् सबके भीतर है	१५
एक हृदयस्पर्शी घटना	१५
युगपुरुष का उदय	१६
बहन राखी बाँध कर लौटेगी	१६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय	पृष्ठ
अन्तर्यामी के दर्शन	१७
आध्यात्मिक शक्ति का चमत्कार	१७
गरीब का दान : हमारा शक्तिस्रोत	१८
गरीबी-अमीरी की जड़	१९
मन्त्रद्रष्टा : युगपुरुष	२०
दरिद्रनारायण का प्रसाद	२०
दूसरों को प्रेरणा मिली	२१
सभी बड़े-छोटे शोषक	२२
बँटवारे के तरीके का रहस्य	२२
साधनदान	२४
जमीन का बँटवारा पहला कदम	२५
कारखाने और बड़े उद्योगों पर लोकस्वामित्व	२५
अनुत्पादक व्यवसायों का निराकरण	२६
श्रम-दान	२७
बुद्धि-दान और समय-दान	२७-२९

[२]

विविध लेख तथा यात्रा संस्मरण

भूदान की आधारशिला : आस्तिकता	३१-३६
—मानव निष्ठा ही ईश्वरनिष्ठा,	
मूलभूत विश्वास ही आत्मनिष्ठा,	
अहिंसा में वैचारिक आक्रमण की गुंजाइश नहीं,	
एक रोमांचकारी अहिंसक प्रयोग,	
शोषण की खींचातानी ही वर्गभेद का कारण	
दीनता और दरिद्रता के निवारण का उपाय	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय	पृष्ठ
उत्पादक की भूमिका और श्रमदान का रहस्य	
समाज के सभी कक्षों में भूक्रान्ति का प्रवेश	
स्वामित्व-विसर्जन का सिलसिला—	
वर्तमान में सतयुग : सर्वोदय	३७
भूदान-यज्ञ आन्दोलन की पार्श्वभूमि	३८-४१
—शान्ति और अहिंसा का आधार	
भूदान-यज्ञ का आरम्भ और आवश्यकता,	
भूदान के द्वारा वर्ग-निराकरण,	
शोषण की वृत्ति का अन्त आवश्यक,	
मूल-विचार, व्यक्ति के द्वारा समाजपरिवर्तन	
गरीबों के दान का अद्भुत चमत्कार	४२-४६
निष्कृष्ट दीनता, जगन्नाथ का रथ	
अदम्य क्रान्ति-निष्ठा, सात्त्विक उत्कटता	
दारुण दरिद्रता, लोकरूपी महादेव	
प्रतिकूलता में अनुकूलता, यश गरीबों का	
तमिलनाडु में मेरी पदयात्रा	४७-५४
आन्दोलन की चार अवस्थायें	५५-५६
विमला बहन के साथ सात दिन यात्रा	५७-६०
श्री शङ्करराव देव : बम्बई का द्विभाषिक राज्य	६१-६२
'श्रमभारती' के साधकों के बीच १.-२.	६३-६४
'धीरेनदा' के साथ, मिहनत कर इन्सान बनें हम	
श्रममय कला और कलामय श्रम,	
पौरुषहीन क्रोध, आज हम प्रभावहीन,	
उनकी पोथी में चरखा-चक्की नहीं है	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय	पृष्ठ
बिखरे हुए मोती	७५-७६
मुक्तात्माओं का अवतार कार्य	
यदि मन्त्र से वैरी मरता हो—	
ज्ञानेश्वरी में पतिव्रता धर्म	
क्रान्तियज्ञ में बाल-गोपालों की दिव्य लीलाएँ	७७-८२
स्त्री समाज से दुनिया की आशायें	८३
पोचमपल्ली से पलनी तक भूदानयज्ञ की प्रगति	८४
सेवाग्राम में नयी तालीम की अध्ययन गोष्ठी	९२
हमें आत्मनिर्भर बनना होगा	९६-९७
अराजकता की एक झलक	९८-१०१
ग्रामदान के बाद क्या होगा ?	१०२-१०९
भूदानकर्मी का कर्तव्य, सब मिलकर सुखी होना है, गाँव वालों का मार्गदर्शन, निर्माण कार्य विश्वासपूर्वक ग्रामदान का सही अर्थ, ग्रामदान की शक्ति शासन और पैसा, हृदय-बुद्धि शुद्ध रखें।	
स्नेहगंगा की धारा में [१]	११०
[२]	११२
[३]	११४
[४]	११७
[५]	१२०
[६]	१२५-१२८
एक आदर्श विद्यालय	१२९-३३
३. **नवदर्पण—दादा धर्माधिकारी**	१३५-१३९
श्रद्धा, व्यक्ति और संघ—दादा धर्माधिकारी	१४०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[–भूदान–दीपिका के विषय में–]

दो शब्द

●

विमलाबहन ठकार एक प्रतिभावान नवयुवती हैं। सुशिक्षित और विदुषी हैं। विदेशों का पर्यटन किया है। भगवद्भक्त हैं। अत्यन्त मीठे भजन गाती हैं। ओजस्वी वक्ता हैं। भूदान-यज्ञ को इनसे जो बल मिला है, वह देश भर में दो-चार से ही मिला होगा। बुद्धिजीवी तथा युवक-समाज को विमलाबहन के भाषणों से विशेष प्रेरणा मिली है।

प्रस्तुत पुस्तिका में विमलाजी का मध्यभारत का एक भाषण छपा है। थोड़े से गंभीर शब्दों में उन्होंने भूदान-यज्ञ तथा संपत्तिदान-यज्ञ का हृदयग्राही विवेचन कर दिया है, और जो साधारण प्रश्न इस सम्बन्ध में पूछे जाते हैं उनका समाधानकारी उत्तर दे दिया है। विमलाबहन ने आम सभाओं तथा शिक्षण-शिविरों में अपने दिये हुए भाषणों से हजारों को भूदान-कार्य में सहयोग देने को प्रोत्साहित किया है।

मैं आशा करता हूँ कि इस पुस्तिका द्वारा उनकी प्रेरक वाणी अधिकाधिक व्यक्तियों के हृदय में प्रवेश करेगी।

१९५६

—जयप्रकाश नारायण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमारे पास जितनी भी जमीन, संपत्ति, बुद्धि और शक्ति है—वह सब हमें आम जनता के लिए प्राप्त हुई है। ये हमारी निजी सम्पत्तियाँ नहीं दैवी सम्पत्तियाँ हैं, परमेश्वर की देनें हैं। उनका विनियोग जनता की सेवा में करना चाहिए। जिस तरह हम कुटुम्ब में मिल-जुलकर काम करते हैं, वैसे ही हमें सृष्टि की उपासना करनी है। अपने सुख-दुःख में दूसरों को हिस्सा देना है।.... हमें जो सारी समाज-रचना बदलनी है, उसीका यह श्रीगणेश है। सबका मन समान हो, सबका हृदय समान हो, सबका मंत्र समान हो। इस तरह साम्ययोग-शिक्षा, जो सब महापुरुषों ने हमें दी थी, उसकी प्राप्ति नहीं, साधना करनी है और उसके लिए पहला कदम यह भूदान-यज्ञ है, क्योंकि भूमि सब प्रकार की सम्पत्ति के उत्पादन का सबसे बड़ा साधन है। उसका सबके काम के लिए, सम्मिलित और संयुक्त उपयोग होना चाहिए—उसमें किसीको कम या अधिक अधिकार नहीं होना चाहिए।

—विनोबा

१९५६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

: १ :

भूदान-दीपिका

किसीका अनुवाद-प्रतिवाद नहीं

भूदान-आन्दोलन स्वातंत्र्य-प्राप्ति के बाद इस देश में से गरीबी और अमीरी के निराकरण के लिए अहिंसा और सत्याग्रह की नीति पर अधिष्ठित एक शानदार इन्कलाब है। हिन्दुस्तान में घूमते हुए मैंने यह अनुभव किया है कि हिन्दुस्तान के सुशिक्षित लोग भी अब तक इस आन्दोलन की महत्ता को नहीं समझ पाये हैं, न सोचने के लिए फुरसत ही निकाल पाये हैं। वे समझते हैं कि यह आन्दोलन गांधीवाद का समर्थन करनेवाला आन्दोलन है; साम्यवाद को टालनेवाला, साम्यवादी क्रांति को रोकनेवाला आन्दोलन है। कुछ व्यक्ति समझते हैं कि दान-धर्म के नाम पर महज जमीन बटोरने और बाँटने का एक आन्दोलन है। मैं आप लोगों से निवेदन करने आयी हूँ कि यह आन्दोलन न तो किसी वाद का अनुवाद है और न किसी वाद का प्रतिवाद ही।

भारत की मिट्टी का माकूल जवाब

यह आन्दोलन सिर्फ जमीन बटोरने का आन्दोलन नहीं है। आज हमारे देश के सामने जो मूलभूत समस्याएँ खड़ी हैं, उनको सुलझाने के लिए भारत की इस धरती में से निकला हुआ एक माकूल जवाब है। विनोबाजी कितना ही महान् व्यक्तित्व रखनेवाले सत्पुरुष क्यों न हों, यदि उनका विचार हमारी राष्ट्रीय समस्याओं के साथ कुछ अनुबन्ध न रखता, उसके पीछे परिस्थिति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में आकांक्षा और आवश्यकता न होती, तो वह विचार समस्त देश को अनुप्राणित न कर पाता और वह बिजली वायु-मंडल में नहीं दौड़ा पाता, जो इधर दो-ढाई वर्षों से उसने इस देश में फैलाई है।

समस्या का त्रिविध स्वरूप

हमारी राष्ट्रीय समस्या का रूप त्रिविध है। उसका राजनैतिक स्वरूप यह है कि सियासी आजादी हासिल करने के बाद हम लोगों ने जान-बूझकर, सोच-समझकर, प्रातिनिधिक लोकसत्ता का निर्माण किया, जनतंत्र का निर्माण किया। यह जनतंत्र हम किस प्रकार सुरक्षित और साबित रखें, यह इस मुल्क के सामने आज बड़ी गम्भीर समस्या है। संसार में जनतंत्र के सबसे बड़े हिमायती इंग्लैण्ड और अमेरिका जैसे देश आज जनतंत्र को न सुरक्षित पाते हैं, न साबित रख सकते हैं। साबित इसलिए नहीं रख सकते कि वहाँ पर गरीबी और अमीरी का अन्त वे जनतंत्र की मार्फत कर नहीं पाये हैं। साबित इसलिए भी नहीं रख पाते कि लोगों की व्यवस्थाओं में जो स्वार्थों का विरोध होता है, उसका परिहार वे कर नहीं पाये। सुरक्षित वे इसलिए नहीं समझते हैं कि जब तक गरीबी और अमीरी रहेगी, तब तक जनतंत्र एक कागजी जनतंत्र (Formal Democracy) के रूप में रहेगा और उसको जनतंत्र का वास्तविक स्वरूप प्राप्त नहीं हो सकता। जनतंत्र को सुरक्षित रखने के लिए आज उस देश के नेताओं को साम्यवाद के विरोध का एक हौआ जनता के सामने खड़ा रखना पड़ता है। जिन देशों में गरीबी का निराकरण हुआ, आर्थिक विषमता का निराकरण हुआ, उन देशों में जनतन्त्र बच नहीं पाया। जनता को जनतन्त्र से हाथ धोना पड़ा। संसार के दार्शनिकों की आज यही धारणा हो गयी है कि जनतन्त्र की मार्फत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आर्थिक विषमता का निराकरण होना असम्भव है। युग का यह हमें आह्वान है, जमाने की चुनौती है। क्या भारतवर्ष जनतन्त्र की मार्फत गरीबी-अमीरी को मिटा सकेगा—जनतन्त्र के संदर्भ में अन्याय और शोषण को हटा सकेगा? मैंने राजनैतिक पहलू के साथ-साथ उसका अविभाज्य आर्थिक पहलू भी संक्षेप में यहाँ रख दिया। जाहिर है कि गरीबी-अमीरी नहीं मिटेगी और अन्याय-शोषण नहीं रुकेगा—जब तक जनतन्त्र सुरक्षित नहीं है। हमको जनतंत्र सुरक्षित रखना है। जनतंत्र की मार्फत गरीबी-अमीरी को हटाना है। इसी समस्या का सांस्कृतिक पहलू यह है कि गरीबी और अमीरी को मिटाने के लिए किसी ऐसी प्रक्रिया का हमको प्रयोग करना पड़ेगा, जिस प्रक्रिया में मानव का मूल्य सुरक्षित रहेगा, इंसानियत को हम बचा सकेंगे।

नयी प्रक्रिया की प्रतीक्षा

आज तक संसार में जितनी क्रान्तियाँ हुईं, जैसा कि उन क्रान्तिकारियों का दावा रहा, उन क्रान्तियों में सामाजिक परिवर्तन के लिए, समाज के ढाँचे को बदल देने के लिए, इन्सान की बलि दी गयी, मनुष्य की हत्या की गयी, विराट् परिमाण में मानव का खून बहाया गया। आज संसार क्रान्ति की ऐसी प्रक्रिया की प्रतीक्षा में है, जिसमें समाज-परिवर्तन के साथ-साथ व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन होगा, राजी-खुशी से होगा। इतिहास के पन्नों से हमने सीखा है कि जब तक व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन स्वेच्छा से नहीं आयेगा, प्रतिक्रान्ति की जड़ बनी रहेगी और उसका डर सरकार के सिर पर सवार रहेगा।

प्रतिक्रान्ति की आशङ्का

छत्तीस-सैंतीस वर्ष पहले रूस में एक महान् प्रयोग वहाँ के क्रान्तिकारियों ने किया। क्या वे क्रान्तिकारी निर्मम थे? क्या वे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निर्घृण थे ? क्या उनके हृदय नहीं था ? क्या उनके बाल-बच्चे नहीं थे ? सब कुछ था; लेकिन उन्होंने सोचा कि पहले हम सामाजिक ढाँचे को बदल देंगे, भौतिक परिवर्तन करेंगे और बाद में कानून के सहारे, दंड-शक्ति और शरीर-शक्ति के आश्रय से, मनुष्य के हृदय और बुद्धि को भी बदल सकेंगे। लेकिन बावजूद इसके कि सरकार के इशारों पर साहित्यिक और संगीतज्ञ नाचते रहे, कलाकार और वैज्ञानिक भी खेलते रहे, आज भी रूस की सरकार प्रतिक्रान्ति के भय से मुक्त नहीं है। बेरिया, मेलेंकोव, मोलोटोव आदि स्टालिन के जीवन-काल में उसके साथी थे, जिम्मेदार ओहदों पर काम करते थे; पर स्टालिन की मृत्यु होते ही चंद महीनों में बेरिया को लोकद्रोही करार दिया गया और अन्त में उसकी हत्या की गयी। जनता का राज्य बने, जनता की सरकार बने और इसके बावजूद प्रतिक्रान्ति की जड़ बनी रहे, क्या इसको आप क्रान्ति कहेंगे ?

यथार्थ क्रान्ति

यदि क्रान्ति से हमारा मतलब मनुष्य के हृदय और बुद्धि में परिवर्तन करना है, यदि क्रान्ति से हमारा मतलब सामाजिक जीवन के मूल्यों में ही आमूलाग्र परिवर्तन कर देना है, यदि इन्कलाब से हमारा मतलब इंसान के दिल और दिमाग में जड़-मूल से तब्दीली लाना है, तो स्पष्ट है कि सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ, जो व्यक्ति के जीवन में स्वेच्छा से परिवर्तन लावे, ऐसी ही प्रक्रिया अब हम अख्तियार कर सकते हैं। हमारा दावा है कि भूदान-यज्ञ-आन्दोलन की प्रक्रिया में इन तीनों कमियों की पूर्ति होती है और आज जो समय का तकाजा है, जमाने की माँग है, उसको हम पूरी कर सकते हैं। विनोबाजी के आन्दोलन के पीछे जो ऐतिहासिक आवश्यकता और परिस्थिति की आकांक्षा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है, उसका निवेदन मैंने बहुत ही संक्षेप में यहाँ किया है।

शस्त्र और कानून का रास्ता

शस्त्र-शक्ति के आश्रय से क्रान्ति हो ही नहीं सकती, यह हमारी मान्यता है; क्योंकि उसमें प्रतिक्रान्ति का भय बना रहता है और जब तक प्रतिक्रान्ति का भय बना रहेगा, तब तक क्रान्ति चिरस्थायी और शाश्वत नहीं हो सकेगी। लोग कहते हैं कि शस्त्र-शक्ति का रास्ता छोड़ दीजिये, लेकिन विनोबाजी कानून क्यों नहीं बनवा लेते? विनोबा का सरकार पर तो बड़ा वजन है, गांधीवालों की सरकार बनी है। ये दूर-दूर घूमने के बजाय, मुट्ठी-मुट्ठी मिट्टी माँगने के बजाय, क्यों नहीं सरकार को मजबूर करते कि वह कानून बनाये और कानून द्वारा ही भूमि का बँटवारा कर ले? क्यों नहीं इस प्रकार सर्वांगीण क्रान्ति करवा लेते? पर कानून से यदि क्रान्ति हो सकती, तो वह करने के लिए हम तैयार होते।

कानून की मर्यादाएँ

हम कानून के विरोधी नहीं हैं। लेकिन कानून की अपनी मर्यादाएँ हैं, जो हमको ध्यान में रखनी चाहिएँ। पहली मर्यादा तो यह है कि कानून के लिए एक सन्दर्भ की आवश्यकता होती है और एक अधिष्ठान भी अनिवार्य होता है। परिस्थिति में संदर्भ और जनता में अधिष्ठान निर्माण करने का यह जो काम है, वह कानून अपने आप नहीं कर सकता। कानून के साथ हमारी पहली दिक्कत यदि कुछ होगी तो वह यही है।

हमारी प्रतिगामी वृत्ति का विनोबा पर प्रहार

सब जानते हैं कि अस्पृश्यता-निवारण का कानून बन गया। लेकिन मैंने देखा है कि अच्छे-अच्छे विद्याधारी, बुद्धिधारी लोगों के घरों में छुआछूत का भाव आज भी बना हुआ है। लेजिस्लेटिव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

असेम्बली और कौंसिल के सदस्यों ओर मंत्रियों के घरों तक में मैंने आज भी छुआछूत का भाव देखा है। यही कारण है कि वैद्यनाथ-धाम में विनोबा-जैसे समस्त मानव-जाति के ललामभूत होनेवाले महापुरुष के शरीर पर पंडों की लाठियों का प्रहार हो सका। बह पंडों की लाठियों का प्रहार नहीं था। वह तो, हम लोगों में जो प्रतिगामी वृत्ति है, उस वृत्ति का प्रहार विनोबा के शरीर पर हुआ था। पंडों की लाठियाँ तो निमित्त-मात्र थीं।

एक दृष्टान्त : कानून दिल का नहीं

शारदा-कानून बना है कि लड़की की शादी चौदह साल से पहले न हो। बिहार में घूमते समय मैं एक एम० एल० ए० भाई के घर पहुँची। उनकी लड़की की शादी छोटी उम्र में हो गयी। मैंने पूछा, "भाई साहब, आप तो धारा-सभा में बैठते हैं, कानून जानते हैं, भला आपकी लड़की की शादी सात साल की उम्र में हो गयी!" कहने लगे, "बहनजी, कानून तो कागजों पर पड़ा है। हम लोग देहातों में रहते हैं। गाँव है, समाज है, रूढ़ि है, संप्रदाय है, घर में नानी हैं, दादी हैं, परदादी हैं।" कानून जाननेवाले और कानून को माननेवाले भाइयों की यह हालत है कि कानून उनके जीवन में परिवर्तन नहीं ला सका।

जोर-जबरदस्ती से आचरण पर कानून नियन्त्रण रख सकता है, मनुष्य के विचार में परिवर्तन करने की शक्ति कानून में नहीं है।

कानून की दूसरी मर्यादा

कानून की दूसरी मर्यादा यह है कि कानून अधिकार तो दे सकता है, लेकिन उस अधिकार के उपयोग की शक्ति वह नहीं दे सकता। स्वतन्त्र भारत के संविधान ने स्त्री को नागरिक बना दिया। पुरुष की बराबरी से कन्धे-से-कन्धा भिड़ाकर राष्ट्र के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नव-निर्माण की जिम्मेदारी उसको सौंपी गयी, लेकिन आज भी राजस्थान, उत्तर प्रदेश और बिहार में परदे की ऐसी घोर प्रथा है कि स्त्रियाँ चहारदीवारी के भीतर गिरफ्तार हैं। क्रान्ति करने के लिए कानून अपने में समर्थ नहीं है।

तीसरी मर्यादा

एक तीसरी बात और कह दूँ। कानून बनाने के लिए, कानून की रट लगाने के लिए, जनता को हमें सत्ताभिमुख और सत्तापरायण बनाना पड़ेगा। जनता से जाकर यह कहना पड़ेगा कि आपकी सरकार देहली, पटना, ग्वालियर, बम्बई और कलकत्ते में रहती है और आपको जो कुछ चाहिए, सरकार आपको दे देगी। लेकिन हम जनता में इस प्रकार की घोर गलतफहमी नहीं फैलाना चाहते। जनता से हम तो यह निवेदन करना चाहते हैं कि सरकार देहली, पटना, ग्वालियर, बम्बई में नहीं है। सरकार आप ही हैं। पन्द्रह लाख देहातों में रहनेवाले सब व्यक्ति सरकार हैं। देहली, ग्वालियर, पटना में रहनेवाले, बम्बई-कलकत्ता में काम करनेवाले लोग जनता के मुनीम हैं, जनता की इच्छा और आवश्यकता के अनुसार व्यवस्था करनेवाली वह व्यवस्थापिका-समिति है, प्रबन्ध-समिति है।

शासनहीन समाज का आदर्श

आप जानते हैं कि क्रांतिकारियों के सामने जो लक्ष्य है, जिस आदर्श समाज का नक्शा है, उसमें शासनहीन समाज का, राज्य के समाज में विलीनीकरण की अन्तिम अवस्था का चित्र सामने रखा गया है। सर्वोदय-समाज भी शासनहीन समाज की रचना करना चाहता है। शासन-रहित, दण्ड-निरपेक्ष समाज की योजना सर्वोदय-समाज के सामने भी है। क्रांति की प्रक्रिया में ही राज्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के समाज में विलीनीकरण होने के लिए यदि हम कोई प्रबन्ध नहीं रखेंगे, तो क्रांति के बाद केन्द्रीय सरकार उसी प्रकार मजबूत बनती चली जायगी, जिस प्रकार आज रूस में है। आज रूस में सरकार तो भगवान् से भी अधिक शक्तिशाली बन गयी है, सर्वसाक्षी है, सर्वव्यापी है। इसलिए कानून की रट लगाने का यह रास्ता, हमें इस लक्ष्य की तरफ ले जानेवाला नहीं है। ठीक उसकी विषम दिशा में, विपरीत दिशा में ले जानेवाला रास्ता है।

क्रान्ति का दर्शन

एक बात और स्पष्ट कर दूँ कि कानून के हम विरोधी नहीं हैं। यदि शस्त्र-शक्ति की विरोधी और दंड-शक्ति से भिन्न जन-शक्ति को जागृत करने में हम पूरी तरह से सफल नहीं हुए और अन्ततोगत्वा हमें कानून की शरण लेनी ही पड़ी, तो हम उसको बरदाश्त भले ही कर लें; लेकिन हमारे सामने जो नक्शा है, जो क्रान्तिकारी समाज का दर्शन है, उस समाज में सरकार के कानून से ही समाज-परिवर्तन हो, इसको गुन्जाइश नहीं है। जनतन्त्र में पहले जनमत-परिवर्तन और बाद में सरकार की सम्मति को मुहर, यह जन-क्रान्ति का अनुक्रम है। पहले कानून और बाद में जनमत-परिवर्तन, यह तो हुक्मशाही है, तानाशाही है।

'दान' और 'यज्ञ'

मैंने इस विवेचन में, कानून की रट हम क्यों नहीं लगाना चाहते, इसके कुछ कारण संक्षेप में रखे। अब रहो हमारी 'दान' और 'यज्ञ' की प्रक्रिया। लोग कहते हैं, शस्त्र-शक्ति नहीं, दण्ड-शक्ति नहीं, लेकिन यह दान माँगना आपने क्यों शुरू कर दिया ? यह दान माँगना तो भीख माँगना है, याचना करना है। इस प्रकार गैर-जिम्मेदारी से बातें करना उस महापुरुष के साथ, विनोबा के साथ, एक वड़ा भारी और गम्भीर अन्याय करना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होगा। विनोबाजी एक अद्यतन वैज्ञानिक दिमाग रखनेवाले महापुरुष हैं, एक संतुलित अध्ययन रखनेवाले तेजस्वी विद्वान् हैं। संस्कृत भाषा पर उनका विशेष प्रभुत्व है। शब्दों का व्याकरण, शब्दों की प्रवृत्तियाँ, शब्दों की प्रकृति वे अच्छी तरह जानते हैं। 'दान' शब्द का प्रयोग उन्होंने उसके परिशुद्ध अर्थ में किया है : 'दानं संविभागः।' बुद्धिमानों के मुकुटमणि भगवान् शङ्कराचार्य ने परिभाषा की है : 'सम्यग् विभाजनम् दानम्।' किसी भी वस्तु के न्याय्य-वितरण का नाम दान है। याचना करने का नाम दान लेना नहीं है। भीख माँगने और दामन फैलाने का नाम दान लेना नहीं है। अमीर के दरवाजे पर पहुँचकर हम उनसे यह नहीं कहते कि आप दान दीजिये, आपको मुक्ति मिलेगी, आपको स्वर्ग में ऊँची जगह मिलेगी। हम तो समझाते हैं कि भाई, एक कदम हम लोगों ने उठा लिया, जनता का राज्य बन गया। अब जिसका राज्य बन गया है, क्या वह जनता भूखी रह सकती है? जनता का राज्य बन जाय, राजनैतिक सत्ता और कानून, दोनों गरीब के हाथ में चले जायँ और गरीब भूखों मरे तथा मुट्ठी भर लोगों के हाथ में संग्रह रहे, क्या ये तीनों चीजें साथ-साथ चल सकती हैं? गरीबों का राज्य बने, गरीब भूखों मरे और कुछ व्यक्तियों के हाथ में संग्रह रहे, यह अब होनेवाला नहीं है। विनोबा का दान वह पुराना दान नहीं है, जो अमीर की संपत्ति और स्वामित्व का संरक्षण तथा संवर्द्धन करता था। यह दान तो संपत्ति के विसर्जन का संकेत है। यह दान तो संग्रह के प्रायश्चित्त का विधान है। इस दान की दीक्षा और अपरिग्रह के व्रत की दीक्षा विनोबाजी एक व्यक्तिगत नैतिक जीवन के मूल्य की हैसियत से नहीं दे रहे हैं। यह तो एक अभिनव समाज का क्रान्तिकारी सामाजिक मूल्य है। यह दान का शानदार क्रान्तिकारी अर्थ है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विनोबा की सर्वतोभद्र 'दान'-नीति

बिहार में रंका नामक एक छोटी-सी रियासत हैं। वहाँ के राजा साहब ने विनोबा को घर पर बुलाया। जब सब लोग घर पहुँचे, राजा साहब ने विनोबाजी के सामने अत्यन्त नम्रतापूर्वक जमीन के सब कागजात रख दिये। कहने लगे, "बाबा, जितनी जमीन लेना चाहें, ले लीजिये। जितनी लौटाना चाहें, लौटा दीजिये।" एक लाख एकड़ पड़ती जमीन थी, सब-की-सब विनोबाजी ने ले ली और ढाई हजार एकड़ जेर-काश्त जमीन भी ले ली। बची हुई ढाई हजार एकड़ जमीन लौटा दी और मुसकराते हुए कहने लगे, "राजा साहब, पहली किस्त लेकर जा रहा हूँ। जो जमीन लौटायी है, वह आपके पास रहनी नहीं चाहिए। सन् १९५७ से पहले यह सब जमीन आप दे दें।" इसका आशय यह था कि जितनी जमीन खुद जीत सकेंगे, जितनी जमीन पर खुद-काश्त कर सकेंगे, उतनी ही जमीन उनके पास रहेगी। मजदूर लगाकर खेती करने का सपना अब छोड़ देने के सिवा कोई चारा नहीं। मालिक और मजदूर का भेद ही खतम करना है। उत्पादन के साधन उत्पादकों को दिलाना है। अनुत्पादकों की मालकियत हटानी है। यह विनोबा का शानदार 'दान' है। यदि इसको भी आप भीख माँगना और याचना करना कहेंगे, तो भाइयो, इन्कलाब के लिए इससे अधिक शानदार कौन-सा दूसरा तरीका हो सकता है, जिसमें माँगनेवाले का गौरव होता है, देनेवाले की इज्जत बढ़ती है और पानेवाले की भी शान बढ़ती है—सबका समान विकास करनेवाला, सबका समान उत्थान साधनेवाला, यह सर्वतोभद्र दान का तरीका है।

कुछ और उदाहरण

बिहार में मेरी आँखों देखा हाल है। रामगढ़ के राजा ने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपने परिवार में से तीन लाख एकड़ जमीन दे दी और विनोबा जी की फौज के तुच्छ सिपाही की हैसियत से वे आज रात-दिन काम कर रहे हैं। राँची जिले में पालकोट रियासत में मैं काम कर रही थी। राजा साहब ने करीब हजार एकड़ जमीन हमको दान में दे दी। अपने बेटे और बेटी को लेकर मेरे साथ इस प्रकार रात-दिन मेहनत करते रहे कि कोई पहचान भी नहीं सकता था कि ये राजा-महाराजा हैं। कुरसैला में दरभंगा के महाराजाधिराज अपनी पत्नी सहित स्वयं चले गये। एक लाख बीस हजार एकड़ का दान विनोबा के चरणों में चढ़ा दिया! कहने लगे, "महाराज, आन्दोलन की जो सेवा कर सकता हूँ, करने के लिए हाजिर हूँ।" गया जिले में जयप्रकाशबाबू के साथ भूदान के सिलसिले में मैं घूम रही थी। अमावा-टिकारी के राजकुमार ने हजारों एकड़ जमीन में से अपने परिवार के लिए सिर्फ तीस एकड़ जमीन रखकर बाकी सारी जमीन आन्दोलन में दी और स्वयं सिपाही बनकर हम लोगों के साथ काम करने लगे।

रोमाञ्चकारी अनोखी प्रक्रिया

आप कानून से जमीन छीन सकते थे; लेकिन क्या कोई कानून अमीर के हृदय में क्रान्तिकारी आन्दोलन के लिए, गरीब के लिए वह मुहब्बत पैदा कर सकता था, जो मुहब्बत विनोबा का यह दान पैदा कर रहा है! इसीलिए जवाहरलालजी को पार्लमेण्ट के सदस्यों की सभा में कहना पड़ा कि यह जो अमीरी और गरीबी के निराकरण में, अमीर का ही सहयोग और उसकी ही सम्पत्ति प्राप्त करने का ढंग, विनोबा ने निकाला है, वह अपने ढंग का अनूठा और अपूर्व है। इतिहास में इससे पहले कभी ऐसा देखा नहीं गया। इसमें व्यक्तियों का सहयोग है और वर्ग का निराकरण है। आज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तक संसार ने हमसे कहा कि बिना वर्ग-संघर्ष के वर्ग-निराकरण हो नहीं सकता और यह कि सामाजिक जीवन की बुनियाद ही संघर्ष है। आज एक बागी सामने बढ़ा है, एक महान् योगी और प्रयोगी पुरुष का कदम आज भारतवर्ष में आगे बढ़ा है। वह कहता है कि वर्ग-निराकरण होगा—बिना वर्ग-संघर्ष के, बिना विद्वेष के, बिना कलह के। व्यक्तियों का सहयोग और वर्ग का निराकरण, गरीब का विधायक पुरुषार्थ और अमीर का सहयोग, यह जो क्रान्ति का तरीका है, दान की प्रक्रिया में ही जिसका रोमहर्षक स्वरूप समाया हुआ है, वह न सिर्फ सैद्धान्तिक दृष्टि में से, बल्कि विशुद्ध दृष्टि से भी हमें कारगर मालूम होता है।

लोकशाही का आधार

पंजाब-पेप्सू में मैं भूदान-दौरे में पिछले दिनों घूम रही थी। एक सिख भाई कहने लगे कि बिहार वाले तो भोले-भाले होते हैं, इसलिए उन्होंने जमीन दे दी। जरा पंजाब पधारिये, फिर पता चलेगा कि माँगने से जमीन किस प्रकार मिलती है। यहाँ तो लोग सिर्फ डंडों की भाषा समझते हैं, प्रेम की भाषा नहीं जानते। मैंने उनसे कहा, "भाई, यदि मनुष्य की मूलभूत सत्प्रवृत्ति पर आपकी श्रद्धा नहीं है, यदि मनुष्य की मूलभूत अच्छाई पर आपकी निष्ठा नहीं है, तो जनतन्त्र बनाने के आप अधिकारी नहीं हैं। जनतन्त्र में हर बालिग मर्द-औरत को वोट का अधिकार आपने किस भरोसे से दिया है? इसी भरोसे से न कि मनुष्य-मात्र के हृदय की मूलभूत प्रेरणा सद्प्रेरणा है, मूलभूत भाव सद्भाव है। अच्छाई की ओर हरएक अग्रसर होना चाहता है। यदि इस प्रकार की हमारी श्रद्धा नहीं है, तो अच्छे समाज का आदर्श हम सामने नहीं रख सकते—हमको तो हुक्मशाही की शरण लेनी चाहिए। फिर तो जनतन्त्र को न हम प्राणवान् बना सकेंगे और न हम जनतन्त्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को कभी सफल ही बना सकेंगे।

भगवान् सबके भीतर है

एक बात और है। अमीर के हृदय में क्या शैतान बसा होता है ? भगवान् सिर्फ गरीबों के हृदय में है और अमीरों के हृदय में नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है। भारतीय संस्कृति की यह खूबी है, भारतीय सभ्यता की यह विशेषता है कि हमारी सभ्यता में हमने 'शैतान' की स्वतन्त्र सत्ता कभी नहीं मानी। हमारे इतिहास में रावण की मृत्यु होती है, तो उसके शरीर से चिन्मय ज्योति निकलकर भगवान् रामचन्द्र प्रभु के हृदय में समा जाती है। कंस की, शिशुपाल की मृत्यु होती है, तो उनके शरीरों से चिन्मय ज्योति निकलकर भगवान् गोपालकृष्ण के हृदय में समा जाती है। हम तो भगवान् को सर्वव्यापी, सर्वसाक्षी, सर्वशक्तिमान् माननेवाले हैं। यदि अमीर के हृदय में ईश्वर को देखने की कोशिश नहीं करेंगे, तो हमारे भगवान् एकदेशीय बन जायँगे, सर्वदेशीय नहीं रह जायँगे।

एक हृदय-स्पर्शी घटना

सैद्धान्तिक बातों को छोड़ दीजिये। मैंने उनको बिहार का अपना एक दृष्टान्त सुनाया। उन दिनों मैं पैदल घूम रही थी। कॉलेज के दो-चार लड़के साथ थे। एक रियासत से हम लोग गुजर रहे थे। बहुत छोटी रियासत थी। साथियों ने कहा कि इस गाँव में जाना बेकार है। राजा बड़े दुष्ट हैं, शराबी हैं, जुआरी हैं, इनका हृदय-परिवर्तन क्या हो सकता है ? मैंने कहा कि जनता में जनार्दन का दर्शन करने निकले हैं, बगैर दर्शन के मन्दिर के बाहर से ही लौट जायँ ? विनोबा का आन्दोलन मजाक नहीं है, मखौल नहीं है। इसके पीछे गम्भीर मानव-निष्ठा की बुनियाद है, मानव-निष्ठा का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधिष्ठान है। आज मानव-निष्ठ समाज-दर्शन की और मानव-निष्ठ क्रान्ति की प्रक्रिया की हमें आवश्यकता है।

युगपुरुष का उदय

जमाने में जो आवश्यकता होती है, उसको पूरी करने के लिए कोई-न-कोई महापुरुष आगे बढ़ता है। एक जमाना था, जिसमें सत्यनिष्ठा की आकांक्षा थी। सत्यनिष्ठा सगुण और साकार हो उठी, जिसको हमने भगवान् रामचन्द्र महाप्रभु कहा था। एक जमाना था, जब निष्काम कर्मयोग की आकांक्षा जनता के हृदय में नाच उठी। निष्काम कर्मयोग सगुण और साकार हो गया, जिसको हमने भगवान् गोपालकृष्ण कहा। आज मानव-निष्ठ दर्शन की आकांक्षा जमाने में है। मानव-निष्ठा, सगुण-साकार हो उठी, जिसको मैं सन्त विनोबा भावे कहती हूँ।

बहन राखी बाँधकर ही लौटेगी

साथी नहीं माने, दूसरे गाँव में चले गये। मैं अकेली राजा साहब की ड्योढ़ी पर पहुँची। दोपहर का समय था। वे बरामदे में आराम से लेटे हुए थे। मैंने दरवाजा खटखटाया। पूछा गया, "कौन है?" मैंने कहा, "आपकी बहन आयी है।" जब सुना कि बहन आयी है, तो चौंक पड़े। आगे बढ़कर इस तरह देखने लगे कि कहीं कोई पगली तो दरवाजे पर नहीं पहुँच गयी! पूछने लगे कि यहाँ तक कैसे पहुँच पायीं? गाँववालों ने तुम्हें बताया नहीं कि मैं किस प्रकार का शैतान आदमी हूँ? भला, मेरे पास किसी भले आदमी का कोई काम हो सकता है? तुम एक नवजवान लड़की हो, तुम्हारी भलाई इसीमें है कि तुम लौट जाओ। मैंने कहा, "भाई साहब, आप दुष्ट हैं या शराबी हैं या जुआरी हैं,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इससे मुझे क्या मतलब ? एक बात का जवाब दीजिये। आपके कोई माँ-बहन है या नहीं ? एक सन्त का सन्देश लेकर, एक फकीर का पैगाम लेकर, दरवाजे पर पहुँची हूँ। इस तरह लौटनेवाली यह बहन नहीं है। भाई की कलाई में भू-दान-यज्ञ-आन्दोलन के विचार की राखी बाँधकर ही यह बहन लौटेगी, पहले नहीं।"

अन्तर्यामी के दर्शन

दुनिया ने उनको दुष्ट कहा था, शैतान कहा था, लेकिन उनकी आँखों में आँसू छलक पड़े। आँसू क्या थे वे, उनकी सोयी हुई भलाई जाग उठी, उनकी मानवता उमड़ पड़ी। काफी तीर्थाटन मैंने बचपन से किया। लेकिन उस दिन उस सज्जन के आँसुओं में भगवान् का जो साक्षात्कार मैंने पाया, भगवान् का जो मङ्गलमय साक्षात्कार और दर्शन मैंने अनुभव किया, वह न हरिद्वार-ऋषिकेश में किया था, न कहीं गया में या नवद्वीप और जगन्नाथ में पाया था। उन्होंने हाथ जोड़कर कहा, "बहन, अन्दर पधारिये।" सभा का आयोजन भी किया। सभा में ५०० एकड़ जेरकाश्त जमीन में से १२५ एकड़ जमीन उन्होंने दान में दे दी। गाँववालों ने भी जमीन दी। चार घंटे के भीतर १५० एकड़ जमीन का दान लेकर मैं उस गाँव से लौटी। इसलिए यह कहना तो बेकार है कि लोग दान नहीं देते। जो परमात्मा प्रह्लाद के लिए खम्भे में से प्रकट हो सका, वह हम लोगों के लिए, अमीर के हृदय में से प्रकट होनेवाला है, प्रकट हो रहा है।

आध्यात्मिक शक्ति का चमत्कार

जब विनोबा ने तेलंगाना में आन्दोलन शुरू किया और कहा, "माँगने से मैं जमीन की समस्या हल करूँगा", तब सुशिक्षित लोग मजाक करने लगे, खिल्ली उड़ाने लगे। सुशिक्षितों का तर्क,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुतर्क, वितर्क चलता गया। पर सन्त का कदम बढ़ता गया और कदम-कदम पर धरती बरसती गयी। आज दो-ढाई वर्षों से अकेला घूमता हुआ यह फकीर लाखों एकड़ भूमि इकट्ठी कर रहा है। क्या क्रान्ति के इतिहास में इसका कोई मूल्य आपके पास नहीं है? रूस में क्रान्ति के लिए अस्सी साल लग गये, चीन में क्रान्ति सफल बनाने के लिए बत्तीस साल लग गये, और यहाँ ढाई वर्षों में हिन्दुस्तान के सारे वायु-मण्डल में विनोबा ने बिजली दौड़ा दी है। सभी राजनैतिक पक्षों का सैद्धान्तिक समर्थन उनको प्राप्त हुआ है। आज किसीका इस आन्दोलन से विरोध नहीं है। विनोबाजी के दान की प्रक्रिया में यह एक ऐसी अपूर्व शक्ति है कि उसमें आध्यात्मिक शक्ति का ही चमत्कार दिखाई पड़ता है।

गरीब का दान : हमारी शक्ति का स्रोत

आप कहेंगे कि अमीर से आप दान लेते हैं सो तो ठीक है; लेकिन गरीब से दान क्यों लिया जाता है? वास्तव में गरीब से जो दान हमें मिलता है और हम माँगते हैं, वही हमारे आन्दोलन की शक्ति का स्रोत है। आप मुझे बतलाइये कि आखिर समाज में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था, जिसकी कोख से यह अमीरी और गरीबी निर्माण हुई है, किसके पुरुषार्थ पर समाज में निर्भर है? गरीब तो करोड़ों की तादाद में हैं। १०० में से लगभग ९५ गरीब हैं और ५ अमीर हैं। ये ९५ गरीब यदि अपने ही शोषण में अमीर को मदद नहीं देंगे, यदि अपने ही ऊपर अन्याय करने में अमीर की मदद नहीं करेंगे, तो क्या आप सोचते हैं कि मुट्ठी भर अमीर अपनी अमीरी को कायम रख सकेंगे? तिलक महाराज ने एक दिन भारतवासियों से कहा था कि डेढ़ लाख अंग्रेज चालीस करोड़ भारतीयों पर छ सौ मील दूर से राज्य करते हैं, इसमें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंग्रेजों की बहादुरी नहीं है। भारतीयों में ही आत्म-विश्वास का अभाव है, धैर्य और साहस का अभाव है। उन्होंने कहा कि उठो, खड़े हो जाओ और कहो कि 'स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है', जिसे या तो प्राप्त करूँगा या मर मिटूंगा। आज विनोबा गरीबों से कहते हैं कि उठो, सीना तानकर खड़े होकर कह दो 'भूखी जनता अब न सहेगी, धन और धरती बँटकर रहेगी।' यदि करोड़ों गरीब इकट्ठे हो जायँगे, संगठित हो जायँगे, तो अमीरों के लिए न कानून बनाना पड़ेगा, न मुट्ठी भर अमीरों के ऊपर हथियार ही उठाना पड़ेगा और न उनकी तरफ आँख उठाकर देखने की ही आवश्यकता पड़ेगी। गरीबों के संगठन मात्र में गरीबी और अमीरी का अन्त करने की शक्ति है। इसी में पूंजीवादी अर्थ-व्यवस्था की मौत है। इसलिए गरीबों से दान लेना एक वैज्ञानिक तरीका है।

गरीबी-अमीरी की जड़

दूसरी एक बात और भी है। आखिर गरीबी-अमीरी पैदा कहाँ से होती है? गरीबी और अमीरी की जड़ या शोषण की प्रवृत्ति की जड़, निजी मालकियत और मिल्कियत की लालसा में है। आज जो गरीब है, वह क्या इसलिए गरीब है कि अपरिग्रह चाहता है? यह बात तो है ही नहीं। वह तो अमीर बनना चाहता है, लेकिन अमीर बनने की कोशिश में वह असफल रह जाता है। असफल अमीर का नाम गरीब है और सफल गरीब का नाम अमीर है। जब तक मनुष्य के हृदय में निजी मालकियत और मिल्कियत का लालच रहेगा, जब तक संग्रह की आकांक्षा और स्वामित्व का प्रलोभन रहेगा, तब तक शोषण की जड़ समाज में से कटनेवाली नहीं है। गरीब और अमीर सबके हृदय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से स्वामित्व की इस आकांक्षा और संग्रह की लालसा को हटाना पड़ेगा।

मन्त्रद्रष्टा युग-पुरुष

विनोबा एक ऋषि हैं। 'ऋषयो मन्त्र-द्रष्टारः।' ऋषि मन्त्र को देखनेवाले और मंत्र को सिद्ध बनानेवाले होते हैं। विनोबाजी ने देख लिया कि यदि हम वर्ग-विहीन, शोषण-रहित समाज बनाना चाहते हैं, समता का राज्य, राम-राज्य का निर्माण करना चाहते हैं, तो सिर्फ पूंजीवाद को हटाना, अन्य किसी वाद को या गांधीवाद को लाना पर्याप्त नहीं होगा। मनुष्यमात्र के हृदय से ही संग्रह की अभिलाषा को हटाना पड़ेगा। इसके लिए संग्रह और स्वामित्व के बारे में विनोबाजी समाज में एक नया रुख पैदा कर रहे हैं।

दरिद्रनारायण का प्रसाद

तीसरी बात यह है कि गरीब से जो भूदान हमें मिलता है, उसका नैतिक प्रभाव अमीर पर पड़ता है। मैं राँची जिले में गुमला सब-डिविजन में काम कर रही थी। कोदरो नाम के गाँव में चली गयी। जमीनवाले भाई आगे बढ़े। एक भाई ने पचास एकड़ में से तेरह एकड़ का दान दिया, दूसरे भाई ने पचीस में से तीन एकड़ का दान दिया। जब सभा से लौटने को हुई, तो पेड़ की ओट से एक बहन आगे बढ़ी। चीथड़ों में लिपटा हुआ बदन था। कहने लगी कि यह चालीस डिसमल जमीन है, ले लीजिये। साथ जो भाई थे, हँसने लगे। कहने लगे, बहनजी, यह तो मुसम्मात है, नौकरानी है, हमारे घरों में बर्तन माँजती है, सिर्फ चालीस डिसमल जमीन इसके पास है, इसके दो बेटियाँ भी हैं। इससे आप क्या लीजियेगा? मैंने कहा कि बहन, आपसे हम दान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्या लें, आप यह चालीस डिसमल जमीन विनोबा का प्रसाद समझकर वापस ले लीजिये। आप यदि जमीन जोतना चाहेंगी, तो जब बँटवारा होगा, आपको भी हम जमीन दिला देंगे। वह रोने लगी, हाथ जोड़कर कहने लगी, 'मैं गरीब हूँ, इसलिए मेरा दान लौटा रही हो ? अमीर का दान तो ले लिया और मुझ गरीब का दान लौटा रही हो ?" आगे वह मुझसे पूछती है, 'क्या विदुर का साग भगवान् को प्रिय नहीं था ? क्या सुदामा के तंदुल भगवान् को प्रिय नहीं थे, जो आज मुझ गरीब का दान लौटाया जा रहा है ?' उसको मैं क्या जवाब देती ? मैं कायल हो गयी। चरणों में झुककर उसे मैंने प्रणाम किया और दरिद्रनारायण का वह प्रसाद लेकर मैं आगे बढ़ी।

दूसरों को प्रेरणा मिली

दूसरे दिन सुबह उठी तो मेरे पड़ाव के सामने उस गाँव के सभी भूमिधारी भाइयों को मैंने पाया। जिसने दान दिया था, वह कहने लगा कि बहनजी, रातभर सो नहीं सका। मुसम्मात ने उठकर चालीस डिसमल जमीन दे दी। पचास एकड़ में से मैंने सिर्फ तेरह एकड़ दी, यह ठीक नहीं हुआ। सत्रह एकड़ का दान और लिख लीजिये। जिसने पचीस एकड़ में से तीन एकड़ का दान दिया था, उसने चौदह एकड़ जमीन और दी। बाकी भूमिधारी भाइयों ने भी थोड़ी-थोड़ी जमीन और दे दी। उस मुसम्मात के दान का यह प्रभाव रहा।

गरीब से दान क्यों लिया जाता है, उसका और एक वैज्ञानिक कारण निवेदन करना चाहती हूँ। अमीरों को हटाने के बाद यह जो छोटे-बड़े गरीब रहेंगे—कोई पाँच एकड़ का मालिक, कोई दस एकड़ का मालिक, कोई पन्द्रह एकड़ का मालिक—सबको एक सतह पर लाने के लिए हम क्या करेंगे ? इसके बारे में भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तो सोचना पड़ेगा। जब रूस में अमीरों को हटाया गया तो स्टालिन के सामने 'कुलक्स' का याने छोटे-छोटे किसानों का सवाल आया। भूमि जब्त कराने के लिए और सामुदायिक खेती के लिए, किसान तैयार नहीं थे। स्टालिन उनको मना नहीं सका। नतीजा यह हुआ कि चालीस लाख किसानों की हत्या करनी पड़ी, उनका खून बहाना पड़ा। आज अमीरों को हटाने के लिए एक लड़ाई लड़े, कल जो छोटे-छोटे गरीब हैं उनमें 'विधायक ऐक्य-भावना' का निर्माण करने के लिए क्या दूसरा क्रान्तिकारी आन्दोलन छेड़ा जायगा? इसलिए आज गरीबों में एक-दूसरे के लिए हमदर्दी पैदा करने की योजना भी हमको इसी आन्दोलन में करनी पड़ रही है।

सभी बड़े-छोटे शोषक

सब चीजों का तात्पर्य और सार एक ही है। शोषण की प्रवृत्ति आज समाज में सार्वत्रिक है। न कोई गरीब है, न कोई अमीर। हम और आप, सभी शोषक हैं। कोई छोटा शोषक है, कोई बड़ा शोषक। पाँच एकड़वाले की तुलना में पचीस एकड़ वाला अमीर और शोषक बन जाता है। पचास एकड़वाले की तुलना में सौ एकड़वाला शोषक और अमीर बन जाता है। हर कोई अपने से गरीब को नीचे दबाने की कोशिश करता है—अपने से जो गरीब है उसको कुचलने की, रौंदने की कोशिश करता है। इसलिए दान भी सार्वत्रिक होगा। हर व्यक्ति के हृदय से शोषण की वृत्ति हटानी पड़ेगी।

बँटवारे के तरीके का रहस्य

जो जमीन हमको दान में मिलती है, वह जिस गाँव में मिलती है, उसी गाँव के भूमिहीनों में बाँटी जानी चाहिए। यह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बँटवारे की योजना का पहला नियम है। बँटवारा या वितरण विनोबाजी की योजना के अनुसार होता है, फिर चाहे बँटवारा कोई भी करे। बँटवारा करने के लिए विनोबाजी पक्ष-निरपेक्ष ही नहीं, पक्षातीत वृत्ति के व्यक्तियों को नियुक्त कर लेते हैं। उनका एक बोर्ड बनाया जाता है। उस बोर्ड में सरकार के नुमाइंदे रहते हैं। सरकार उसको मंजूरी दे देती है। वितरण के लिए कानून बनाया जाता है। मतलब हैदराबाद रियासत में, मध्य-प्रदेश में, उत्कल-प्रदेश में, उत्तर-प्रदेश में वितरण के लिए कानून बनाये गये हैं और हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों में कानून बनाये जा रहे हैं। ये जो बोर्ड बनते हैं, वे जिलावार समितियाँ नियुक्त कर देते हैं। फिर बोर्ड के सदस्य और सरकारी कर्मचारी, तहसीलदार, पटवारी इत्यादि सरकारी कागजों को लेकर उस हलके में चले जाते हैं, जिस इलाके में वितरण करना होता है। आठ-दस दिन वहाँ रहकर उन लोगों को जमीन का सर्वे करना पड़ता है। निरीक्षण करना पड़ता है, भूमिहीन परिवार कितने हैं, जमीन किस-किसकी है, यह सब देखने के बाद, जाँच करने के बाद, सात दिन की नोटिस दी जाती है और आम सभा में बँटवारा किया जाता है। आम सभा में ही बँटवारा होगा, यह वितरण की योजना का दूसरा नियम है। उस सभा में बेजमीन भाई खड़े हो जाते हैं। बेजमीन से मेरा मतलब उनसे है, जिनके पास एक चप्पा भर भी जमीन नहीं, जो जमीन जोतते हैं, लेकिन मालिक नहीं और जिनके पास दूसरा कोई रोजगार नहीं। ऐसे व्यक्तियों को फी परिवार तरी जमीन एक एकड़ और खुश्क जमीन पाँच एकड़ के हिसाब से बाँटी जाती है। परिवार से मेरा मतलब संयुक्त परिवार से नहीं, एक स्वतन्त्र परिवार से है। जमीन हल्की हो, तो ज्यादा भी देनी पड़ती है। हैदराबाद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रियासत में हमको खुश्क जमीन कहीं-कहीं बीस-इक्कीस एकड़ तक देनी पड़ी। उत्तर-प्रदेश में तरी जमीन चार एकड़ तक, तो खुश्क जमीन तेरह-चौदह एकड़ तक भी देनी पड़ी। लेकिन एक औसत, एक मोटा हिसाब मैंने आपके सामने पेश किया। जमीन देते समय उस किसान पर तीन शर्तें लगायी जाती हैं। पहली शर्त यह कि जमीन बेचने का उसको अधिकार नहीं रहेगा। आपको मालूम होगा कि उत्कल में, छोटा नागपुर में सरकार ने आदिवासियों को कुछ जमीन बाँट दी। शराब के पीछे, जुए के पीछे चार-छह महीनों में उन्होंने जमीनें बेच डालीं। फिर से नंगे-भूखे बेहाल हुए। इसलिए पहली शर्त हमारी यह होगी कि जमीन बेचने का अधिकार उसको नहीं रहेगा। साहूकार के यहाँ रेहन करने का, गिरवी रखने का और जमीन पड़ती रखने का अधिकार उसे नहीं रहेगा। फर्ज कीजिये, आज किसी किसान को हम जमीन देते हैं, दो-तीन महीनों के बाद उसकी मृत्यु हो जाती है। यदि उसके बेटे जमीन जोतनेवाले होंगे, तो उस जमीन पर उनका अधिकार होगा। यदि बेटे जमीन जोतनेवाले नहीं होंगे, शहरों में कहीं नौकरी करनेवाले होंगे, तो बेटों का जमीन पर अधिकार नहीं हो सकेगा। जमीन समिति को लौटायी जायेगी और दूसरे बेजमीन परिवार को दिलाई जायेगी। मकसद हमारा यह है कि जमीन जोतनेवाले के पास जमीन रहे। उत्पादन करनेवाले के पास उत्पादन के साधन रहें।

साधन-दान

इस जमीन के साथ-साथ जहाँ संभव हो, खेती के औजार भी हम दे देते हैं। हल, बैलजोड़ी, बीज, सिंचाई का प्रबन्ध न हो, तो कुएं खुदवाना इत्यादि सारी मदद भूदान-यज्ञ समिति यथासम्भव करती है। इसके लिए साधन-दान का कदम उठाया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गया है। लोग कहते हैं कि क्या जमीन के बँटवारे से ही क्रान्ति होगी ? यह तो हमारा दावा कभी नहीं था।

जमीन का बँटवारा पहला कदम है

हिन्दुस्तान कृषि-प्रधान देश है। इसलिए कृषि-प्रधान देश में क्रान्ति की विभूति किसान होगा। जहाँ अस्सी फीसदी लोग देहात में रहते हैं, वहाँ पहले देहातों की समस्या हल होगी, भूमि का पुनर्वितरण होगा और बाद में जो बीस प्रतिशत लोग बचते हैं, उनकी समस्याएँ सुलझाई जायेंगी। यह तो निवेदन करने की आवश्यकता नहीं है कि जिस प्रकार जमीन पर से अनुत्पादक की मालकियत को हम हटाना चाहते हैं, उसी प्रकार उद्योग-धन्धों के क्षेत्र में से भी अनुत्पादक की मालकियत जब तक हम नहीं हटायेंगे, गरीबी और अमीरी की जड़ पूरी तरह समाज में से नष्ट नहीं होगी, हमारा कदम रुकनेवाला नहीं है। इस मुल्क में अहिंसात्मक ढंग से सत्याग्रह की नीति से, या तो गरीबी-अमीरी खतम होगी या फिर हम खतम होंगे, इस संकल्प के साथ विनोबाजी और उनके साथी अपना कदम दृढ़तापूर्वक, निर्भयतापूर्वक, संयमपूर्वक और निर्वैर वृत्ति से आगे बढ़ा रहे हैं। शहरों के बारे में हमारी योजना क्या है ?

कारखाने और बड़े उद्योगों पर लोकस्वामित्व

ये जो बड़े-बड़े उद्योग-धंधे हैं, कारखाने हैं, खदाने हैं, फैक्टरीज इत्यादि हैं, इनके बारे में एक बात तो यह है कि ये बाँटे नहीं जा सकते। जमीन का सौ एकड़ का एक टुकड़ा है। दस-दस के दस टुकड़े कर दें और बाँट दें तो टुकड़ों के बँटवारे के साथ, जमीन के वितरण के साथ, मालकियत का वितरण हो जाता है, बँटबारा हो जाता है। कारखाने में चार मालिक हैं,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उनकी जगह यदि दो हजार मजदूरों को मालिक बना दें, तो मालकियत का बँटवारा नहीं होता, गुणाकार होता है। कारखाने बाँटे नहीं जा सकते, यह उनके बारे में दिक्कत है। उन पर समाज की मालकियत कायम करनी होगी। 'जाति की मालकियत' हम कायम करेंगे। उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करेंगे या समाजीकरण, यह एक स्वतन्त्र विषय है। इसलिए विस्तारपूर्वक उसकी मीमांसा करना यहाँ संभव नहीं है।

अनुत्पादक व्यवसायों का निराकरण

इसके अलावा शहरों में अनुत्पादक व्यवसाय हैं। आज शहरों में रहनेवाले जो लोग हैं, उनमें ज्यादा-से-ज्यादा अनुत्पादक व्यवसाय करनेवालों की संख्या है, किराये पर, मुनाफे पर, दलाली पर, ब्याज पर, ठेके पर, जीना—ये सब रोजगार बन गये हैं। यह तो छोड़ दीजिये, लोगों के गुनाहों पर जीना भी रोजगार बन गया है; हम उन्हें वकील कहते हैं। लोगों की बीमारियों पर जीने का भी पेशा बन गया है; हम उन्हें डाक्टर कहते हैं। बीमार तो बेचारा बीमारी के मारे परेशान है, मुसीबत में फँसा हुआ रहता है; लेकिन डॉक्टर के लिए तो वह वित्तोपार्जन का सुनहला अवसर है। गुनहगार तो परेशान है गुनाह के मारे; लेकिन वकील साहब को तो ज्यादा फीस लेने के लिए मौका मिलता है। ये जो पेशे हैं, सब समाजविरोधी पेशे हैं। समाज में जब तक इस प्रकार की अर्थ-व्यवस्था रहेगी, तब तक एक की आपत्ति दूसरे के लिए सुन्दर अवसर बनकर खड़ी हो जाती है। एक की मुसीबत जब तक दूसरे के लिए मौका और अवसर का रूप धारण करेगी, तब तक समाज में शोषण का अन्त नहीं हो सकेगा, समता का राज्य हम निर्माण नहीं कर सकेंगे। इसलिए इन अनुत्पादक व्मवसायों को रोजगारों के पेशों के रूप में खतम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करेंगे और सेवा के रूप में अवशिष्ट रखेंगे। यह हमारी योजना उनके बारे में है। इसके लिए संपत्ति दान का तीसरा कदम उठाया गया है और चौथा कदम श्रमदान का है।

श्रम-दान

आज उत्पादक परिश्रम की इज्जत समाज में नहीं है। इसलिए सब परिश्रम टालने की कोशिश करते हैं—हम और आप सब करते हैं। परिश्रम में किसी को आनन्द नहीं आता। आनन्द का अनुभव आज मजदूर और किसान भी नहीं कर रहे हैं। वे श्रम इसलिए नहीं करते कि वे धर्मनिष्ठ हैं, लेकिन वे लाचार हैं, इसलिए श्रम करते हैं। उत्पादक-परिश्रम का जब तक समाज में मूल्य नहीं रहेगा, उत्पादक-परिश्रम की कोई प्रतिष्ठा नहीं होगी, तब तक हम परिश्रम टालने की कोशिश करेंगे। टालने की कोशिश करेंगे तब तक एक वर्ग श्रमजीवी का और दूसरा वर्ग सुखजीवी का रहेगा। वर्ग रहेंगे तब तक शोषण रहेगा और शोषण रहेगा तब तक राम-राज्य का निर्माण नहीं होगा। इसलिये हर व्यक्ति के हृदय में उत्पादक परिश्रम की प्रतिष्ठा निर्माण करनेवाला श्रमदान का चौथा कदम विनोबाजी ने बढ़ाया। इन संकेतों के बारे में बहुत संक्षेप में मैं जिक्र कर सकती हूँ। इससे ज्यादा इतने विशाल आन्दोलन के सभी पहलुओं पर यहां प्रकाश डालना संभव नहीं है।

बुद्धि-दान और समय-दान

अब, विनोबा ने बुद्धि-दान और समय-दान का कदम बढ़ाया है। आप जानते हैं, विनोबाजी एक ऐसे निस्पृह पुरुष हैं, जिनके हृदय में न सत्ता की अभिलाषा है, न संपत्ति का मोह है, न सम्मान का प्रलोभन है। सारा संसार उनके लिए तृणवत् बन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गया है। ऐसे एक योगी पुरुष का यह आन्दोलन है। उन्होंने उसे योगारूढ़ बुद्धि से शुरू किया है। यह वाद का या पक्ष का आन्दोलन नहीं है। यह पक्ष-निरपेक्ष और पक्षातीत आन्दोलन है। वाद तो एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से तोड़नेवाली चीज है। 'युज्यते इति योगः' एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से जोड़नेवाला, सह-जीवन के विज्ञान का और सह-जीवन को कला का नाम ही "योग' है। विनोबा का यह आन्दोलन गरीब-गरीब को और गरीब-अमीर को जोड़नेवाला है, भिन्न-भिन्न राजनैतिक पक्षों को अपने-अपने पक्ष-द्वेषों को, व्यक्तिगत ईर्ष्या-द्वेष को भुलाकर नवराष्ट्र के निर्माण में कन्धे-से-कन्धा लगाकर काम करने का मौका देनेवाला एक सुन्दर आन्दोलन हैं। इसमें मदद करना, यथा-शक्ति, यथाबुद्धि, स्वेच्छा से अपने पास जो कुछ हो समर्पण कर देना, सबका फर्ज है। इसलिये मेरा अनुरोध है कि विनोबा के आन्दोलन में आप लोग मदद कीजिये।

पहली मदद तो बुद्धि-दान की चाहते हैं। विचार-दान की भीख आप लोगों से माँगते हैं। तटस्थ बुद्धि से, सारे पक्षाभिनिवेशों को छोड़कर, वादों का आग्रह छोड़कर, आप इस आन्दोलन के बारे में सोचें। हमारा विरोध हो, सैद्धान्तिक मतभेद हो, तो बात अलग है। लेकिन यदि सैद्धान्तिक मतभेद न हो, तो हम तटस्थ प्रेक्षक के रूप में नहीं रह सकते। जमाना तेज रफ्तार से आगे बढ़ रहा हैं। संसार में आज जनतन्त्र सुरक्षित रखने के लिये सारी दुनिया हिन्दुस्तान की ओर देख रही है। इन तीन-चार वर्षों में यदि हम जनतन्त्र को सत्याग्रह की नीति द्वारा सुरक्षित और साबित नहीं बना पायेंगे, गरीबी और अमीरी को नहीं मिटा सकेंगे, तो न मालूम हिन्दुस्तान में क्या नजारा देखने को मिलेगा! यह विनोबा की वाणी नहीं, यह तो ईश्वर का संकेत है, जो विनोबा की वाणी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में समा गया है। ये भारतमाता के अरमान विनोबा की वाणी में समा गये हैं। यह दान विनोबा नहीं माँग रहा है, यह तो समय का तकाजा है। यह समय की माँग है। इसलिये आप सब लोग सर्वत्र इस आन्दोलन का विचार-प्रचार करने में, कार्यंकर्ताओं को मदद देंगे, ऐसी उम्मीद है। आपको जमीन कितनी मिलती है और कितनी नहीं, इसका हिसाब कोई मूल्य नहीं रखता। इस जमीन को अब विनोबा के पास जाने से कोई रोक नहीं सकता। जमीन चल पड़ी है, गंगा की धारा की भाँति बहने लगी है, लोक-राज्य की परिणति लोक-स्वामित्व में होने ही वाली है। जब जनता का राज्य बन जायगा, तो मुट्ठी भर लोगों का संग्रह रहनेवाला नहीं है। यह बतलाने के लिये अब किसी दार्शनिक और ज्योतिषी की जरूरत नहीं। हम इतना ही चाहते हैं कि जमीन का जो वितरण होगा, वह एक नये क्रान्तिकारी समाज का आधारभूत कदम साबित हो, नये समाज का अधिष्ठान बन जाय। नये अर्थ-शास्त्र का, नये जीवन का दर्शन जनता के सामने इस प्रक्रिया के द्वारा रखा जाय। जमीन के बँटवारे के साथ-साथ हमको ग्रामोद्योग बढ़ाने पड़ेंगे। फी एकड़ पैदावार किस प्रकार बढ़ानी है, यह लोगों को सिखाकर एक एकड़ और पाँच एकड़ जमीन के खण्डों को आर्थिक दृष्टि से व्यावहारिक और लाभदायक बनाना पड़ेगा। हमारे विधायक पुरुषार्थं को आज जमाने ने आह्वान किया है।

सबै भूमि गोपाल की।
सम्पति सब रघुपति कै आही॥

●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

: २ :

१९५५ से १९६० तक 'भूदानयज्ञ' में प्रकाशित भूदान-सम्बन्धी विविध लेख तथा यात्रा-संस्मरण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूदान की आधार-शिला : आस्तिकता

""कानूनी शक्ति भी हिंसा का ही एक रूप है। सख्ती से आदमियों के दिल नहीं बदले जा सकते। कानून से मनुष्य के मन में परिवर्तन नहीं होता। इसलिये कानून से जो समाज-परिवर्तन होता है, वह चिरस्थायी नहीं होता। स्नेहपूर्वक समझाने-बुझाने से ही मनुष्य के मत में परिवर्तन होता है। अहिंसा की प्रक्रिया में अनाग्रह होता है। इसलिये उसमें वैचारिक आक्रमण के लिये गुंजाइश नहीं होती।""

मैं इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि शिविर, सम्मेलन और परिषद् के कार्यक्रम अलग-अलग तरह के होने चाहियें। परिषदों का उद्देश्य प्रस्तावों के रूप में जनता के या सरकार के सामने लोकमत पेश करना होता है। सम्मेलनों का आयोजन इसलिये किया जाता है कि एक ही कार्य में लगे हुये कार्यकर्ता इकट्ठे हों; उनमें स्नेह और परिचय बढ़े तथा एक-दूसरे के साथ रहने से परस्पर-गुणसंवर्धन हो। परन्तु शिविरों का उद्देश्य अधिक विशिष्ट होता है। एक ही कार्य करने वाले कार्यकर्ता एक-दूसरे के साथ रहें यह लाभ शिविरों से अनायास तो होता है, लेकिन शिविरों का खास उद्देश्य तो यह है कि कार्यकर्ताओं के विचारों में सुस्पष्टता आये; उनकी निष्ठा अधिक निश्चित व स्पष्ट हो तथा कार्यपद्धति और कार्यक्रम एक-दूसरों के अनुभवों के आधार पर निर्धारित किये जा सकें। इस दृष्टि से शिविरों का अपना एक खास स्थान और उपयोग है।

मानवनिष्ठा ही ईश्वर-निष्ठा है

भूदान की आधारशिला आस्तिकता है। साधारण रूप से ईश्वर के अस्तित्व में श्रद्धा या विश्वास, इतना ही अर्थ आस्तिकता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

का किया जाता है। मैं उस शब्द का प्रयोग मानवता में विश्वास के अर्थ में करती हूँ। जिसका मानवता में विश्वास न हो, वह संसार में सर्वजनकल्याणकारी क्रान्ति नहीं करा सकता। मनुष्य में दुर्गुण हैं; त्रुटियाँ हैं। परन्तु इन सबके पीछे छिपी हुई एक मूलभूत अच्छाई है। सत्प्रवृत्ति है। सद्गुणों में उसकी निष्ठा है। इस सत्प्रवृत्ति की बुनियाद पर हम समाज-रचना कर सकते हैं, यही हमारी क्रान्ति की मूलभूत निष्ठा होनी चाहिये। यह जमाना लोकशाही का है। मनुष्य के प्रति श्रद्धा न हो, तो लोकशाही सफल नहीं हो सकती। लोकशाही 'थिअॅरी ऑफ फोर्स' (ज़ोर-ज़बरदस्ती) के आधार पर कभी नहीं चल सकती। लोकशाही का आधार लोक-सम्मति का तत्त्व है। यह मानव-निष्ठा पर निर्भर है। इसलिये हम जिसे मानव-निष्ठा कहते हैं, वह वास्तव में ईश्वर-निष्ठा ही है।

मूलभूत विश्वास ही आत्मनिष्ठा

सभी क्रान्तिकारी यह कहते हैं कि एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा, जब शासन-मुक्त समाज की स्थापना होगी। मनुष्य के भीतर छिपी हुई अच्छाई पर यदि हमारा विश्वास न हो, तो शासन-मुक्त समाज की कल्पना हम कर ही नहीं सकेंगे। इसी मूलभूत विश्वास का नाम आस्तिकता है। अर्थात् मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिये मानव-निष्ठा या आस्तिकता की आवश्यकता है।

अहिंसा में वैचारिक आक्रमण की गुंजाइश नहीं

अहिंसा के बिना यह आस्तिकता सक्रिय रूप धारण नहीं कर सकती। सिर्फ हिंसा के अभाव का नाम अहिंसा नहीं; अहिंसा एक विधायक सिद्धान्त है। क्रान्ति की प्रक्रिया में उसका अर्थ है कि हमें व्यक्तियों के सहयोग से और सम्मति से क्रान्ति करानी है। केवल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शस्त्रों के निषेध से यह क्रान्ति सम्पन्न नहीं होती। आज तो यह प्रश्न भी बहुत कम पूछा जाता है कि तुम शस्त्र से क्रान्ति क्यों नहीं करते ? शस्त्रास्त्रों का काफी अनुभव दुनिया को हो गया है। हाँ, लोग यह अवश्य पूछते हैं कि कानून से क्रान्ति क्यों नहीं कराते ? जवाब यह है कि कानून में भी सख्ती करनी पड़ती है। कानूनी सख्ती भी हिंसा का ही एक रूप है। सख्ती से आदमियों के दिल नहीं बदले जा सकते। कानून से मनुष्य के मन में परिवर्तन नहीं होता। इसलिये कानून से जो समाज-परिवर्तन होता है, वह चिरस्थायी नहीं होता। स्नेहपूर्वक समझाने-बुझाने से ही मनुष्य के मत में परिवर्तन होता है। अहिंसा की प्रक्रिया में अनाग्रह होता है। इसलिये उसमें वैचारिक आक्रमण के लिये गुंजाइश नहीं होती।

एक रोमाञ्चकारी अहिंसक प्रयोग

भूदान-यज्ञ की प्रक्रिया में सबसे पहले गरीबों का मत-परिवर्तन करना है। उनमें परिवर्तन की प्रेरणा पैदा होते ही उसका परिणाम अमीरों पर भी होगा। इसके साथ-साथ अमीरों में भी मतपरिवर्तन की प्रेरणा पैदा करने का प्रयत्न जारी रहेगा। यह एक रोमांचकारी अहिंसक प्रयोग आज हमारे देश में हो रहा है। कानून की सख्ती से यह प्रयोग सफल नहीं हो सकता। जो लोग कानून की बात करते हैं, उनका सूत्र है—पहले कानून, बाद में मत-परिवर्तन। हमारा सूत्र है—पहले मतपरिवर्तन और बाद में कानून की मुहर।

शोषण की खींचातानी ही वर्गभेद का कारण

सवाल यह है कि आर्थिक क्षेत्र में इस अहिंसक प्रक्रिया का प्रयोग कौन कर सकेगा ? साफ है कि वही कर सकेगा, जिसने अपने जीवन में अस्तेय और अपरिग्रह के व्रतों का आचरण शुरू कर दिया हो। जिस समाज में श्रम, कला और बुद्धि खरीदी जा सकती है,

भू—३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उस समाज में काम की और श्रम की चोरी भी होती है। श्रम का जो अपहरण होता है, उसे हम शोषण कहते हैं। पूंजीवादी अर्थ-व्यवस्था में श्रमिकों की मिहनत का जो शोषण होता है, वह भी चोरी ही है। हमारी जीविका ऐसी हो कि जिसमें शोषण के लिये अवसर न रहे। समाज में अगर ऐसे रोजगार रहेंगे कि जिनकी बदौलत मनुष्यों के स्वार्थ एक-दूसरे से टकराते हैं, तो शोषण का अन्त कदापि नहीं हो सकेगा। आज जो व्यक्ति मालिक है, उसका स्वार्थ मजदूरों के स्वार्थ से टकराता है। दूकानदार और ग्राहक के स्वार्थ में निरन्तर विरोध है। ऐसी खींचातानी में जो कमजोर होते हैं, उनको दबाकर जो पुरजोर होते हैं, वे मालदार बन जाते हैं। उनका रहन-सहन ऊँचा हो जाता है। इस तरह समाज में अमीर-गरीब का फर्क पैदा हो जाता है। यही वर्गभेद की बुनियाद है। इसलिये हमारी क्रान्ति वर्ग-निराकरण की क्रान्ति है। उत्पादन के साधन उत्पादक को दिलाना इस क्रान्ति का पहला आवश्यक कदम है। इसके लिये अगर हमें अपनी जरूरतें कम करनी पड़ें और जीवनमान भी कुछ घटाना पड़े, तो भी हमें तैयार रहना चाहिये।

दीनता और दरिद्रता के निवारण का उपाय

इस क्रान्ति का व्यावहारिक कार्यक्रम यह है कि जो उत्पादन के साधनों से काम नहीं लेता, वह अपनी खुशी से उन साधनों का स्वामित्व छोड़ दे। उन्हें समाज को अर्पण कर दे। दीनता और दरिद्रता के निवारण का यही उपाय है। भूदान-यज्ञ में हम एक को जमीन लेकर दूसरे को देना नहीं चाहते। जमीन उत्पादन का सर्वश्रेष्ठ साधन है। उसे हम उत्पादक को सौंपना चाहते हैं। याने, इसमें मालकियत का हस्तान्तरण नहीं है। यह तो मालकियत की बुनियाद ही बदलने का आयोजन है। इसके अलावा हम उत्पादक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के रुख को भी बदल देना चाहते हैं। हम नहीं चाहते कि आगे चलकर वह अपने को जमीन का मालिक माने। इसलिये हमारा एक नारा यह भी है कि 'अब भूस्वामी कोई नहीं रहेगा।'

उत्पादक की भूमिका और श्रमदान का रहस्य

इसका पहला कदम यह है कि जोतने वाला भी अपनी जरूरत के लायक जमीन रखे और बाकी जमीन समाज को अर्पण कर दे। हम मिहनतकशों से यह कहना चाहते हैं कि वे उस दिन के लिये कोशिश करें, जब किसी को अपनी मिहनत बेचनी नहीं पड़े। मालिक और मजदूर का भेद अब नहीं रहेगा। आज श्रमिक को अपनी जीविका के लिये जो परिश्रम करना पड़ता है, उसके अलावा समाज के लिये भी वह कुछ परिश्रम करे। इस तरह हम उत्पादक की भूमिका को बदल देना चाहते हैं। श्रमदान का यही रहस्य है। भूमिहीनों को छोटे मालिकों के साथ मिला देने के लिये हम छोटे मालिकों से और उत्पादक मालिकों से भी दान लेते हैं। इसमें यह सावधानी है कि छोटे-बड़े सारे मालिक एक तरफ और केवल श्रमजीवी गैरमालिक दूसरी तरफ, ऐसी हालत पैदा न हो सके।

समाज के सभी कक्षों में भूक्रान्ति का प्रवेश

इस प्रकार यह क्रान्ति सर्वस्पर्शी है। आज हम भूमिहीनों को भूमि देते हैं; इसका अर्थ यह नहीं है कि इस क्रान्ति से केवल उन्हीं का लाभ होगा। मैं कह चुकी हूँ कि हमें तो भूमि का ग्रामीकरण करना है। जो छोटे मालिक हैं, उनमें हम यह धारणा विकसित करना चाहते हैं कि सारी मालकियत गाँव की है। क्रान्ति का स्वरूप समग्र होना चाहिये। छोटे मालिक, बड़े मालिक, मँझले मालिक, सबकी धारणा आमूलाग्र बदल जानी चाहिये। भूदान-यज्ञ की प्रक्रिया तीनों प्रकार के मालिकों के एक ही साथ हृदय-परिवर्तन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की प्रक्रिया है। समाज के सभी कक्षों में भू-क्रान्ति का प्रवेश इस प्रक्रिया से होता है।

स्वामित्व-विसर्जन का सिलसिला

इसकी एक और विशेषता यह है कि भूमिहीनों में भी मालकियत के विसर्जन की भावना क्रान्ति के दौरान में ही पैदा होती है। वितरण की जो प्रक्रिया विनोबाजी ने बतलायी है, उसमें यह खूबी है कि मालिक जिस जमीन का दान कर देता है, वह सारे भूमिहीनों की हो जाती है। इसलिए उसका बँटवारा करने का अधिकार भी भूमिहीनों का है। हमारा कार्यकर्ता सिर्फ साक्षीभूत होता है। जो सबसे ज्यादा गरीब और जरूरतमंद हो उनको भूमिहीन सर्वसम्मति से चुनते हैं। इसमें एक भूमिहीन दूसरे भूमिहीन के लिए अपनी मालकियत का हक छोड़ देता है। इस प्रकार स्वामित्व के विसर्जन का सिलसिला शुरू हो जाता है।

सारांश यह कि समाज के सभी स्तरों में भूदान-यज्ञ ने जिस क्रान्ति की प्रक्रिया का आरम्भ किया है, उसका उद्‌देश्य मनुष्य की मूलभूत सद्‌भावना को प्रथम और प्रधान स्थान देना है। नयी समाज-रचना की नींव, मानव-हृदय की इसी मूलभूत सद्‌भावना पर रखी जायेगी। स्थायी और वास्तविक लोकतंत्र की नींव मनुष्यों के हृदयों में होती है। इस देश में विनोबाजी जैसे सन्त पुरुष ने भूदान-यज्ञ-आन्दोलन के रूप में यह नींव डालने का उपक्रम किया है। समाज के सभी स्तरों तक अस्तिकता का यह महान् संदेश पहुँचाने का कार्य हम-आप सबको करना है। उसे सम्पन्न करने की बुद्धि ईश्वर हमें दें।*

---

* सांगली शिविर (सातारा) से अपने भाषण से तैयार किया हुआ लेख।
—सं० भूदानयज्ञ ७ अक्तूबर १९५५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वर्तमान में सतयुग : सर्वोदय

आबू में श्री विमला बहन

राजस्थान में भूदान कार्य में लगे हुये जिला निवेदकों की बैठक आबू में राज-समग्र सेबा संघ द्वारा आयोजित हुई। उसमें बोलते हुए विमला बहन ने कहा—

"कालडी में विनोबा वे हमारे सामने तीन बातें रखीं। पहली बात यह कि गान्धीजी राजनीतिज्ञ नहीं, लोकनीतिज्ञ थे, और उनका प्रयास सदैव राजनीति को लोकनीति में बदल देने का रहा।

दूसरी बात विनोबा ने यह कही कि—पुराणमतवादी भूतःकालीन सतयुग की बात करते हैं और साम्यवादी भविष्य के सतयुग को रम्य कल्पना करते हैं। लेकिन सर्वोदयवाले वर्तमान में सतयुग की स्थापना करना चाहते हैं।

तीसरी बात विनोबा ने 'डिफ्रेन्स मेजर' के रूप में ग्रामदान प्राप्त करने की रखी। ग्रामदान की आवश्यकता विनोबा के लिये या आपके हमारे लिये नहीं, बल्कि परिस्थिति-परिवर्तन के लिये, गाँव बचाने के लिए है।

अहिंसात्मक आन्दोलन की सफलता कार्यकर्त्ताओं की निष्ठा से मानी जाती है। इस आन्दोलन का जो प्राण है, वह है हमारा अपना गुण-विकास। हम कार्यकर्त्ता अपनी भीतरी निष्ठा की जांच करते रहें—यही हमारा सम्बल है।

[भूदानयज्ञ २७ अक्तूबर'५५]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूदान-यज्ञ आन्दोलन की पार्श्वभूमि

(विमला बहन)

भूदान-यज्ञ आन्दोलन इस देश में कब और किस सन्दर्भ में पैदा हुआ, इसका जागतिक परिस्थिति एवं देश की परिस्थिति से क्या सन्दर्भ था इसका मैं यहाँ विवेचन कर रही हूँ।

शान्ति और अहिंसा का आधार

तेलंगाना में लूट-पाट हो रही थी, अमीरों के मकान जलाये जा रहे थे, दिल्ली से फौज भेज कर भी शान्ति कायम नहीं हो रही थी। उन दिनों विनोबाजी का चिन्तन शान्ति-सेना के निर्माण की ओर चल रहा था। ये सैनिक, सत्य और अहिंसा के सैनिक बन कर घूमते थे, विनोबाजी भी शान्ति-सेना के सैनिक बन कर तेलंगाना चले गये। उनसे पूछा गया कि पैदल क्यों जा रहे हैं? उन्होंने कहा, "इसलिये कि मिट्टी के कण-कण में मुझे परिस्थिति का दर्शन हो" लोगों ने कहा कि यदि शान्ति और अहिंसा के लिये कोई आधार चाहते हैं, तो भूख और गरीबी मिटा दीजिये। आपको एक अधिष्ठान मिल जावेगा।

भूदान-यज्ञ का आरम्भ और आवश्यकता

पोचम पल्ली गाँव के ८० हरिजनों ने माँग की कि हमें भूमि मिले, उसी समय भूमि मिल गयी और उसका वितरण भी हो गया। फिर तो विनोबा के सामने स्पष्ट हो गया कि जमीन जोतने वाले की है। इस आर्थिक सिद्धान्त का देश भर में प्रचार करेंगे, इससे सम्यक् विभाजन (Equitable Distribution) होगा। दान हमारे देश की पुरानी परम्परा है और यज्ञ का अर्थ हुआ कि मालकियत की आहुति इसमें स्वेच्छा से दे देवें। फिर उनके सामने रूस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और चीन के इन्कलाब थे। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि यदि बदलने के लिये दबाव दिया जाता है तो प्रतिक्रान्ति होती है। अतः जनता के पुरुषार्थ से ही क्रान्ति लाने का प्रयत्न करें, इस देश में 'ईश्वर-निष्ठा' है। यदि उसको जागृत करते हैं तो यहाँ की जनता जल्दी ही परिवर्तन के लिये तैयार हो जाती है।

भूदान के द्वारा वर्ग-निराकरण

आज तक क्रान्ति का अर्थ यही था कि दो वर्ग होंगे, गरीब का संगठन अमीर के खिलाफ होगा। व्यक्तियों का सहयोग और वर्ग का निराकरण, यह भूदान-आन्दोलन में अनोखी चीज है। आज १९५५ में अमीर का स्वार्थ भी क्रान्ति को साथ दे रहा है, क्योंकि यह जमाने का तकाजा है। आज पूँजीवाद को जिलाने की आशा नहीं रह गयी है।

गरीब और अमीर-वर्ग में जनता को विभाजित करना सम्भव नहीं है, यह तो तब होता यदि ये दोनों अलग-अलग होते। सम्पत्ति की इज्जत तो सभी के दिल में है। सफल गरीब ही अमीर है और असफल अमीर का नाम गरीब है। जब तक अमीरों के बीज समाज में छिपे हुए हैं, जनता का वर्गों में विभाजन असम्भव है।

शोषण की वृत्ति का अन्त होना जरूरी

दूसरी शोषण की प्रवृत्ति है। मैं कम से कम काम करूँ और समाज ज्यादा से ज्यादा दाम दे, समाज मेरे लिये ज्यादा से ज्यादा काम करे, और मैं कम से कम दाम दूँ। शोषण की एक शृंखला बन गयी है। समाज में जिसको जितना मौका मिलता है, वह उतना ही शोषण करता है। इसमें कम ज्यादा मौके के कारण हैं। जब तक सम्पत्ति की ओर हम नया रुख पैदा नहीं करेंगे तब तक यह प्रवृत्ति नहीं मिटेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मूल-विचार

भूमिदान के बारे में तीन चीजें याद रखनी चाहिए : १. मालकियत की बुनियाद बदलना—जमीन को बाजार में से उठा कर मेहनत करने वाले के कब्जे में देना। २. जमीन समाज की होगी। ३. उत्पादन समाज का है।

व्यक्ति के द्वारा समाज-परिवर्तन

५ एकड़ से कम भूमि वाले से हम हिस्सा लेने की बात नहीं करते, फिर भी उनसे दान इसलिये ले लेते हैं कि क्रान्ति में उनको साथ लेना चाहते हैं।

जिनके पास ३० एकड़ से ज्यादा भूमि है, उनसे छठा हिस्सा माँगते हैं और यह कोशिश करते हैं कि वे जमीन को खुद जोतें। इस प्रकार क्रान्ति को ही सबको बदलने का मौका देना चाहते हैं।

इससे व्यक्ति में विचार-परिवर्तन होगा और समाज में भी परिवर्तन होगा। यूरोप में समाज-परिवर्तन हुआ, समाज का रूप बदला, व्यक्ति की तबीयत नहीं बदली। भारत के सन्तों ने उपदेश दिये, व्यक्ति का परिवर्तन हुआ, पर समाज का नहीं।

इसके अलावा सम्पत्तिदान, श्रमदान और समयदान भी माँगते हैं। मानव के परिवर्तन में जिसे निष्ठा हो, वही यह दान माँग सकता है। जनतन्त्र में नागरिकों में एक दूसरे के प्रति विश्वास व निष्ठा होगी। शुद्ध और निरपेक्ष विचार ही भगवान् का स्वरूप है। भूमिदान-यज्ञ में जनतन्त्र की दीक्षा है। परस्पर स्नेह भावना के लिये एक अधिष्ठान है।

वितरण की विधि

भूदान-यज्ञ में जो जमीन मिलती है, वह बेजमीनों को बाँट देते हैं। एक परिवार को कितनी भूमि मिलेगी इसका निश्चय अलग-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अलग स्थानों की स्थिति और भूमि की किस्म के अनुसार किया जाता है।

अब सवाल यह उठता है कि जमीन कौन बाँटेगा ? यदि कार्यकर्ताओं को इसका अधिकार दिया जायेगा तो पक्षपात और अन्याय की भी सम्भावना रहती हैं। अतः यह व्यवस्था की गई है कि फैसला भूमिहीन ही करेंगे। इससे अन्याय और पक्षपात की गुंजाइश मिट जातो है और क्रान्ति में भूमिहीनों की भूमि विधायक और क्रियात्मक होगी। परन्तु भूमि प्राप्त करने की तीन शर्त्तें हैं :— १. भूमि बेच नहीं सकेगा। २. परती नहीं रखेगा और ३. रेहन नहीं रख सकेगा।

बँटवारा आम सभा में भूमि-मालिकों के सहयोग से होता है। सम्मिलित जुलूस निकलता है, जिसमें 'हमारे गाँव में भूमि मालिक कोई न रहेगा, कोई न रहेगा। 'जमीन गाँव की, जमीन भगवान की' आदि मन्त्र लगते हैं।

[भूदान-यज्ञ, ११ नवम्बर १९५५]

कैसे कहूँ ?

किस को ? कब ? कहो, कैसे कहूँ ?
जो कहने को अधर अधीर, बतियाँ प्रेम की गहन गभीर,
कहो किस को कैसे सुनाऊँ ?
रग-रग में प्रेम की धारा, कहो, किस को कैसे दिखाऊँ ?
आँखों में अँसुवन-भारा, कहो, किस के निकट बहाऊँ ?
दुःख दर्द का शूल है उर में, कहो, किस को कैसे बताऊँ ?

—विमला

[मौन के अनुनाद]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गरीबों के दान का अद्भुत चमत्कार

(विमला बहन)

कल कोइम्बतूर जिले के धारापुरम ताल्लुके में पदयात्रा आरम्भ हुई। यह इलाका बड़े-बड़े मीरासदारों का है। गोंडुर जाति के बड़े-बड़े मालिक यहाँ बसते हैं। एक ही जाति के हाथ में ३/४ जमीन है। कल सबेरे जिनके यहाँ थी, उनके पास बारह हजार एकड़ जमीन है। उसमें एक खास प्रकार की घास पैदा होती है। वह गाय-बैलों के लिए बहुत अनुकूल होती है। कांगायम नस्ल के हजारों गाय-बैलों का उनका एक मवेशी-फार्म कल देखा है। कहते हैं, एशिया में यह सबसे बड़ा फार्म है। इन सज्जन ने सात हजार एकड़ जमीन पहले दी थी। अब कहते हैं कि विनोबा के आने पर ग्रामदान दूँगा। कल शाम को जिनके यहाँ थी, वे एक हजार एकड़ के मालिक हैं। आज जिनके यहाँ ठहरी हूँ, वे छह हजार एकड़ के मालिक हैं।

निकृष्ट दीनता

मालिक जिन आसामियों को जोतने के लिये जमीन देते हैं, उनपर एक शर्त होती है कि जो परिवार जमीन जोतने के लिए लेता है, उस परिवार का एक व्यक्ति मालिक के खेत में काम करने के लिये भेजना ही पड़ता है। उसे रोजी या मजदूरी नहीं मिलती। वर्ष के अन्त में वसूली के समय उसको मजदूरी की रकम घटा कर बची हुई रकम मालिक वसूल करता है। आसामी अगर अपने परिवार के व्यक्ति को मालिक के खेत पर काम न भेजें, तो उन्हें दण्ड के रूप में एक मजदूर की एक साल की मजदूरी के बराबर रकम देनी पड़ती है। उतनी रकम मालिक काट लेता है। किसान बहुत संत्रस्त हैं। सिर में लपेटा हुआ अंगोछा मालिक के सामने कमर में बाँध लेते हैं। कमर तक झुक कर सलाम करते हैं। मालिक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को स्वामी कह कर पुकारते हैं, इत्यादि कई अपमानकारक रिवाज हैं।

जगन्नाथ का रथ

एक सज्जन ने यह कोशिश की कि विमला बहन का दौरा इस हिस्से में न हो। ये सज्जन जिला भूदान-समिति के सदस्य भी हैं, परन्तु संयोजक मुरुघेषन् नामक एक युवक है। उन्होंने कहा, "दौरा इसी हिस्से में होगा, चाहे एक इंच भी जमीन न मिले।" इस तालुके में भूदान का यह पहला दौरा है। अब तक श्री जगन्नाथन्‌जी ने दो बार प्रयत्न किया था। लेकिन मीरासदारों को यह डर है कि भूदान का सन्देश इस इलाके में फैलने से उनकी प्रतिष्ठा कम होगी।

मैं पहुँच ही गयी हूँ, इसलिये ऊपर से सहयोग बतला रहे हैं। ठहराना; खाना-पीना, सामान के लिये बैलगाड़ी आदि का इन्तजाम बड़ी मुस्तैदी से करते हैं। लेकिन सभाओं में आने से बचते हैं। आज जिनके घर आयी हूँ; वे कल रात को ही यहाँ से चंपत हो गये! एम० एल० ए० हैं वे। कल छह हजार एकड़ के एक मालिक ने सोलह एकड़ दान देने की बात कही। मैंने अदब के साथ इन्कार कर दिया।

अदम्य क्रान्ति-निष्ठा

ऐसे हिस्से में जमीन मिलना मुझे मुश्किल मालूम होता है, परन्तु भूमि-मालिक और भूमिहीन, दोनों के कानों तक शुद्ध विचार पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य अवश्य होगा। यह काम १९५७ के पहले भारतवर्ष के हर गाँव में अनिवार्य रूप से होना चाहिए, इसलिये मेरा उत्साह द्विगुणित हो रहा है।

एक नये परिवर्तन का अपने अभ्यन्तर में अनुभव कर रही हूँ। पहले जब मालिकों के अन्यायों और अत्याचारों के किस्से सुनती थी, तो सिर गरम हो जाता था। खून खौलने लगता था। परन्तु कल गाँवों में प्रचार के लिए गये हुए साथियों ने और ग्रामवासियों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ने कई किस्से सुनाये, तो भी मेरा दिमाग बिलकुल शान्त रहा। हृदय में वेदनाओं का दावानल धधक उठा। गरीबों के लिये सहानुभूति के झरने उमड़ पड़े। परन्तु साथ-साथ अत्याचारी और अन्यायी मीरासदारों के लिए भी करुणा का फुवारा उमड़ पड़ा। भाषण में श्रीमानों से हृदयपूर्वक अनुरोध किया वे बदलते हुए जमाने की रफ्तार को पहचानें। गरीबों से कहा कि निर्भय होकर अन्याय का प्रतिकार करो। संगठित होकर सारी जमीन गाँव की बनाओ। ऐसा संकल्प कर लो कि हम किसी की व्यक्तिगत मालकियत की जमीन नहीं जोतेंगे।

सात्त्विक उत्कटता

क्रान्ति के लिए आग्रहयुक्त अभिनिवेश भी अब मेरे चित्त में से धीरे-धीरे गल रहा है। अभिनिवेश जब क्षीण हो जाता है, तभी तो सात्त्विक उत्कटता का अनुभव होता है न ? विचारों का वेग जब शान्त हो जाता है, तभी तो प्रेम की शक्ति का प्रत्यय होता है !

सर्वोदय-सम्मेलन की तैयारी (मई में होनेवाला) शुरू हो गयी कामराजजी बहुत आस्था से ध्यान दे रहे हैं। विनोबा को पहले दिन चिंगलपेट जिले में १०१ ग्रामदान देने का संकल्प सबने मिल कर किया है।

दारुण दरिद्रता

चिंगलपेट, तुतीकोरिन, तिन्नेलवेली, मदुरा, त्रिचनापल्ली आदि जिलों में मैंने पहले यात्रा की है। जैसे मूच्छित और शोषित लोग कोइम्बतूर जिले में देखे, वैसे और कहीं नहीं देखे थे। कल और परसों, दो ही दिनों में हजारों आदमी देखे। उनकी मुद्रा पर शून्यता का भाव है। वे मनुष्याकार हैं, इसीलिए उनको मनुष्य कह लीजिये। उन्हें स्वराज्य क्या है, मालूम नहीं। रास्ता चलते या खेतों में काम करने वाले लोगों से हम पूछते थे। कल की सभा में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाँच-सात सौ आदमी ऐसे थे, जो नेहरू का नाम नहीं जानते थे। महात्मा गांधी का नाम जानते हैं; लेकिन गांधीजी अब नहीं रहे, यह उन्हे नहीं मालूम। मुझे कृपलानीजी की सार्वत्रिक अज्ञान और सार्वत्रिक मतदान की बात याद आयी। भूदान का जिक्र करते ही ये लोग कहते, "स्वामी से कहिये, वे हमारे माँ-बाप हैं। वे ही तो हमें खिलाते हैं! हम उनके हुक्म के बंदे हैं।"

लोकरूपी महादेव

तीन-चार गाँवों में यात्रा हुई। यह हालत देखकर मुझे कैसा लगा होगा, इसकी कल्पना आप कर सकते हैं। सबसे पहले इस मूर्च्छित महादेव को जगाना है। उसे याद दिलाना है कि वह महादेव है। क्रान्ति बाद में होगी। पहले तो उनमें मानवता की चेतना जगा कर निर्भय बनाने की जरूरत है। इसके सिवाय दूसरा रास्ता भी तो नहीं है। मालम होता है कि अहिंसात्मक क्रान्ति में गति लाने के लिए उसमें अपने प्राण ही उँड़ेलने होंगे। जनता के चरणों में अपने पंचप्राण बिछाने होंगे और इस तरह कदम बढ़ाना होगा। (कुट्टपालयम्, कोइम्बतूर, ६-१-'५६)

प्रतिकूलता में से अनुकूलता

आज (११-१-'५६) की सभा में ४८ सम्पत्तिदान-पत्र और ६ भूमिदान-पत्र मिले।

ता० ५ से १२ तक तीन टोलियों को कुल मिलाकर ५०० एकड़ जमीन मिली। बची हुई पाँच टोलियों की रिपोर्ट मुझे कल तक मिलेगी। हमारे खास नेता नहीं हैं, कांग्रेस के कार्यकर्ता नहीं हैं, कोई वजनदार, वयस्क लोग नहीं हैं। सबसे बुजुर्ग जगन्नाथजी। लेकिन हमने तालुका हिला दिया। हमारे रास्ते में सभी बड़े-बड़े जमींदार हैं। एक भी पाँच सौ एकड़ से कम के मालिक नहीं। उनका सहयोग भी हमें नहीं मिल रहा है। लेकिन गरीब दान देने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लगे। हरिजन भी देने लगे। शिक्षक, बुनकर, होटलवाले, बसवाले; सभी सम्पत्तिदान दे रहे हैं। यह अजीब नजारा देख कर मीरासदार चकरा गये हैं। पहले तो कठिनाई हुई फिर तो आश्चर्यकारक वेग से चक्र फिरने लगा। आज सात दिन के बाद ही भारी सन्तोष हो रहा है। (१२-१-'५६)

यश गरीबों का

परसों ४८ सम्पत्तिदान-पत्र सभा में मिले, कल ५० हरिजनों ने सम्पत्तिदान दिये। भूदान-पत्र भी परसों और कल मिले। रात में यह खबर धारापुरम् पहुँची। काँग्रेस के कार्यकर्ता, एम० एल० ए० साहब और दूसरे श्रीमानों की आँखें खुली जब उन्होंने यह देखा कि उनके तालुके में उनके सहयोग के बिना इन लड़के-लड़कियों ने ८-१० दिन में सिर्फ गरीबों से ५००-७०० एकड़ जमीन ली, वे घबड़ाये। आज सबेरे काँग्रेस-कमेटी के मन्त्री और उपाध्यक्ष आ पहुँचे। दोपहर एम० एल० ए० साहब के भाई और माताजी पधारीं। शाम को अखबारों के संवाददाता आ धमके। सबेरे सभा के परचे पाँच-छह गाँवों में भेजे गये। मोटरों की दौड़धूप है। कार्यकर्ताओं की धूमधाम है। एम० एल० ए० और उनके तीन भाई मिल कर कल तीन सौ एकड़ दान देने वाले हैं। उन्हीं गाँवों में हमारा मुकाम है। कल दान का अंक हजार पर पहुँचेगा।

गरीबों के स्वयंस्फूर्त सम्पत्तिदान को देख कर मैं दंग रह गयी हूँ। परसों बुनकरों ने दान दिया, वे कल रात को सात मील चल कर अपने साथियों सहित आये। उन साथियों से दान दिलाया। रात भर हमारे साथ रह कर आज प्रातःकाल के बाद ये १५ तरुण व्यक्ति जयघोष करते हुए अपने गाँव के लिये रवाना हुए।

(१३-१-'५६) [भूदान-यज्ञ, २ जनवरी, '५६]

—पदयात्रा डायरी से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तामिलनाड में मेरी पदयात्रा

(विमला बहन)

कोत्तनूर गाँव में गोविन्दस्वामी नामक एक सज्जन के यहाँ हम ठहरे उन्होंने दुबारा भूमिदान दिया। उनके गाँव की सभा में ३३ लोगों ने भूमिदान दिया। गाँव की शाला के शिक्षक ने सम्पत्तिदान दिया। उनका नाम कुमार अय्यियार है। रात ग्यारह बजे सभा समाप्त होने पर सोने जा रही थी, उस समय एक सज्जन आकर एक दानपत्र दे गये। दूसरे दिन यात्रा-मंडली में कुमार को देख कर मैंने पूछा, "आप कैसे आये?" कहने, "दो दिन की छुट्टी साथ रहना चाहता हूँ"। दो दिन तक प्रवास में वे मुझसे सम्पत्तिदान, जीवनदान, ग्रामदान आदि विषयों की चर्चा करते रहे। ता० १४ को मिले हुए ग्रामदान से उनके मन पर गहरा असर हुआ। ये सज्जन ग्रेजुएट हैं। प्राकृतिक उपजतज्ञ हैं। समाचारपत्र-व्यवसाय में उनको रुचि है। ता० १५ की कार्यकर्ताओं की सभा में उन्होंने नम्रतापूर्वक अपना जीवनदान का संकल्प घोषित किया। विदाई के समय कहने लगे, "चार दिन के सत्संग से मुझे निस्संगत्व, निर्मोहत्व, निश्चंचलता से ले कर अन्त में जीवन-मुक्ति का लाभ हुआ।"

❀ ❀ ❀

कल तारीख १९ को मैं जिस गाँव में थी, उस गाँव में अपण्णा नामक संन्यासी भक्त-पुरुष रहते है। उन्हीं के आश्रम में हम लोग ठहरे थे। स्वामीजी की अवस्था ४५ से ५० तक होगी। बड़ा सुन्दर आश्रम है उनका। एक तरफ शिव और दूसरी तरफ विष्णु का मन्दिर है। पड़ोस में ही स्कूल की खूबसूरत इमारत है जो स्वामीजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ने स्वयं चन्दा जुटा कर बनवायी है। चन्दा अपनी कुटी में बैठ कर चिट्ठी-पत्री से इकट्ठा करते हैं। अपनी जगह छोड़ कर वे कहीं नहीं जाते। स्कूल के सामने ही मैदान में हमारी सभा हुई। परसों और कल मिला कर दो दिनों में दानपत्र और ५० एकड़ जमीन मिली। २७ सम्पत्तिदान-पत्र और ११ साधनदान-पत्र भी मिले। कल की सभा में मैंने यह विचार किया था कि भाषण के बाद जमीन का बँटवारा कर गाँववालों को वितरण का शिक्षण दूँगी। दिन भर साथियों से उसकी तैयारी करायी थी। स्वामीजी आश्रम के दरवाजे पर बैठ कर भाषण सुन रहे थे। मैंने वितरण के लिये उनसे आने की प्रार्थना की।

अगरबत्तियाँ जलायी गयीं। चन्दन कुंकुम, विभूति, हार, खाने के लिये नींबू, केले आदि सामग्री थी। दो हरिजनों को जमीन देनी थीं। दाताओं को बुलाया। उन्होंने भूमिहीनों को चन्दन-कुंकुम का तिलक लगाया। हार पहनाये। स्वामीजी के श्रीकरों से दानपत्र दिलाये। दाताओं ने हरिजनों के माथे पर, हाथ और छाती पर इतने प्रेम से चन्दन लगाया कि मुझे बद्रीनारायण की पूजा का स्मरण हुआ। स्वामीजी की आँखों में से आँसू टपक रहे थे। वितरण के बाद उन्होंने बड़ा मधुर भाषण किया :

"विनोबा की प्रतिबिम्ब-स्वरूप, परन्तु चिन्मय विमला अम्मा, तुमने आज मुझे जनार्दन से साक्षात्कार कराया। अणु-परमाणु में भगवान् हैं, यह बात ग्रन्थ-ग्रन्थान्तरों में पढ़ी थी। इस सभा में मुझे उसका अनुभव हुआ। यह आन्दोलन सफल होकर रहेगा, क्योंकि वह अद्वैत के आधार पर खड़ा है। अद्वैत का ज्ञान और द्वैत की भक्ति, इन दोनों का मधुर संगम है। मैं मन से आशीर्वाद देता हूँ कि तुम्हारी यात्रा सफल हो।"....बोलते-बोलते उनकी आँखें तिरोहित हो गयी, कंठ रुँध गया। अश्रु उमड़ पड़े। वे चुपचाप उठ कर कुटी की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तरफ चले गये। सभा में श्री साँबशिवन् रेड्डियार नाम के एम० एल० ए० भी थे। उनकी स्थिति भी स्वामीजी की तरह ही हुई। कहने लगे, "आज धन्य हो गया। मेरे जीवन में ईश्वर केवल एक बौद्धिक निष्ठा की वस्तु थी। आज प्रत्यक्ष हुआ।"

स्वामीजी ब्राह्मण है। ब्राह्मण का हरिजन को माला पहनाना, चन्दन लगाना आदि सारा दृश्य देख कर सभा दंग हो गयी। सभा के बाद स्वामीजी ने बड़े प्रेम से भोजन कराया।

स्वामीजी के भक्त शिकायत करने लगे। आज स्वामीजी की प्रतिष्ठा कम हुई। वे सभाओं में नहीं जाते। कभी भाषण नहीं करते। हम बीस साल से देख रहे हैं। कृष्णम्मा से मुझे मालूम हुआ। हमारा यात्रीदल दुखी हुआ कि हमारे कारण स्वामीजी की प्रतिज्ञा भंग हुई। मैं तुरन्त उठ कर स्वामीजी के पास गयी और उनसे कहा, "ये सब लोग कहते हैं कि स्वामीजी की प्रतिज्ञा भंग हुई है। आपकी प्रतिज्ञा के विषय में जानती ही नहीं थी, इसलिए मैंने आपको सभा में आने की प्रार्थना की। इसमें अगर किसी की भूल है, तो मेरी है। आप क्षमा करें।"

स्वामीजी तत्क्षण हाथ जोड़ कर बोले : "शिव-शिव, आप क्षमा किस बात की माँगती है? प्रतिज्ञा मेरी थी, पर यह काम तो ईश्वर का है। उसी ने तुमको यहाँ भेजा, और मुझसे इतनी देशसेवा करा ली। वह हम सबको कठपुतली की तरह नचाता है। मैं तो बहुत ही प्रसन्न हूँ। रामचन्द्रजी को सेतु बनाने में आज फिर से गिलहरी ने मदद पहुँचायी। यह सच है कि मैं सभाओं में नहीं जाता और भाषण नहीं करता। ऐसी मेरी प्रतिज्ञा है। १९४८ में यह अफ-वाह फैल गयी कि गांधीजी की हत्या किसी मुसलमान ने की। आत्तुर में हिन्दू-मुसलमानों का दंगा शुरू हुआ। मैं किसी की बात नहीं मानता था। दौड़ कर लोग मेरे पास आये, तब मैं आत्तुर

भू-४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गया। गाँव में घूमा। सभा करायी। भाषण किया। मेरी प्रतिज्ञा से वह काम महान् था, इसलिए तो मैंने यह सब किया न? १९४८ में सुलगी हुई आग को दबाने के लिए भाषण किया और आज भाषण इसलिए किया कि आग परचने ही न पाये।" यह कह कर वे आनन्द से खिलखिला कर हँसने लगे। साथियों के मन का बोझ हलका हो गया।

आज प्रातः स्वामीजी प्रार्थना में बैठे। उन्होंने स्वयं भजन गाये। मुझसे भजन गाने को कहा। शंकराचार्य का 'भज गोविंदम्' स्तोत्र वे इतने प्रेम-मग्न होकर गाये थे कि चित्त डोलने लगा। स्वामीजी स्वयं भजन बनाते हैं। भजन के बाद मुझे 'रागी माल्ट' का एक डिब्बा देकर बोले, "यह आश्रम दक्षिण में तुम्हारा घर है समझो? यह डिब्बा ले जाओ। इस माल्ट को रोज दूध में मिला कर पिया करो। स्वास्थ्य संभालो।" अंत में हमें विदा करने के लिए दरवाजे तक आये। उनकी और मेरी एवं साथियों की आँखें डबडबा रही थीं। ब्राह्ममुहूर्त में आश्रम का वह शांत वातावरण फूलों के परिमल से सुरभित हो रहा था। पवन की मधुर शीतलता स्वर को ताजगो दे रही थी। आसमान में तारे चमचमा रहे थे। स्वामीजी की गद्गद मूर्ति और साथियों के भावनाओं से ओत-प्रोत चेहरे देख कर मुझे विलक्षण सुख का अनुभव हो रहा था। सारा अभ्यन्तर प्रशान्त प्रसाद से भर गया था। कल शाम का और आज का प्रभातकालीन दृश्य मेरी आँखों में समा गया। (२०-१-'५६)

× × ×

आज भी मैं थोड़ी-सी जमीन बाँटने वाली हूँ; मानो प्राप्ति और वितरण का शिविर ही हो रहा है। (२१-१-'५६)

× × ×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राप्ति और वितरण का सहसमारोह

मैंने लोगों से यह कहना शुरू कर दिया है कि भूदान-समिति से सूचना सुनते ही गाँव वाले स्वयं वितरण करें और अड़ोस-पड़ोस के गाँवों को वितरण-पद्धति की जानकारी दें। इस उद्देश्य से प्राप्ति और वितरण एक ही सभा में करने का उपक्रम किया है।

आज सबेरे साढ़े छह बजे हम लोगों ने इल्लपत्तनम् गाँव में प्रवेश किया। मेरे साथी ग्राम-प्रदक्षिणा करने गये, उस बीच में मैंने गाँव के मुखिया और 'कर्णम्' दरबारी से प्राप्ति-वितरण के बारे में चर्चा की। १५-२० मिनिट में उस नन्हें-से गाँव में ५०-६० पुरुष और २५-३० स्त्रियों की एक छोटी-सी सभा हुई।

पहले भूदान का छोटा-सा सरल गीत गाया गया। उसके बाद मुख्य-नारे सिखाये गये। सरल भाषा में भूदान-यज्ञ की जानकारी दी गयी और लोगों से निवेदन किया गया कि आप भी अपने गाँवों में यज्ञ शुरू कीजिये।

भाषण समाप्त होते ही एक सज्जन ने ५० सेंट साबित जमीन दूसरे ने कुदाली-फावड़ा आदि साधन दिये। तीसरे ने बीज दिया। यह काम हो ही रहा था कि इतने में एक सज्जन ने अपनी जोत में से ५० सेंट जमीन दी। उसके बाद तुरन्त दूसरे ने एक एकड़ जमीन दी। भूमिदान के साथ-साथ साधनदान का सिलसिला भी जारी रहा। गाँव में से कुल १५ एकड़ जमीन मिली। रशीद खाँ नामक शिक्षक ने सम्पत्तिदान दिया। भूमिहीनों में से २ भूमिहीन हरिजन व्यक्तियों को जमीन देना निश्चित हुआ। फूल, पान, विभूति, कुंकुम आदि सामान लाया गया। दाताओं को विभूति, कुंकुम आदि का तिलक मैंने लगाया, भूमिहीनों को कृष्णम्मा ने तिलक किया। रास्ते के उस पार जो खेत दिखायी दे रहे थे, उनमें से वितरण की भूमि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिखायी गयी। हरिजन बन्धुओं को भूमिदान और सब कुछ यथा-विधि मिला।

डेढ़ घंटे में घटित यह चमत्कार देख कर गाँव वाले आश्चर्य-चकित हुए। कई लोगों की आँखों में से आनंदाश्रु टपक पड़े। वे स्वयं बैठ कर गाँव के भूमिहीनों की फेहरिस्त बनायेंगे। उनके लिए आवश्यक भूमि का हिसाब लगा कर वितरण करेंगे इत्यादि बातें जब उन्हें समझायी गयीं, तो उनके आनन्द का कोई ठिकाना नहीं रहा। भूमिहीन व्यक्तियों के आनन्द से चमकने वाले चेहरे और दाताओं के संतोष से भरे हुए चेहरे त्रिगुणातीत प्रसन्नता की गवाही दे रहे थे। वातावरण जयध्वनि से गूँजने लगा—"जमीन सारी भगवान् की", "भूमाता की सेवा करेंगे", "महात्मा गांधी की जय", "महान् विनोबा की जय।"

रशीद खाँ भी हमारे दाताओं में से थे। उन्हें जब हम विभूति, कुकुंम आदि लगाने लगे तो गाँववाले कहने लगे, "यह मुसलमान हैं।" तब उन्हें समझाया, "हिंदू-मुसलमान सबको एक ही परमात्मा बनाता है। एक ही धरती माता उनकी परवरिश करती है। उसी माता की गोद में मरने के बाद हम सब सोते हैं।"

आश्चर्य यह कि ग्रामीण जनता यह विचार तुरन्त समझती है। अद्वैत-विचार के बीज भारत की मिट्टी में घुल मिल गये हैं। अद्वैत के आधार पर यदि समाज-रचना और अर्थ-रचना हो, तो जनता का प्रतिमोदन सहज ही मिलेगा। जनता का आवाहन करके उसे इस पुरुषार्थ के लिए प्रवृत्त करने की ही आवश्यकता है। मेरा सारे प्रांतों का यही अनुभव है। (२२-१-'५६)

× × ×

आज सबेरे की सभा में फिर से प्राप्ति और वितरण के कार्य-क्रम एक-साथ हुए। आज एम० एल० ए० साहब के हाथों वितरण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कराया। आश्चर्य यह है कि वितरण के समय हल, कुदाली, फावड़ा, बीज इत्यादि सारी साधन-सामग्री लोग हँसते-हँसते खुशी से देते हैं। एक सज्जन ने तो सौ रुपया का रुक्का (प्रोनोट) लिख दिया। उस भूमिहीन का सारा कर्ज एक क्षण में रफा हो गया। एक ने अपना झोपड़ीनुमा घर ही दान में दे दिया। कार्यकर्ताओं का उत्साह और आनन्द आसमान में ही नहीं, बल्कि तीन लोक में नहीं समाता। अगन्नाथन्जी आये। सारा समारोह देख कर खुश हुए। रात की सभा में फिर वही प्रयोग किया। दिन भर में २३ दानपत्र और ३७ एकड़ जमीन मिली, जो १२ भूमिहीनों को वह बाँट दी गयी। भूमि-मालिक और भूमिहीनों की सम्मति से आम सभा में आदाताओं के नामों का निश्चय होता है। यह चेतावनी भी दे दी गयी कि जमीन हमारी देखी हुई नहीं है। गाँववाले बतलायें जमीन कैसी है? जोतने लायक न हो, तो भूमिहीन हरगिज न लें।

हमारी इस चेतावनी का असर बहुत अच्छा होता था। सवर्ण हिंदू दाता जब हरिजन आदाताओं को तिलक करता था, तो आनन्द युक्त नारों से सभा गूँजने लगती थी। (२३-१-'५६)

× × ×

कल रात की सभा में छह व्यक्तियों को जमीन बाँटी गयी। तत्काल वितरण का परिणाम बहुत ही सुन्दर होता है। यहाँ के एम० एल० ए० शुरू में कुतुहलवश यात्रा में आये। एक-दो दिन के लिए आये थे; लेकिन दसों दिन रह गये। शुरू-शुरू में वे जीप से आते थे। कुछ छटक कर रहते थे। दो दिन के बाद हमारे साथ पैदल चलने लगे। वितरण-समारोह देख कर मुग्ध हो गये। आंदोलन के सभी पहलुओं पर मुझसे चर्चा की। २५ ता० को उनकी असेंब्ली शुरू हो गयी। लेकिन श्री सांबशिवम् रेड्डियार हमारी पदयात्रा में ही हैं और आज तो प्रकट रूप से यह कहने लगे हैं कि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सेलम जिले का काम मैं सम्भाल लूँगा। जगन्नाथन्‌जी का आनन्द मत पूछिये। मेरी जुलाई-अगस्त की यात्रा में लाडपुरम् गुरुस्वामी कांग्रेस छोड़ कर भूदान के काम में आये। वे आज भी उत्कट निष्ठा से काम कर रहे हैं। उन्हीं की तरह प्रभावशाली रेड्डियारजी हैं। तमिल भाषा के विद्वान् हैं; सज्जन, जिम्मेवार और प्रांजल हैं। मेरी पदयात्रा सार्थक हुई। (२६-१-'५६)

× × ×

सेलम जिले में महाद्रविड़-कड़गम और कम्यूनिस्टों का जोर है। कांग्रेस पक्ष के कार्यकर्ता बहुत कम हैं। कांग्रेस-कार्यकर्ता श्रीमान् हैं। जनता पिछड़ी हुई है। हमारी तीनों टुकड़ियों को इसके परिणाम भुगतने पड़े। सभाओं में सौम्य उपद्रव हुए। सभा तोड़ने की कोशिशें हुईं। श्रीमान् कांग्रेस-कार्यकर्ताओं ने हमारी जो उपेक्षा की, वह सहनी पड़ी। गरीबों से ही दानपत्र मिले। कुल १५० दानपत्र और ३९० एकड़ जमीन मिली। इसमें से २५० एकड़ मेरी टोली को मिली और १४० एकड़ दूसरी टोलियों को। १७५ संपत्तिदानपत्र और ४५ साधनदानपत्र मिले। सात गाँवों में वितरण का प्रत्यक्ष प्रयोग मैंने किया। दूसरी टोलियों ने पाँच गाँवों में प्रयोग किया। सभाएँ सभी जगह उत्कृष्ट हुईं। कड़गम, कम्यूनिस्ट और रामराज्य-परिषद के लोगों से भी हमने दानपत्र प्राप्त किये। ३० कार्यकर्ताओं ने ९ दिनों में कुल १०१ गाँवों में प्रचार किया। जो कुछ काम हुआ है, उससे मुझे पूर्ण संतोष है। (२९-१-'५६)

[भूदानयज्ञ २ मार्च १९५६ से साभार]

हृदय में ज्ञानदीप जलाओ, शत-शतकों का तम सुलगा दो।
भूत-भविष्य का अन्तर तोड़ो, निज अन्तर् प्रक्षालित करो॥
प्रतिपल दृष्टि के द्वार पर सोत्कण्ठ खड़े चैतन्य को गौर से निहारो।
अणु-रेणु में स्पन्दित चैतन्य से तुम्हारी समग्रता को खिलने दो॥

—विमला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आन्दोलन की चार अवस्थाएँ
(विमला बहन द्वारा शंका-समाधान)

[श्री विमला बहन के महाराष्ट्र के दौरे में उनसे जो सवाल पूछे गये, उनके उत्तर सभी प्रान्तों के कार्यकर्ताओं के लिए उद्बोधक साबित होंगे, इसलिए मराठी "भूदान-यज्ञ" से हम हाँ उन्हें सादर उद्धृत करते हैं।—सं०]

इस आंदोलन के विषय में लोगों की अनास्था और शिथिलता तथा कार्यकर्त्ताओं की दुर्बलता आदि की कठिनाइयों को लेकर प्रश्न पूछे गये। जवाब में विमला बहन ने कहा :

"हर एक आंदोलन की चार अवस्थाएँ देखी जाती हैं। यथा—उपेक्षा, शंकाशीलता, विरोध—इन तीन अवस्थाओं में से जो आन्दोलन और जो कार्यकर्त्ता अपना स्वत्व सम्भाल कर उत्तीर्ण होते हैं, वे फिर चौथी अवस्था तक पहुँचते हैं। यह चौथी अवस्था है—लोगों की सहानुभूति तथा अनुकूलता। आज भूदान-यज्ञ की तीन अवस्थाओं में से हम पार हो रहें हैं। यह हमारे लिए सौभाग्य का विषय है कि समय इस आन्दोलन के लिए अनुकूल है। इसीलिए इन तीन अवस्थाओं में से गुजरने मे हमें ज्यादा वक्त नहीं देना पड़ा।"

इन अवस्थाओं का विवरण करते हुए विमला बहन ने कार्यकर्त्ताओं को अपने अनुभव की अनेक बातें बतलायीं।

कार्यकर्ताओं की सभाओं में तथा सार्वजनिक सभाओं में ग्रामदान के सिलसिले में विनोबा की एक महत्वपूर्ण सूचना विमला बहन विशेष रूप से बतलाती थीं।

चुनाव के वक्त हम क्या करे ?

जहाँ ग्रामदान हुआ था, ऐसे गाँवों के कुछ व्यक्ति विनोबाजी से मिलने आये थे और उन्होंने उनसे पूछा था :

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"आप कहते हैं कि गांव के सारे काम एकमत से होने चाहिए। अब चुनाव नजदीक आ रहे हैं और अलग-अलग पार्टियाँ प्रचार के लिए हमारे गाँवों में आयेंगी। गाँववाले असमंजस में पड़ जायेंगे। इस मामले में हम क्या करें? आपका क्या सुझाव है?"

विनोबा ने उन लोगों से कहा: "आप सब गाँव वाले इकट्ठे बैठकर तय कीजिए और हर एक पार्टी को पत्र लिखिए कि हमारे गाँव में चुनाव के प्रचार के लिए आना हो, तो आप सारी पार्टियों वाले मिल कर हमें कोई भी एक तारीख दीजिए। ज्यादा दिन और समय इस काम के लिए देने को हमारे पास अवकाश नहीं। इसलिए आप लोग नियत तारीख को सब मिल कर यहाँ पधारें। इससे एक ही सभा में एक-दूसरे के आमने-सामने सारी पार्टियों की तरफ से भाषण होंगे। एक-दूसरे की टीका और गाली-गालौज पर बहुत नियंत्रण आ जायगा। उनकी बातें सुनने के बाद आप उनसे कहिये कि आप लोगों को जो कहना था, वह आपने कहा। अब हम उस पर विचार करेंगे। फिर उन सबको भोजन कराइये और तुरन्त गाँव स रवाना कर दीजिए। अगर वे गाँव में रह गये तो फिर 'चाबीवाले वोटर' याने जो दस-बीस वोट दिला सकें, ऐसे वोटरों की वे खोज करेंगे। उन्हें अपनी तरफ मिलाने की कोशिश करेंगे और गाँव में गड़बड़ी पैदा करेंगे; इसलिए पार्टीवालों को गाँव में ठहरने नहीं देना चाहिए।"

विमला बहन की स्पष्ट विचारसरणी, प्रगाढ़ श्रद्धा, हृदय की लगन, विवेचन की कुशलता और अमोघ वक्तृत्व आदि गुण-समुच्चय ने सभी श्रोताओं के हृदय को पकड़ लिया। इन गुणों के साथ-साथ कार्यकर्ताओं के विषय में उनके मन मैं असोम स्नेह-भाव है। जगह-जगह के कार्यकर्ता उनके निकट आते थे। विमला बहन में लोकसंग्रह की अजोब सिफत है। भूदानयज्ञ १८ मई ५'६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूदान-यात्रा में—

विमला बहन के साथ सात दिन !

('अनामिका')

मैं कितने दिनों से साध सँजोये रही कि धर्मचक्र-प्रवर्तन के पदयात्री दल में अपना भी समावेश करा लूँ। उसके लिए मैं किस-किस तरह की पार्श्वभूमि तैयार करती रही! आखिर गत १५ मार्च'५६ को वह पूरी हो गयी। उस दिन श्री विमला बहन ठकार का कर्नाटक का साप्ताहिक दौरा शुरू हुआ और मैं भी उनके साथ हो ली।

कर्नाटक में विमला बहन के इस बार आने के तीन प्रमुख उद्देश्य रहे : (१) यहाँ के निष्ठावान् कार्यकर्ताओं से परिचय, (२) कार्यकर्ताओं के बीच निकटता का निर्माण और (३) सभी कार्यकर्ता एक जगह जुट कर अपने-अपने जिले के कोने-कोने में भूदान का सन्देश पहुँचाने की दृष्टि से योजना बनाना। इस यात्रा का एक यह भी उद्देश्य था कि दिसम्बर १९५७ तक पूरा समय-दान देने वाले कार्यकर्ता प्राप्त किये जायँ।

विमला बहन ने गुलगुञ्जीकोप गाँव में १९-२० मार्च को लगे कार्यकर्ता-शिविर का उद्घाटन किया। कार्यकर्ताओं द्वारा अनेक व्यावहारिक प्रश्न पूछे गये, जिनके उन्होंने मार्मिक उत्तर दिये। इस गाँव के ग्रामदान का तय हो गया था, पर सिर्फ एक जमींदार के कब्जा न देने से समग्र ग्रामदान रुक गया।

विमला बहन का यह दौरा सुलगाँव से शुरू हुआ और २२ मार्च को गदग के भाषण के साथ पूरा हुआ। यात्रा में उनके साथ कर्नाटक के जीवनदानी सर्वश्री बाबूराव कामत, प्रदेश भूदान-समिति के संयोजक श्री तिमप्पा नायक, प्रमिला कामत, और मैं रही। बीच में कडोली-कस्तूरबा-केन्द्र की दो सेविकाएँ, भागीरथी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रभु और लक्ष्मी गांधी भी इसमें आ मिली। यात्रा का कार्यक्रम निम्नलिखित रहा : १५ को सुलगाँव, निपाणी और दड्डी, १६ को बेलगाँव १७ को यल्लूर और हल्याल, १८ को हुबली, १९ को गुलगुञ्जीकोप, २१ को शिगली और २२ को गदग। यात्रा जीप, रेल और पैदल हुई। यात्रा में जगह-जगह भाषण, प्रश्नोत्तर, भूमिदान, साधनदान, सम्पत्तिदान के सिवा भूवितरण का भी कार्यक्रम सम्मिलित रहा।

बेलगाँव की सभा में विमला बहन ने कहा कि "आज के भ्रष्ट और सदोष कागजी लोकतंत्र को तेजस्वी और निर्दोष बनाने का एकमात्र मार्ग है, गरीब-अमीर का भेद मिटा कर समता निर्माण करना और जनता को निर्भय बनाना। भूदान-आन्दोलन सिर्फ जमीन बाँटने का आन्दोलन नहीं। सत्ता का हस्तांतरण या दरिद्रता का वितरण उसका लक्ष्य नहीं। वह तो कालपुरुष की माँग के अनुसार स्थितिपरिवर्तन का ही यत्न है। भूदान तो उसका एक प्रतीक है और सम्पत्तिदान व साधनदान उसके अविभाज्य अंग !"

यल्लूर की सभा में विमला बहन ने बताया; "भारत में अनेक पंथों, सम्प्रदायों और धर्मों का विशाल कुटुम्ब बसता है। यही उसकी विशेषता है। भारत में जन्म पाना ही विश्वनागरिकता का मौका पाना है। वेद-उपनिषत्काल से ही इस देश पर सत्ताधीशों की छाप नहीं रही है। इतिहास साक्षी है कि इस भूमि में सत्ताधीशों ने सन्तों से ही पथ-प्रदर्शन पाया। भोग त्याग के आगे झुक गया ! इसी कारण पाँच साल के थोड़े समय में अहिंसा और हृदय-परिवर्तन के मार्ग से ४५ लाख एकड़ जमीन का दान मिल जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं। भूदान-आन्दोलन व्यापक होने के साथ ही दलातीत भी है। स्वातंत्र्य और सत्ता का सच्चा अर्थ समझाने, राष्ट्रीय एकता बनाये रखने और विश्वास बढ़ा कर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आत्मनिर्भरता लाने के लिए एक सन्त ने यह आन्दोलन शुरू किया है। उत्पादकों को उत्पादन-साधन सुलभ करा देना, इसका पहला कदम है। इसलिए हरएक को इसमें यथाशक्ति भाग लेना चाहिए।"

हल्याल के महिला-मण्डल को एक भेंट में विमला बहन ने सलाह दी कि "सफाई, भूदान-प्रचार, स्कूलों के गरीब छात्रों के कपड़े सी देना, उन्हें पुरानी किताबें सुलभ करा देना, इस तरह के अनेक समाज-सेवा के कामों के लिए महिलामण्डल आगे आयें, तभी वे सजीव कहे जा सकेंगे।"

विमला बहन ने कार्यकर्ताओं को हितोपदेश दिया कि 'वे एक-दूसरे के गुणों का महत्त्व पहचानें, परस्पर के दोष समझ कर झगड़े के मौके टालने का यत्न करें। इससे उनके बीच निश्चय ही प्रेम-भाव निर्माण होगा।' उन्होंने बताया : "कार्यकर्ता जब तक साधक नहीं बनते, 'चित्तशुद्ध्यर्थं कर्माणि' यह नहीं समझते और आत्मोन्नति के मार्ग की ओर ध्यान नहीं देते, तब तक उनमें पारिवारिक भावना पैदा नहीं हो सकती। हमें आज सर्वभूतों के प्रति नम्र और आत्मानात्म-विवेक करने वाले कार्यकर्ताओं की जरूरत है। उनके विचार सुस्पष्ट, सुनिश्चित और स्थिर होकर आचरण विचार की दिशा से ही थे। विचारक हो विचार-परिवर्तन और निर्मल हुआ व्यक्ति ही हृदय-परिवर्तन कर सकता है।

गत आठ साल से मेरा विमला बहन से परिचय रहा है। श्री भाऊ धर्माधिकारी ने उनका परिचय कराते हुए उन्हें 'महाश्वेता' कहा, तो यल्लूर की सभा में कहा कि वे धर्म-चक्र-प्रवर्तन का सन्देश देश के कोने-कोने तक पहुँचाने वाली 'संघमित्रा' है लेकिन मुझे तो उनके सहवास में महाश्वेता का अटूट प्रेम करने की सामर्थ्य सुजानपन और उत्कट संवेदनक्षमता की अनुभूति हुई। महाश्वेता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के अलौकिक, मानवीय गुणोत्कर्ष से सजा व्यक्तित्व विमला बहनजी ने आत्मसात्, कर लिया है। किन्तु संघमित्रा के त्याग, संयम और निर्भयता का भी अपने में समन्वय कर उन्होंने अपना अलग ही व्यक्तित्व बना लिया है। फलतः वे साधारण न होकर भी साधारण जनों को अपने निकट की मालूम पड़ती है। दौरे में एक बार उन्होंने बताया भी कि सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को साधारण जनों से पृथक् रहने का अट्टहास नहीं करना चाहिए। अपनी सालगिरह के दिन, रामनवमी को भी विमला बहन भोर में ३ बजे से १२॥ बजे तक कार्यव्यस्त पायी गयीं। दोपहर में उनका ठीक भोजन भी नहीं हो पाया। रात में तो खाती ही नहीं। सचमुच इस यात्रा की सर्वाधिक सुन्दरता और लाभ के प्रत्येक चिन्तन में मुझे नया आनन्द और नया अर्थ मिलता है।

गत डेढ़ साल में भूदान-यज्ञ-आन्दोलन का सन्दर्भ बदल गया है। उसे आज जागतिक महत्त्व प्राप्त होने जा रहा है। बांडुंग-परिषद् में सभी राष्ट्रों ने साम्राज्यवाद की घंटी बजा दी। हमारे प्रधानमन्त्री शान्ति का सन्देश लेकर इंग्लैण्ड और रूस की यात्रा कर आये। आज सभी राष्ट्र पंचशील और सहजीवन की भाषा बोलने लगे हैं। राष्ट्रीय महासभा भी 'समाजवादी समाज-रचना' का ध्येय उद्घाटित करने लगी है। सभी दल यह मान्य कर रहे हैं कि यह लोकतन्त्र की नींव ढालने का एवं मूल्य-परिवर्तन का उचित समय है। लोकतन्त्र की स्थापना के लिए जनतांत्रिक क्रांति स्वीकार करनी ही पड़ेगी। यह सारी जनता की सम्मति से होगी और इसमें हर एक शामिल होगा। भूदान आज की एक अपरिहार्य ऐतिहासिक आवश्यकता है। यह एक सीधा-सादा वैज्ञानिक व्यवहारवाद है। (मूल मराठी से संक्षेप)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री शंकरराव देव और बम्बई का द्विभाषिक राज्य

विमला

ता० ४ अगस्त १९५६ की घटना है। अखिल भारतीय सर्व-सेवा-संघ की प्रबंध-समिति की सभा में शामिल होने के लिए हम लोग धर्मपुरी पहुँचे। सुबह सेलम स्टेशन पर अखबार में खबर पढ़ी थीं कि बम्बई का द्विभाषिक राज्य बनने जा रहा है। दिल में एक-साल दो परस्पर विरोधी भावनाएँ उत्कट रूप से उठीं। प्रसन्नता की लहर उठी कि चलो, आखिर उचित निर्णय पर देश पहुँचा तो सही। विषाद जोर से चीख उठा—काश, यह सद्बुद्धि एक साल पहले ही होती, तो जो कीमत जन, धन और मानवीय प्रतिष्ठा के रूप में चुकानी पड़ी, वह हरगिज़ नहीं देनी पड़ती। महाराष्ट्र और गुजरात में परस्पर-भय तथा अविश्वास का जो ज़हर जनमानस में आज दिखायी देता है, उस ज़हर के प्राणघातक स्पर्श से तो हम बच पाते!

श्री शंकररावजी धर्मपुरी आये हुए थे। किसी काम से उनके पास मेरा जाना हुआ। मैंने सहज भाव से कहा—"दादा, देखिये तो अब द्विभाषिक राज्य बनने जा रहा है।" श्री शंकररावजी ने मुस्कराते हुए पूछा—"तो क्या बिगड़ा?"

मैं—"बिगड़ा तो कुछ नहीं। लेकिन पहले ही बन जाता, तो अच्छा होता न! तब खालिस आनन्द की लहरें उठतीं। अब आनन्द और विषाद एक-दूसरे में इस प्रकार मिल गये हैं कि दोनों एक-दूसरे को काट देते हैं।"

शंकररावजी—"मैं तो बहुत खुश हूँ। तुमको भी खुश होना चाहिए।"

मैं—जी! होना तो चाहिए, यह मानती हूँ। परन्तु इतनी सारी कड़ुवाहट पैदा हुई, कितने बरबाद हुए, कितनों की मृत्यु हुई?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शंकरराव—,'इन सबके कारण उचित निर्णय की कीमत घटती नहीं है। और कड़ुवाहट है कहाँ ? जनता की बात मत कहो। हमें अपनी बात सोचनी चाहिए। मेरे दिल में कोई कड़ुवाहट नहीं। तुम्हारे दिल में यदि है, तो उसका एक ही कारण हो सकता है। ट्रायंफ (Triumph) ऑफ ट्रुथ में सत्य की विजय में जितनी गहरी श्रद्धा होनी चाहिए, उतनी नहीं है। सत्य की विजय में गहरी श्रद्धा होती, तो आज तुम्हारा हृदय भी मेरे हृदय जैसा प्रसन्नता से खिल उठता और कहता कि सत्य की विजय हुई—सत्य की विजय हुई।

"भूला-भटका लड़का जब लौटता है, तो पिता समस्त प्राणों से उसका स्वागत करता है। पिता लड़के के अपराधों को गिना-गिना कर यह रट नहीं लगाता कि 'हाँ, आ तो गये हो, लेकिन यह और वह करने के बाद ! कितने प्रकार के दुर्व्यवहार के बाद लौटे हो ? तस्मात् मैं खुले दिल से तुम्हारा स्वागत नहीं कर सकता।' पिता हो या माता हो, बेटे के दोषों का उन्हें स्मरण तक नहीं रहता। समाज उस लड़के के गुण-दोषों की चर्चा करते हुए उसका निषेध कर सकता है, लेकिन माँ के लिए तो वह बेटा ही है।

"सत्याग्रही की भूमिका प्रेम की भूमिका है। मानवमात्र के लिए एकात्मता का अनुभव सत्याग्रही करता है। उसको करना चाहिए। इसीलिए कहता हूँ कि मैं शान्त हूँ, प्रसन्न हूँ। द्विभाषिक राज्य बनेगा, तो सच्चे हृदय से उसका स्वागत करूँगा।"

स्पष्ट है कि 'सत्य की विजय' से श्री शंकररावजी का अभिप्राय उस योजना से है, जो गुजरात-महाराष्ट्र के लिए उभय-कल्याणकारी होते हुए, समूचे राष्ट्र के लिए भी हितकर है। १२-८-५६

(भूदानयज्ञ २४-८-५६)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'श्रमभारती' के साधकों के बीच

: १ :

—विमला

लगभग डेढ़ साल से खादीग्राम जाने का सोच रही थी। कई बार धीरेनदा और राममूर्तिजी की ओर से बुलाहट हुई थी। मेरी अपनी इच्छा तो थी ही। लेकिन किसी-नकिसी कारण से जाना हो नहीं पाता था। अब की बार संयोग आया। ता० २६ अगस्त को दादा के साथ रवाना हो गयी। साथ में समन्वयाश्रम, बोधगया के श्री सुरेन्द्रजी थे। श्री गौतम बजाज और कस्तूरीबहन भी साथ थी।

जब-जब धीरेनदा से भेंट होती है, हम लोग धीरेनदा के मूलोद्योग में सहर्ष शामिल होते हैं। उनका मूलोद्योग है—"गप करना!"

घटना बहुत पुरानी है। शायद १९४५-४६ की होगी। जेल से छूटने के बाद काँग्रेस के नेता और प्रमुख कार्यकर्ता सेवाग्राम में इकट्ठे हुए थे। वहाँ कोई सुनिश्चित या संयोजित कार्यक्रम तो थ नहीं। आपस में गप-शप करते रहना ही मुख्य कार्यक्रम था और ऐसे मधुर कार्यक्रम के लिए स्थान चुना गया था—आशादीदी का घर। आशादीदी की आतिथ्यशीलता मशहूर है। जिस सहज मधुर भाव से वे आगतों के स्वागत एवं आतिथ्य में जुट जाती हैं, वह एक अनोखी चीज है। तो, उनके घर पर जमघट जमता था। जब धीरेनदा जेल से निकले और सेवाग्राम पहुँचे, तो सुबह के नाश्ते के लिए आशादीदी के घर जाने का उपक्रम शुरू हुआ। एक दिन बात चल पड़ी—मूलोद्योग की। किसका कौनसा मूलोद्योग है और वह क्यों है, इसकी गरमागरम बहस चल रही थी। धीरेनदा की बारी आयी, तो कहने लगे—"मेरा मूलोद्योग है, गप करना!" सब खिलखिला कर हँस पड़े।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उस दिन से आज तक उनका गप द्वारा विचारों के आदान-प्रदान का और शिक्षण देने का कार्यक्रम अव्याहत चलता आया है। सन् १९५३ से अनेक बार धीरेनदा के साथ घण्टों बातचीत करने का मौका आया। एक तो बातचीत में औपचारिकता का पर्दा अनायास हट जाता है। दिल खोल कर हरेक व्यक्ति बोलता है। मान-अपमान, श्रेष्ठ-कनिष्ठ, छोटा-बड़ा; ये भाव जाने कहाँ गायब हो जाते हैं। और फिर उस उन्मुक्त वातावरण में धीरेनदा के मुख से मौलिक विचार, जीवंत अनुभूतियाँ एवं संस्मरणों के फब्बारे छूटते रहते हैं। जीवन में से सीधे ज्ञान-विज्ञान का मधु पीने की सिफत् रखने वाले बिरले भाग्यशालियों में से धीरेनदा एक हैं। शायद ही किसी ने उनको ग्रंथ पढ़ते हुए देखा हो। सम्पर्क में आने वाले हर व्यक्ति के साथ उन्मुक्त हृदय से मिलना, वार्तालाप करना, उसके विचार, अनुभव आदि का भक्ति से श्रवण करना, यह उनका ज्ञानप्राप्ति का एक मार्ग दीखता है और भिन्न-भिन्न प्रयोग करते रहना तथा उन प्रयोगों में से ज्ञानप्राप्ति करना, यह शायद दूसरा मार्ग हो। मनन और चिन्तन शायद तीसरा मार्ग है। खैर, आज उन सारी बातों की गहराई में जाने की हमें जरूरत नहीं है। चार दिन खादीग्राम में रह कर, गपशप करते हुए श्रम-भारती के साधकों से परिचय पाने के इरादे से हम लोग ता० २७ अगस्त को सबेरे केन्द्र में पहुँचे।

मिहनत कर इनसान बने हम !

श्रमभारती में पहुँचने पर पहले पहल जिस चीज की छाप हृदय पर पड़ती है, वह चीज है—श्रमदेवी की उपासना का प्रशान्त, उदात्त वायुमण्डल। केन्द्र के नजदीक पहुँचने पर सड़क के दाहिने एक छोटी-सी इमारत नज़र आयी। बतलाया गया कि वह 'बाल-मन्दिर' है। छोटे-छोटे बालक अपने नन्हें हाथों से वहाँ श्रम-भारती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की पूजा करते हैं। कुदाली-फावड़े लेकर बगीचे में काम करना, चक्की चलाना, नाश्ता बनाना इत्यादि सारे काम नन्हें-मुन्ने चह-चहाट के साथ करते रहते हैं। दायीं तरफ बड़े लड़कों का छात्रावास दिखायी दिया। ज़रा आगे बढ़ने पर लड़कियों के छात्रावास पर नज़र पड़ी। फिर दिखायी दिये परिवारों के छोटे-छोटे मकान। बालिकाएँ, किशोरियाँ, युवतियाँ, बालक, किशोर, युवक—सभी सुबह से शाम तक श्रमोपासना में लगे रहते हैं। खेती के विविध काम, गो-सेवा, पाखाने पेशाब घर आदि की सफाई, रसोई इत्यादि कामों में लोग मशगूल रहते हैं। ये काम करने मे कोई वैशिष्ट्य है, सो बात नहीं। लेकिन जिस वृत्ति को हृदय में रख कर तथा जिस लक्ष्य को सामने रख कर श्रमोपासना की जाती है, वह लक्ष्य और वह वृत्ति श्रमभारती की खासियत है। उनका लक्ष्य है, श्रमाधारित जीवन। मनुष्य को अपने लिए अन्न-वस्त्र के उत्पादन का पुरुषार्थ करना चाहिए। शोषणमुक्त समाज की नींव है—पुरुषार्थी, स्वावलम्बी, स्वाश्रयी व्यक्ति। आज हम शोषणमुक्त समाज बनाने का लक्ष्य सामने रखते हैं। कहते हैं कि स्वतन्त्रता, समता और बन्धुभाव; ये मानवीय जीवन के प्राणतत्त्व हैं। हमारा दावा है कि लोकतंत्र में हर व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, तथा बौद्धिक विकास का, अर्थात् सांस्कृतिक विकास का पूरा मौका मिलेगा। लेकिन 'समता' और 'समान अवसर' का जप करने से तो साम्ययोगी समाज का निर्माण नहीं होगा। अहिंसक क्रान्ति में हर व्यक्ति को—"मैं निजी जीवन में किसी का शोषण नहीं करूँगा" ऐसा संकल्प करना पड़ेगा। अपने लिए दूसरे व्यक्ति को उत्पादक परि-श्रम करना पड़े और हम उस व्यक्ति के परिश्रम का प्रतिमूल्य पैसे के रूप में देकर समाधान मानते रहें, परिश्रमहीन जीवन में कृता-र्थता मानते रहें, यह अमानुषता है। इस व्यवहार के कारण क्रान्ति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को हम अपने हाथों रोकते हैं, ऐसी उन साधकों की मान्यता है। इसलिए वे श्रमनिष्ठ जीवन की नहीं, बल्कि श्रमियों के जीवन की साधना कर रहे हैं। भक्त का उपासना-प्रेम और बुद्धि में क्रान्ति की निष्ठा का लक्ष्य सामने रख कर श्रमभारती के साधक प्रतिदिन सुबह प्रार्थना में गाते हैं—"मिहनत कर इन्सान बनें हम।"

श्रममय कला और कलामय श्रम

श्रमाधारित जीवन की साधना, भूदानमूलक क्रान्ति का अगला कदम किस प्रकार रहेगा, इस विषय पर चर्चा चल रही थी। एक बात ध्यान में आयी कि आगे चल कर सारी श्रमसाधना कहीं जड़ कर्मकाण्ड का रूप तो धारण नहीं करेगी ? यह विचार धीरेनदा को काफी चिन्तित बनाता है। आज जिस ताज़गी के साथ साधक श्रमोपासना में लगे हुए हैं, वह ताज़गी साधकों में कैसे बनी रहेगी, इसका चिन्तन वे रातदिन करते हैं। चिन्तन से धीरेनदा इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि विचारयुक्त परिश्रम की शक्ति साधकों में उत्पन्न होनी चाहिए। हर रोज कम-से-कम दो घण्टे का समय हर साधक को स्वाध्याय-चिन्तन में बिताना चाहिए। शायद इस दिशा में आचार्य राममूर्तिजी ने प्रयत्न शुरू भी कर दिया है।

धीरेनदा ने दूसरी एक महत्त्वपूर्ण बात कही। यदि श्रम में कला हो, याने कलामय परिश्रम किया जाय, तो उससे जड़ता पैदा होने की संभावना कम होगी। परिश्रम में से Drudgery कम करते चले जायेंगे, तो साधक की अभिरुचि श्रम में बनी रहने की संभावना बढ़ती चली जायेगी। Drudgery घटाने के लिए उपकरणों में सुधार करना होगा। उपकरण कुशल, सुन्दर और कार्यक्षम बनाये जायँ, यह एक तरीका हुआ। श्रम करने की पद्धति में कला उंडेली जाय, यह दूसरा तरीका हुआ। मानव-मात्र में कला और सौंदर्य के प्रति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वाभाविक अनुराग रहता है। उस अनुराग से लाभ उठा कर उनमें उचित जीवन-दृष्टि जगायी जाय, तो कलामय श्रम के लक्ष्य तक पहुँच सकेंगे। धीरेनदा को श्रमोपासना के इस सांस्कृतिक पहलू पर सोचते हुए देख कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। वे कहने लगे : "जीवन कलामय बनना चाहिए। जीविका के लिए आठ-आठ घंटे निरी मशक्कत करना और फिर आनन्द-प्राप्ति के लिए किसी एक कमरे में या विशिष्ट स्थान में बैठ कर कला की उपासना करना तो शुद्ध अरसिकता है। यह स्थान विद्या की उपासना का, यह कमरा कला की उपासना का और यह समय सिर्फ परिश्रम का, इस प्रकार जीवन के खंड-खंड करना मूर्खता है। जीने का प्रयास कलामय होगा, तभी मनुष्य का, मनुष्यमात्र का सांस्कृतिक विकास होगा। Struggle for life should become the medium for cultural development. Otherwise your slogan for equal opportunity will become a myth.

"जीविका कलामय बनाने के लिए (१) उद्योगों के साथ शिक्षण, (२) उद्योग द्वारा शिक्षण, इन दो अवस्थाओं को पार करके, (३) उद्योग ही शिक्षण है, इस अवस्था में प्रवेश करना पड़ेगा। फिर हर घर में उद्योग, शिक्षण, कला इत्यादि सब देवताओं की उपासना सहज ही होती रहेगी।"

उनके इस निवेदन पर मैंने एक प्रश्न उठाया। मैंने कहा कि फिर तो वही पुरानी जाति-प्रथा एक नया रूप धारण करके समाज में प्रचलित होगी। हर बालक अपने पिता का उद्योग सीखेगा, क्योंकि वह कम-से-कम कष्ट में सीख सकेगा। और दूसरा प्रश्न यह था कि उद्योग के साथ कलोपासना को जोड़ने से एक हद तक ही कला का विकास हम कर पायेंगे, क्योंकि कलोपासना एक व्यक्तिगत कला है। एकान्त में बैठ कर कठोर साधना द्वारा ही उसमें पटुता प्राप्त की जा सकती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धीरेनदा ठहाका मार कर हँस पड़े—जैसे कि उनकी आदत है। कहने लगे "आगे आने वाले समाज में कोई भी परिवार Single craft परिवार नहीं रह सकेगा। एक परिवार में एक ही उद्योग रह सके, ऐसी परिस्थिति अब नहीं रही। हर परिवार को कृषि और कताई अनिवार्य रूप से करनी पड़ेगी। इसलिए हर एक लड़का खेती-कताई सीखेगा। इसके अलावा किसी विशिष्ट विषय की अभिरुचि उसमें होगी, तो लोगों के ध्यान में वह बात आ ही जायेगी। तब खास अध्ययन के लिए उसको समय दिया जायेगा। देखो न, यहाँ कुछ लड़कों को अम्बर चरखे से विशेष प्रेम है। उसमें वे खास दिलचस्पी रखते हैं। हमारा यह प्रयास रहता है कि उन लड़कों को खेल में कम समय देना पड़े और अम्बर चरखे में विशेषता प्राप्त करने के लिए अधिक समय मिल सके। समाज भी खूबी से ऐसे विशिष्ट असामान्य व्यक्तियों के लिए सुविधाएँ देता रहेगा। लेकिन समाज-रचना असामान्य व्यक्तियों को सामने रख कर नहीं की जाती और न कोई वैसी कर भी सकेगा। गौतम बुद्ध और महाप्रभु चैतन्य को सामने रख कर कौन राजनीतिक व्यवस्था कर सकेगा? आइन्स्टीन और रवीन्द्रनाथ ठाकुर को सामने रख कर तो कोई समाज-रचना नहीं कर सकता है। लेकिन रवीन्द्रनाथ ठाकुर की उपेक्षा मानवी समाज नहीं करेगा, यह आज तक का इतिहास बतलाता है। तात्पर्य, कोई भी कलाकार श्रमहीन जीवन व्यतीत नहीं कर पायेगा। श्रमोपासना कलामय होगी और कलोपासना श्रममय होगी।"

[भूदानयज्ञ ७-९-'५६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'श्रमभारती' के साधकों के बीच

: २ :

—विमला

ता० २६ अगस्त को जब हम काशी से रवाना हुए थे, तो श्री मोरारजीभाई देसाई के उपवास का आठवाँ दिन था। गाड़ी में चढ़ते समय खबर मिली थी कि श्री मोरारजीभाई २६ की शाम को आम सभा के बाद उपवास समाप्त करने वाले है। अहमदाबाद में जो घटनाएँ घटी थीं, उनका गहरा परिणाम दादा के चित्त पर हुआ था। श्री मोरारजीभाई के उपवाससे तो मानों उनके समस्त अन्तस्तल में उथल-पुथल मच गयी थी। २७ अगस्त का दिन बीत गया। हम लोग अखबार की दुनिया से दूर थे। उपवास समाप्त हुआ या नहीं, आम सभा शांतिपूर्ण रीति से हो सकी या नहीं, आदि विचार सताते रहे। शाम को जब धीरेनदा के साथ हम घूमने जा रहे थे, तो मैंने अहमदाबाद-कांड की एवं उपवास की बात छेड़ी। धीरेनदा कहने लगे, "श्री मोरारजीभाई के उपवास की खबर सुन कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। भारत में लोकशाही एक नये ढंग से विकसित हो रही है। एक प्रदेश का मुख्य मंत्री किसी प्रश्न का समाधान करने के लिए उपवास करने की सोचे, यह घटना इस देश में ही घट सकती थी। लड़खड़ाते कदमों से, अपने-अपने दृष्टिकोण से सब लोग लोक-तन्त्र का विकास करने में प्रयत्नशील हैं। इसलिए मैंने खबर मिलते ही एक बधाई का तार श्री मोरारजीभाई के पास भेजा था।"

पौरुषहीन क्रोध

अहमदाबाद-कांड पर बोलते हुए धीरेनदा ने कहा : "बम्बई या अहमदाबाद में जो प्रकार हुए या देश के अन्य प्रदेशों में भी जो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घटनाएँ घटीं, उनका यह अर्थ नहीं है कि इस देश में हिंसा बढ़ रहा है। उसके यह भी मानी नहीं है कि अहिंसा पर स्थूल प्रहार हो रहा है। आज इंग्लैंड या अमरीका में हिंसा के प्रति जो निष्ठा है, हिंसा के लिए जनमानस में जो मान्यता है, उससे इस देश में अधिक मान्यता है, यह मानना गलत होगा। इन प्रकारों में दो चीजें शामिल हैं। एक है Manifestation of Impotent Rage याने पौरुषहीन क्रोध की अभिव्यक्ति। क्रोध से विधायक कार्य की प्रेरणा तो प्रायः होती ही नहीं। शायद वीरों के क्रोध में कल्याण-शक्ति रहती हो। लेकिन ये जो लूटपाट, जलाना, ढेले फेंकना इत्यादि प्रकार चलते हैं, ये वीरों के क्रोध में से स्फूर्त घटनाएँ नहीं हैं। कल फौज के सिपाही आपस में मारपीट करें या गोली चलावें, तो उससे यह नहीं कहा जा सकेगा कि हिंसा-निष्ठा बढ़ रही है। कहा जायेगा कि 'शुद्ध अविवेक के कारण सिपाही आपस में लड़ रहे हैं। वैसे ही नागरिकों की आपस में मारपीट, एक प्रदेश के नागरिकों का दूसरे प्रदेश के नागरिकों के बारे में अविश्वास, भय या ईर्ष्या और जनता का सरकार के निर्णयों से असन्तुष्ट होकर सार्वजनिक सम्पत्ति नष्ट करना एवं यत्रतत्र अशांति निर्माण करना आदि सब प्रकार 'शुद्ध अविवेक' के निदर्शक हैं। एक-दूसरे की शक्ति को काटने के प्रयास में सब मिल कर सबकी याने देश की शक्ति क्षीण कर रहे हैं।

"किसी घटना का विरोध करना हो या प्रतिकार करना हो, तो वह अवश्य किया जाय। लेकिन जनशक्ति का उसमें नाश नहीं होगा, देश की सम्पत्ति का विनाश नहीं होगा तथा देश के नागरिकों में भेदभाव नहीं बढ़ेगा, इस ढंग से वह किया जाना चाहिए।"

आज हम प्रभावहीन हैं !

२८ अगस्त को हमें अखबार पढ़ने को मिला। ता० २६ अगस्त की आम सभा में अहमदाबाद में फिर से हुल्लड़बाजी करने की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोशिश की गयी। सभा के बाद ढेले फेंकना, मोटरें तोड़ना, सार्वजनिक सम्पत्ति बरबाद करना आदि प्रकार दोहराये गये। पुलिस द्वारा गोली चलायी गयी। एक की मृत्यु हुई। अनेक घायल हुए। यह पढ़ कर हृदय में टीस उठी। वेदना से एक बारगी प्राण व्याकुल हो गये। एक तरफ से गुण्डों के, आतंकवादियों के अत्याचार और दूसरी तरफ से पुलिस तथा फौज के द्वारा गोलाबारी, इनके बीच निरीह जनता बुरी तरह से पिस रही है। नागरिक जीवन, सभ्य जीवन लुप्तप्राय हो रहा है।

ऐसे समय सर्वोदय में निष्ठा रखने वाले व्यक्ति क्या करें? क्या असहाय प्रेक्षक बन कर वे सिर्फ दुःख व्यक्त करते रहें या भीतर ही भीतर छटपटाते रहें? भूदान-मूलक क्रांति के आन्दोलन में जो सैकडों व्यक्ति आज काम कर रहे हैं, वे और विधायक कार्य करते हुए अहिंसक समाज के निर्माण का प्रयत्न करने वाले जो सैकड़ों व्यक्ति इस देश में बिखरे पड़े हैं, वे मिल कर क्या इस परिस्थिति का कोई मुकाबला नहीं कर सकेंगे? कोई उपाय नहीं खोज पायेंगे? आज ही यह भीषण परिस्थिति है, तो चुनाव के दिनों में जाने इस देश में कौन-सौन से उपद्रव खड़े होंगे?

ये सारे विचार बादलों की भाँति उमड़-घुमड़ रहे थे। धीरेनदा हमारी झोपड़ी में आकर आसन पर बैठे ही थे मैंने एक एक प्रश्न उनके सामने पेश करना शुरू किया।

प्रश्न सुनते समय ही धीरेनदा का चेहरा अंतःपीड़ा से क्षण भर के लिए विवर्ण हो उठा। लेकिन क्षणार्ध में वेदना भरी मुस्कराहट में वे कहने लगे :

"तुम्हारी वेदना मैं समझ सकता हूँ। लेकिन एक कठोर सत्य का मुकाबला हमें करना पड़ेगा, यह मत भूलो। आज हम प्रभावहीन हैं। शक्तिहीन हैं। जिस परिस्थिति का प्रतिकार करना है,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसके प्रतिकार की शक्ति सिर्फ अहिंसा की साधना में से पैदा हो सकती है। वह प्राणवान् साधना हमने कब की है ? बोलो। बापू के जमाने में परायी सत्ता से लड़ने के लिए सब एक हो गये थे। लेकिन सत्य और अहिंसा की साधना हम सबने नाममात्र को ही की थी। यह बापू की विभूति का ही प्रभाव था, जो हम आजादी की राह पर जैसे-तैसे पहुँच गये। अब आया है विनोबा का जमाना। इस जमाने में देश की आध्यात्मिक दान-प्रवृत्ति से तथा बापू की संचित जन-शक्ति से लाभ उठा कर विनोबा ने कदम बढ़ाये। अपनी तपस्या के बल से भी उन्होंने इन प्रयत्नों को ओत-प्रोत कर दिया। जो कुछ सफलता इस आंदोलन में गत ५ वर्षों में मिली है, वह तो संचित-निधि का, Bank Balance का फल मात्र है।

"यदि तुम लोग समझते हो कि हम अहिंसा की कोई नयी शक्ति पैदा कर सके हैं, तो वह एक भ्रम है। हिंसा का मुकाबला करने के लिए जिस तेजस्वी अहिंसा-शक्ति की आवश्यकता है, वह हमें अभी प्राप्त करनी है !

दूसरी बात यह है कि बापू के जमाने में गुलामी से मुक्त होने की आकांक्षा इस देश मे सार्वत्रिक थी। सरकारी नौकरी करने वालों के दिल में भी आजादी की तमन्ना सुलगती रहती थी लेकिन आज ? आज हम शोषण-मुक्त समाज की आकांक्षा हरेक के हृदय में कहाँ पाते हैं ? जिसके हृदय में धन कमाने का लालच रात-दिन घेरा डाल कर बैठा हो, वह हमारा साथ किस मुँह से देगा ? संग्रह की अभिलाषा जिसके हृदय में धधकती हो, वह हमारा साथ किस प्रकार दे सकता है ? हम शासन-मुक्त समाज की बात करते हैं, लेकिन वह आकांक्षा भी सार्वत्रिक नहीं है। जिस-तिसके हृदय में सत्तानिष्ठा है। जो भीतर ही भीतर शक्ति की, सत्ता की पूजा करता हो, वह हमारा साथ तो नहीं दे सकेगा। आज लोगों की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जिस अर्थशास्त्र में, राज्यशास्त्र में श्रद्धा है, उस अर्थशास्त्र को एवं राज्यशास्त्र को खतम करने हम निकले हैं। दुनिया राज्यशक्ति की पूजा करती है। हम जनशक्ति के उपासक हैं। दुनिया धनदौलत की कायल है। हम श्रम-भारती की उपासना करने चले हैं। इसलिए एक बात याद रखो—हम संसार के अधिकतर विचार-प्रवाहों की विरोधी दिशा में जाने का प्रयत्न कर रहे हैं। उन प्रयत्नों में उत्कट एकाग्रता के साथ दत्तचित्त हो जाना ही अहिंसा की शक्ति विकसित करने का एकमेव उपाय है। आज अहमदाबाद या बम्बई में हम कुछ नहीं कर सकेंगे। लेकिन भूदानमूलक क्रान्ति की ज्योति इस देश में हम प्रज्वलित रख सकेंगे, यदि चारों ओर से हमें घेरने वाले अन्याय-अत्याचारों के तूफान में हमारी अहिंसानिष्ठा कायम रहेगी और विधायक जनशक्ति विकसित करने के प्रयत्नों में हम अडिग रहेंगे, तो वह दिन बहुत शीघ्र आयेगा, जब निर्दलित और मृतप्राय जनता फिर एक बार अहिंसा के बल पर निर्भय होकर माथा ऊँचा करके खड़ी होगी। आत्मविश्वास की रोशनी से उसकी आँखें दमक उठेंगी। तब उस जागृत जनता के आत्मसम्मान के संरक्षण में किसी 'सेवक' वर्ग को तत्पर नहीं रहना पड़ेगा। जनता की जागृति ही उसका दिव्य कवच बन कर उसे नित्य संरक्षण प्रदान करती रहेगी।"

उनकी पोथी में चरखा-चक्की नहीं है

किसी देहाती सज्जन से धीरेनदा बातचीत कर रहे थे। सज्जन ने कहा—"देश की पंचवर्षीय योजना में ग्रामोद्योगों को मूलभूत आधार नहीं माना गया। बड़े-बड़े उद्योगों को बढ़ाने की बात है और आप चरखा-चक्की, करघा-कोल्हू की बात करते हैं।"

धीरेनदा—"सुनो! पुराने जमाने में ब्राह्मणों से, पुरोहितों से या शास्त्रियों से कोई सवाल पूछा जाता था, तो वे अपनी-अपनी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पोथियाँ खोल कर देखते थे कि उन पोथियों में क्या लिखा हुआ है। जो पोथी में लिखा होगा वही बतलाते थे। स्वतन्त्र बुद्धि से पोथी के बाहर की बात करने का साहस तक वे करते नहीं थे। आज वैसी ही हालत बड़े-बड़े अर्थशास्त्रज्ञों की तथा राजनीतिज्ञों की हो गयी है। संयोजन करना है, तो वे अर्थशास्त्र की और राज्यशास्त्र की पोथियाँ खोलकर बैठ जाते हैं। उन पोथियों से प्रामाणिक रहना, उनके साथ ईमान रखना, वे अपने परम पवित्र कर्तव्य समझते हैं।

तो भाई, पोथी में लिखा हुआ एक शब्द उनको मिला। वह शब्द है Cottage Industries—गृहोद्योग। बस, गृहोद्योग-गृहोद्योग की रट सारे देश में लगायी जाती है। लेकिन गृहोद्योग से कहीं यह न समझ बैठना कि वे चरखा-करघा, चक्की या कोल्हू की बात कर रहे हैं। उनकी पोथी में चरखा-चक्की है ही नहीं। तो वे क्या करें? उसमें उनका भला क्या दोष है? इसलिए वे लोग कहते हैं—देहातों में कालीन बनाये जायेंगे, गुलदस्ते बनाये जायेंगे, पंखे बनाये जायेंगे और दुनिया भर की दूसरी चीजें बनेंगी। हाँ, साहब! बनेंगे कालीन। और वे वहाँ बिछेंगे? किसान की झोपड़ियों में? गुलदस्ते रखे कहाँ जायेंगे? गरीब श्रमिक की कुटिया में? उसको तो इन चीजों से कोई मतलब नहीं, वह तो मिहनत करके अपने लिए तथा शहर के बाबू लोगों के लिए अनाज और कपड़ा पैदा करता रहेगा। ये कालीन बिछेंगे शहर के सुशिक्षितों और श्रीमानों के दीवानखानों में। गुलदस्ते रखे जायेंगे, उनके हवादार कमरों में।

"नहीं भाई, जिन चरखों-करघों की बात हम करते हैं, वे ही किसान के सच्चे सहायक बन सकते हैं। खेती करते हुए अपनी स्त्री और बाल-बच्चों के साथ उन सीधे-सादे औजारों से आप काम ले सकेंगे। जब खेती में काम नहीं रहता, तो काम ढूँढ़ने के लिए गाँव छोड़ कर आपको कहीं बाहर जाना नहीं पड़ेगा। घर बैठे-बैठे आपको उद्योग प्राप्त होगा।" [भूदानयज्ञ १४-९-५६]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिखरे हुए मोती

(विमला)

सहज वार्तालाप से मौलिक उपदेश करते रहना संतों का स्वभाव है, बल्कि वे उपदेश नहीं करते हैं। हितोपदेश करने की भावना के लिए संतों के जीवन में शायद ही स्थान रहता होगा। उनके वार्तालाप से साथ रहने वालों को तो अनायास ही मौलिक विचारों के बिखरे हुए मोती मिल जाते हैं।

मुक्तात्माओं का अवतारकार्य

पिछले दिनों विनोबाजी के साथ हम लोग पैदल जा रहे थे। श्रीरबिन्द की 'सावित्री' तथा उनके अवतारवाद के बारे में जो बातें विनोबाजी ने कही थीं, वे सभी बातें कानों में गूँज रही थीं। मैंने कहा :

"हिन्दू धर्म में जो अवतार-दर्शन पाया जाता है, उससे श्री अरबिन्द का अवतार-दर्शन बिलकुल न्यारा है न ?"

विनोबा : "हाँ, हिन्दू धर्म में ईश्वर के अवतार लेने का एक स्वतन्त्र विषय है। अब ईश्वर अवतार लेता है या नहीं, यह भी एक विचारणीय विषय है। लेकिन श्रीअरविन्द के अवतार-दर्शन में तो मुक्तात्माओं के अवतार-कार्य की बात आती है। तुमको याद है?— 'यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम'। अरे, उस परमधाम में निवृत्ति के लिए गुंजाइश ही नहीं है। वहाँ तो सारी प्रवृत्ति ही प्रवृत्ति है। सूर्य में जो लीन हो गया, उसके लिए अंधकार का अस्तित्व ही कहाँ रहा ? वह तो स्वयं प्रकाशमय बन गया। उसी प्रकार मुक्ति के बाद नित्य प्रवृत्ति ही प्रवृत्ति है। लेकिन यह प्रवृत्ति तुम्हारे प्रवृत्ति-निवृत्ति के द्वन्द्व से परे की चीज है।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विनोबाजी ने सहज भाव से 'न निवर्तन्ते' का एक अनोखा अर्थ चिन्तन के लिए हमारे सामने खोल कर रख दिया।

"यदि मंत्र से वैरी मरता हो...."

श्री ज्ञानेश्वर महाराज के "ज्ञानेश्वरी" नामक ग्रन्थ में एक जगह लिखा गया है—

"यदि मंत्र से वैरी मरता हो, तो कमर में करौली बाँध कर घूमने की क्या जरूरत है ? यदि दूध-शक्कर खाने से बीमारी हटती हो, तो कड़ुआ नीम कौन खायेगा ?"

इसका ज़िक्र करते हुए एक दिन विनोबाजी ने कहा—"मंत्र से वैरी को मारने की कल्पना कितनी भयावनी है ! श्री ज्ञानेश्वर की भूमिका से एकदम विसंवादी है वह। इसके अलावा, एक चरण में दूध-शक्कर से बीमारी मिटाने की मधुर कल्पना और दूसरे चरण में मंत्र से वैरी मारने की निर्मम कल्पना कैसे रखी जा सकती है ? 'मंत्र से' ('मंत्रें'-मूल मराठी में) की जगह 'मैत्री से' (मैत्रें) यह शब्द-प्रयोग रखने से श्री ज्ञानेश्वर का मूल अभिप्राय उचित ढंग से अभिव्यक्त होगा।

ज्ञानेश्वरी में पतिव्रता-धर्म

"ज्ञानेश्वरी" में दूसरे एक स्थान पर कहा गया है : "जो स्त्री पति के मत का अनुसरण करेगी, वही स्त्री पतिव्रता कहलायेगी।"

इसका ज़िक्र करते हुए विनाबाजी ने कहा, "यदि पति शराबी हो, दुर्व्यसनी हो या दुराचारी हो, तो पत्नी क्या करे ? क्या ऐसे पति के 'मत' का अनुसरण करना भी पतिव्रता-धर्म के लिए लाजिमी है ? 'पति के मत का अनुसरण' (पतीचिया मता) की जगह 'पति के व्रत का अनुसरण' (पतीचिया व्रता) ऐसा शब्द-प्रयोग ही श्री ज्ञानेश्वर को अधिक संमत होगा।"

[भूदान-यज्ञ, १४ सितम्बर, ५६]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रान्तियज्ञ में बाल-गोपालों की दिव्य लीलाएँ !

(विमला बहन)

सामूहिक सघन पदयात्रा-समाप्ति के समारोह के लिए मुझे छिंदवाड़ा बुलाया गया था। हमारे एक नवयुवक अनुभवी साथी श्री 'मानव' जी पर पदयात्रा-संचालन का भार था। मानवजी ता० १९ को मुझे शिविर में ले गये। एक घासफूस से बनाये हुए मामूली शामियाने में पदयात्री बैठे थे। व्यासपीठ पर बैठते ही पदयात्रियों को देख कर मैं अवाक् रह गयी। आँखें मल कर फिर देखा और फिर हैरान हुई। क्योंकि मेरे सामने जो ९० पदयात्री बैठे थे, वे सबके सब बालक थे ! १८ साल की उम्र से अधिक उम्र का शायद ही कोई हो। १२ साल की उम्र से १८ साल की उम्र तक के ९० बच्चे मेरे सामने शान से सीना तान कर बैठे थे !

दूसरी तरफ छिंदवाड़ा के विभिन्न हाईस्कूलों के लगभग ३०० छात्र एवं अध्यापक बैठे थे। अध्यापिकाएँ और लगभग ५० छात्राएँ भी बैठी थीं। मैंने मानवजी को, जो पदयात्रियों के अगुआ हैं और जिनकी भी उम्र मुश्किल से २५-२६ होगी, पूछा—"क्यों ये लड़के ही पदयात्रा में गये थे ? इनके साथ कोई प्रौढ़ नागरिक नहीं थे ? एक सप्ताह तक ये लड़के ही तहसील में घूमते रहे ?" जवाब मिला—"हाँ, लड़के ही घूमते रहे ! छिंदवाड़ा के नागरिकों में से कोई भी सहयोग देने या पदयात्रा के लिए तैयार नहीं थे। ९० लड़के लगभग ३० टोलियों में बँटे थे।"

इनमें हिन्दू, सिख, मुसलमान सभी धर्मों के एवं जातियों के बालक हैं। पदयात्रियों के टोली-नायकों ने अपने-अपने जो रोमहर्षक अनुभव सुनाये, वे सुनते समय कभी व्यथा से हृदय आक्रोश करता,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कभी कौतुक से हृदय उछल पड़ता; कभी आनन्द से दिल रो उठता, तो कभी विषाद से दिल बैठ जाता।

एक १३ साल का सिख लड़का खड़ा हुआ। टोली-नायक था। हाफ-शर्ट और हाफ-पैण्ट पहने हुए, पगड़ी बाँधे वह बाल-वीर मेरे पास आकर खड़ा हुआ। चेहरा थकान से सूखा हुआ, आँखों में दुख की छाया थी। आवाज में रूठे हुए दिल का दर्द था। कहने लगा—"हम क्रान्तिकार्य के लिए निकले लेकिन, हमको किसी ने टोका नहीं किया, माला तक नहीं पहनायी। गाँवों में दो दिन तक खाने को नहीं मिला। कभी दस, कभी चौदह मील हम चले। हमने साहित्य बेचा, भू-दान-गीत गाये, विचार समझाया। लेकिन सन्त विनोबा का काम ठीक से नहीं कर पाये, क्योंकि सात दिनों में हमें सात एकड़ ही जमीन मिली। इतना कह कर वह लड़का बिलख-बिलख कर रोने लगा।

मुझसे रहा नहीं गया। उठकर उस लड़के को मैंने गले लगा लिया उसके पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा—"मेरे भाई, तुमने बहुत बड़ी सेवा की है। सन्त विनोबा तुमसे बहुत प्रसन्न होंगे। तुमको सात एकड़ जमीन कैसे मिली, किसने-किसने कैसे दी, यह मेरी समझ में नहीं आता है। तुम बहादुर हो। आज मैं तुमको माला पहना दूँगी, तिलक लगाऊँगी–अब तो हँसोगे।

लड़के की आँखों से आँसू बह रहे थे। कुरते के छोर से आँसू पोछते ही मुस्करा उठा। विजेता की भाँति सभा की ओर गर्दन टेढ़ी करके उसने देखा। तालियों की गड़गड़ाहट से सभा ने अनुमोदन किया।

दूसरा एक मुसलमान लड़का खड़ा हुआ। उसकी टोली में दो हिन्दू लड़के थे। जमीन लगभग १३ एकड़ मिली थी। अनुभव सुनाते हुए वह कहने लगा—"एक गाँव में गये। पटेल, पटवारी,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोटवार किसी ने भी सहयोग नहीं दिया। टोली के भोजन की भी व्यवस्था नहीं की। पेट में चूहे कूद रहे थे। फिर भी आगे बढ़े। सभा की। उस गाँव में पटेल का आदेश था कि भूदान वालों को कोई मदद न करे। अर्थात् वहाँ भी खाने को नहीं मिला। आटा खरीद कर तीनों लड़कों ने गाँव के बाहर रसोई बनायी। १३-१४ साल के लड़के। रसोई बनाने का अभ्यास नहीं। तीन पत्थर रखे। जंगल से लकड़ी चीर कर लाये। चूल्हा जलाया। टिक्कड़ बने। हाथ जलते थे। चूल्हा सुलगाते समय धुएँ से जी घबड़ाता था, फिर भी टोली-नायक ने रसोई बना कर साथियों को खिलाया।

तीसरा बालवीर खड़ा हुआ। यह टोली-नायक हिन्दू था और उसकी टोली में दो मुसलमान लड़के थे। टोली को ८० रुपयों का साधन-दान मिला था। "साम्ययोग" के पाँच ग्राहक टोली ने बनाये थे। जमीन २३ एकड़ मिली थी। टोली-नायक की उम्र थी १४ वर्ष। उसके साथी थे अन्दाजन १५ साल की उम्र के। खादी का कुरता और खादी का ही पजामा पहने हुए था। विशाल ललाट तथा बड़ी-बड़ी आँखों में से तीव्र बुद्धि का तेज झलक रहा था। मुस्कुराता हुआ, संत विनोबा का वह बाल-साथी बोल उठा—

"आखिर भू-दान का विचार समझने में क्या अड़चन है, मैं समझ नहीं सकता। देश में कोई गरीब न रहे, यही तो विनोबा चाहते हैं न? घर में हम सब प्रेम से रहते हैं। जो होगा वह बाँट कर लेते हैं, तो फिर जमीन बाँट लेना कौन-सी कठिन बात है। मैं तो भाई, चाहता हूँ कि हर गाँव की जमीन बँट जाय। सब मिल कर रहें, मिल कर मेहनत करें। मुझे पदयात्रा में बहुत आनन्द आया। काम तो मेरे साथियों ने किया। मेरे साथी बहुत अच्छे थे····!"

सभा के अध्यक्ष श्री त्रिवेदी की आँखें सजल हो उठीं। किसने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस लड़के को क्रान्ति का अर्थ समझाया ? कितनी आसानी से उसने भूक्रान्ति का सार आत्मसात् कर लिया ! चौथा बाल-वीर उठा। यह तो निरा बच्चा था। उसकी उम्र बारह वर्ष से भी कम थी। मधुर स्वर में भू-दान गीत गाकर उसने सभा को गद्‌गदित कर दिया। बाद में कहता क्या है—"सुन्दर-सुन्दर भू-दान गीत गाने से ही तो लोग समझ जाते थे। भाषण देने की भी जरूरत नहीं पड़ती थी !"

पाँचवें बाल-वीर की टोली को जंगलों में घूमना पड़ा था। एक दिन वह अपने साथियों को लेकर जंगल पार कर रहा था। उस समय तहसीलदार साहब उस जंगल में शिकार खेलने आये थे। लड़के जिस पगडंडी से आ रहे थे, उसके नजदीक गोली चली। धाँय ! धाँय ! आवाज आते ही लड़के चौंक उठे। शायद शेर हो। शायद घायल हुआ हो। यदि इधर ही शेर आये, तो क्या करें ? किधर जायें ? चारों ओर घना जंगल ! पल भर के लिए तीनों लड़के बुत बन कर जहाँ के तहाँ एक-दूसरे से सट कर खड़े हुए। फिर उनमें से एक लड़का धीरे से बोल उठा—"देखो, भगवान् का काम करने हम निकले हैं। बस ! उसका ही नाम अब लेना चाहिए। फिर जो होना हो सो होगा।" स्कूल में जो दैनिक प्रार्थना होती थी, वही तीनों लड़के आँखें बन्द कर के, हाथ जोड़ कर गाने लगे। समस्त प्राणों को इकट्ठे कर के प्रार्थना की।

लड़का सभा से कहने लगा—"प्रार्थना गाते-गाते हमको भीतर से हिम्मत आयी। डर भाग गया।" एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर वे आगे बढ़े। उस दिन से ईश्वर है और अपने नजदीक है, ऐसी श्रद्धा उनके मन में पैदा हुई।

हर टोली के किस्से लिखूंगी, तो एक खासा उपन्यास बन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जायेगा। इसलिए सिर्फ और एक क्रान्ति-वीर की कहानी लिख कर यह समाप्त करूँगी।

एक बाल-वीर टोली-नायक कहने लगा—"हमको भी एक दिन खाना नहीं मिला। इस कदर भूख लगी थी कि पूछो मत। लेकिन गाँव के पटेल ने सबको बतलाया था कि भू-दान वालों की मदद नहीं करनी है। गाँव पटेल से डरता था। जब चौबीस घण्टे फाका करना पड़ा, तो दूसरे दिन चलते समय पैर लड़खड़ाने लगे। सोचा कि चलो, छिंदवाड़ा लौट चलें। भूख सहन करने की आदत तो है नहीं। आगे गाँव में यदि भोजन नहीं मिला, तो फिर लौटने की तैयारी की। इतने में विचार आया कि हम छिंदवाड़ा से नजदीक हैं, इसलिए संकट आते ही लौट रहे हैं, लौट सकते हैं। लेकिन जो हमारे साथी दूसरी टोलियों में गये हैं, उनको भोजन नहीं मिलेगा, तो क्या वे लौट सकेंगे? वे तो छिंदवाड़े से बहुत दूर हैं। वे नहीं लौट सकेंगे। फिर हमारा लौट जाना कैसे उचित होगा? नहीं—लौटना नहीं है। आगे बढ़ना चाहिए।"

लड़कों ने बिस्तर सिर पर रखे। छिंदवाड़ा की दिशा में बढ़ने वाले कदम छिंदवाड़ा की ओर पीठ फेर कर दूसरी दिशा में आगे बढ़ने लगे। टोली में १२ साल का एक सिख लड़का था। उसके पैरों में छाले पड़े थे। खून निकलता था। २-३ मील चलने के बाद पैर फिसल कर वह गिर पड़ा। कमर में चोट आयी। फिर भी जिद करके वह टोली के साथ आगे बढ़ा। टोली को ८ मील चलना था। सिख लड़का भूख के मारे चक्कर आकर दो बार गिरा। फिर भी साथियों के साथ आगे बढ़ता चला गया। टोली-नायक ने उस सिख लड़के को बुलाया। प्रसन्न-वदन, सुन्दर, सतेज लड़का। पैरों में कहाँ छाले पड़े, दिखाने लगा। हाथ में, कुहनी में कहाँ चोट आयी, गर्व के साथ दिखाने लगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरे मुँह से बरबस आह निकली। मेरी तरफ मुड़कर सिख बालक कहने लगा, "कुछ नहीं बहनजी, मामूली चोटें हैं। दो-चार दिन में ठीक हो जायँगी। हम खेलते हैं, तो क्या गिरते नहीं? तब क्या चोट नहीं आती?" कह कर वह खिलखिला कर हँसने लगा। फिर से तालियाँ बजीं। 'शाबास!,' 'शाबास!!' की धूम मची।

तीन घण्टे तक पदयात्रियों के अनुभव मैं सुन रही थी। सन्त विनोबा का क्रान्ति-कार्य अब बाल-गोपालों की लीला बन गया, यह देख कर किसको हर्ष नहीं होगा? ९० बालवीरों ने एक सप्ताह में २५० एकड़ जमीन के दानपत्र लाये। 'साम्ययोग' के २४ ग्राहक बनाये। (९०) का साधन-दान प्राप्त किया। १६० के सम्पत्तिदान प्राप्त किये। टोली-नायकों का आत्मनिवेदन समाप्त होने पर पद-यात्रियों के लिए मालाएँ लायी गयीं। हर एक पदयात्री को मैंने अपने हाथ से माला पहनायी। तिलक लगाया, अक्षत लगाये। माला पहनते समय लड़के मारे खुशी के नाच उठते थे। अकड़ कर खड़े होते थे। मैं तिलक ठीक से लगा सकूँ, इसलिए झट से अपने बाल पीछे हटा देते थे। एक-एक की दिव्य बाल-लीला का वर्णन करने की क्षमता मुझमें नहीं है। क्या ही अच्छा होता कि मैं साहित्यिक होती या कवि! [भूदान-यज्ञ, ४ जनवरी '५७]

"...आदर्श लोकतंत्र में राज्य का कुछ या बिल्कुल स्थान नहीं होगा, क्योंकि व्यक्ति अपने मामलों को अपने पड़ोसियों के सहयोग से हल कर लेगा, तब सुविकसित राज्यहीनता आती है। ऐसी स्थिति में हरेक अपना शासक होता है। वह अपने ऊपर इस प्रकार से शासन करता है कि कभी भी अपने पड़ोसी के लिए बाधक न हो।

[भूदानयज्ञ २६ जुलाई १९५७] —भारतन् कुमारप्पा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्त्री-समाज से दुनिया की आशाएँ !

इन दिनों समाज का जो काम पुरुष कर रहे हैं, वह उनकी ताकत के बाहर हो रहा है ! दो-दो महायुद्ध हो गये हैं, तीसरे के लिए बारूद तैयार हो है, जरा चिनगारी लगने के लिए देर है। यह हालत इसलिए आयी कि परस्पर का एक-दूसरे पर विश्वास ही नहीं रहा। देश-प्रेम का अर्थ दूसरे 'देशों से द्वेष' किया जाने लगा और देशाभिमान गुण के बदले दोष बन गया। समाज में भी यही प्रक्रिया चल रही है। अभी भाषानुसारी प्रान्त-रचना के समय हम देख चुके कि किस तरह पक्षभेद खड़े हो गये थे। तटस्थ बुद्धि से फैसला करने की बुद्धि ही नहीं रही। देहली वालों पर अभी भी कुछ भरोसा है, इसलिए कुछ फैसला हो जाता है। हिन्दुस्तान पर यह कृपा ही है। इस तरह प्रान्ताभिमान भी दोष बन गया। पंथ, सम्प्रदाय, जाति, भाषा, धर्म आदि अभिमानों के बोझ मनुष्य सिर पर उठाता जाय, तो उसके सिर की आखिर क्या स्थिति होगी ?

पुरुषों की इस दुर्गति के समय स्त्रियाँ अगर सामने आयें और दुनिया को अहिंसा का रास्ता दिखायें, तो समस्या सुलझ सकतीं है। इसके लिए जरूरी है कि स्त्रियाँ पुरुषों की कैद से मुक्त हों, समाज के काम में वे ज्यादा से ज्यादा हिस्सा लें और तालीम की की बागडोर भी उनके हाथ में रहे। भूदान में ऐसे अनेक अनुभव आये, जिसमें हमने देखा कि पुत्र को माँ ने, पति को पत्नी ने और भाई को बहन ने प्रेरित किया है। स्त्रियाँ जब समाज के काम में आती हैं, तो उनके साथ दयाबुद्धि भी आ जाती है।

(सिरुपुहईपुरम्, कोइंबतूर, १८-९-५६) [भूदान-यज्ञ, ४ जनवरी '५७]

जैसे परिवार के सभी व्यक्तियों को सहज प्रेम के कारण सम्हालने की शक्ति स्त्री में है, वैसे समाज में जितने दोष हैं, उनका प्रतिकार करने और उन्हें क्षमा करने की शक्ति भी स्त्री में है।

['पावक स्फुलिङ्ग' में से]

—विमला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पोचमपल्ली से पलनी तक भूदान-यज्ञ की प्रगति

(विमला बहन)

किसी भी क्रान्तिकारी आन्दोलन को यथार्थ रूप से समझने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि उसके राष्ट्रीय एवं आन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ का हम अध्ययन करें, क्योंकि क्रान्ति का उद्देश्य ही सन्दर्भ बदलना रहता है। जहाँ तक आन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति का सम्बन्ध है, तीन बातें मुख्यतया सामने आती हैं :

(१) विज्ञान के कारण जो विविध प्रकार की शक्तियाँ मानव को उपलब्ध हो गयी हैं, वे धीरे-धीरे सार्वत्रिक बनती जा रही हैं। मानवीय जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं का—अन्न, वस्त्र तथा अन्य वस्तुओं का—इतनी प्रचुर मात्रा में उत्पादन किया जा सकता है कि समूचे संसार में, किसी भी देश के किसी भी व्यक्ति का, अभाव में तथा दारिद्र्य में जीवन व्यतीत करने की अब कोई आवश्यकता नहीं रह गयी है। इसलिए इस पृथ्वी पर से गरीबी, भुखमरी एवं हर प्रकार का अभाव मिट जाना चाहिए—यह आकांक्षा मानव-मात्र के हृदय में जाग उठी है।

(२) संसार में प्रातिनिधिक लोकसत्ता का चारों ओर बोल-बाला है। जनता का राज हो, इस सिद्धान्त को राजनीतिक क्षेत्र में एक स्वयंसिद्ध सत्य की मान्यता प्राप्त हुई है। जनता के राज का आधारभूत तत्त्व है—मानवीय व्यक्तित्व का सम्मान हो। मनुष्य की बुद्धि की इज्जत हो। मनुष्य का जीवन चरम मूल्य समझा जाय। समाज-परिवर्तन के लिए हो, चाहे अन्य किसी प्रकार से मानवीय सभ्यता का विकास करने के लिए हो, मानव के साथ जबरदस्ती करना, उसको मजबूर बनाना या उसकी हत्या करना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवैज्ञानिक है, अनैतिक है तथा क्रान्ति के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विषम साधन है, इसका भान विचारकों को, नेताओं को एवं हर देश के राज्यकर्ताओं को हो गया है।

ऐतिहासिक आवश्यकता

(३) तीसरी बात यह है कि अब मानवीय जीवन की समस्याओं का समाधान हिंसा की मार्फत या संघर्ष के द्वारा नहीं हो सकता। सारा संसार जब भौतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टि से एक छोटा-सा परिवार बन गया है; जब मानवमात्र एक-दूसरे का पड़ोसी बन गया है, जब जाति, धर्म, देश, राष्ट्र वैचारिक पंथ और पक्ष, इत्यादि भेदों की दीवारें विज्ञान के कारण ढह चुकी हैं, तो हर प्रश्न का समाधान स्नेह, सहयोग एवं अहिंसा के द्वारा ही हो सकता है—ऐसी दृढ़ निष्ठा निर्माण होना अनिवार्य हो गया है। वैसी निष्ठा निर्माण होने के लिए किसी-न-किसी देश में, अहिंसा के आधार पर, बंधुत्वभावना से, सबका सहयोग प्राप्त करते हुए समाज-परिवर्तन का प्रयत्न होना एक ऐतिहासिक आवश्यकता बन गयी है।

इस जागतिक परिस्थिति के कदमों में कदम मिलाने वाली परिस्थिति हमारे अपने देश में स्वाधीनता के बाद कायम हुई। अर्थात् इस देश में बालिग मताधिकार के आधार पर प्रतिनिधिक लोकसत्ता का निर्माण किया गया। जागतिक विचार प्रवाह के अनुकूल विचार-प्रवाह इस देश के जनमानस में खेलने लगे हैं। देश के सभी राजनीतिक पक्षों ने गरीबी-अमीरी समाप्त करने का संकल्प किया है। समाजवादी समाज-रचना का यह ध्येय देश ने अपना लिया है।

सिर्फ किस रास्ते से कदम आगे बढ़ाये जायँ, किन साधनों का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपयोग किया जाय, इसका निश्चय नहीं हो रहा था। राष्ट्रपुरुष की बुद्धि में—कृषि-आधारित अर्थनीति का अनुसरण करें या उद्योग-धंधों के आधार पर संयोजित अर्थनीति का अनुसरण करें, ग्रामोद्योग द्वारा विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था का अनुसरण करें या बड़े पैमाने पर बड़े उद्योग धन्धों द्वारा केन्द्रित अर्थव्यवस्था का अनुसरण करें, —इसका कोई निश्चय नहीं हो रहा था। गरीबो-अमीरी समाप्त करने के लिए टैक्सेशन, काँनफिस्केशन तथा एक्सप्रोपरिएशन का अवलम्ब किया जाय या नहीं, यह भो एक प्रश्न सामने खडा था। मालकियत बिखर जाने के कारण समाज में छोटे मालिकों की संख्या बढ़ गई थी। बड़े मालिक और गैरमालिक कम संख्या में रह जाने के कारण उनका विधानसभा या लोकसभा में कोई खास प्रभाव नहीं रहा। कानून बनाने को शक्ति तो अनायास ही छोटे मालिकों के हाथों में चली गई थी। यह सम्भव न था और नहीं है कि छाटे मालिक, व मालकियत को कानून द्वारा मिटाने का पुरुषार्थ करें। क्योंकि छोटी मालकियत ही पूंजीवाद का आधार है और बहुसंख्य छोटे मालिकों के हाथों में पूंजीवाद को समाप्त करने की कुञ्जी है, यह ज्ञान छोटे मालिकों को था ही नहीं।

राजनैतिक पक्ष सत्ता की होड़ में इतने मशगूल थे कि जनता को समझाकर उचित परिवर्तन द्वारा यह सब कराने को उनके पास फुर्सत नहीं थी।

ऐसो परिस्थिति में विनोबा ने, ईश्वर की प्रेरणा पाकर, सन् १९५१ में भूदान-यज्ञ-आन्दोलन शुरू किया।

अहिंसा की मार्फत, जनता के सहयोग से, सर्वांगीण क्रान्ति लाने का ध्येय सामने रखकर उन्होंने कदम उठाया।

अहिंसात्मक क्रान्ति का एकमेव साधन विचारपरिवर्तन ही रह सकता है। निरपेक्ष वृत्ति से शुद्ध विचार समझना, प्रेमपूर्वक हृदयों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को वश कर लेना, इसके सिवा भला अहिंसा के अन्य कौनसे साधन हो सकते हैं ? विनोबा को तेलंगाना में दो महीनों में बारह हजार एकड़ जमीन मिली। प्रधान मंत्री श्री जवाहरलालजी को साश्चर्य आनन्द हुआ। एक सत्पुरुष फिर से भारत की धरती अपने पावन चरण से नापने लगा और जनता उस सन्त के साथ हर्षोल्लास में मगन होकर चलने लगी, दान देने लगी, यह देख कर देश चौंक उठा। श्री जवाहरलालजी ने विनोबा को दिल्ली बुलाया। भूमि का दान माँगते हुए विनोबा पैदल दिल्ली गये। दिल्ली से उत्तर-प्रदेश गये। वहाँ एक वर्ष में एक लाख एकड़ भूमि छोटे-बड़े सभी मालिकों ने मिल कर उनको दी। यह अद्‌भुत चमत्कार देख कर अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ ने भूदान-यज्ञ आन्दोलन के सञ्चालन का भार उठा लिया। हजारों कार्यकर्ता विनोबा के इर्दगिर्द खड़े होने लगे। प्रान्त-प्रान्त में समितियाँ बन गयी। गांधी-स्मारक-निधि ने आन्दोलन को आर्थिक मदद दी। फिर राजनीतिक पक्ष सजग होने लगे। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने इस आन्दोलन को अपना नैतिक समर्थन प्रदान किया। सक्रिय सहयोग का आश्वासन दिया। प्रजा-समाजवादी पक्ष ने भी नैतिक-समर्थन घोषित करके सहयोग का आश्वासन दिया। जनसंघ के, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तथा साम्यवादी पक्ष के कार्यकर्ता व्यक्तिशः सहयोग देने लगे।

सन् १९५ की बात है। विनोबा तब बिहार में प्रवेश कर चुके थे। बिहार-कांग्रेस कमेटी तथा कार्यकर्ता एकाग्रचित्त से विनोबा की मदद करने लगे थे। ऐसे सुअवसर पर श्री जयप्रकाश नारायण इस आन्दोलन में शामिल हुए। भौतिकवाद से मनुष्य को सत्प्रेरणा नहीं मिल सकती, इस अनुभव से उन्होंने सत् प्रेरणा के नये आधार खोजना शुरू कर दिया था। भूदान-यज्ञ-आन्दोलन में उन्हें क्रान्ति की नयी प्रक्रिया के दर्शन हुए। उन्हें विज्ञान तथा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्यात्म के समन्वय का रास्ता दिखाई देने लगा। श्री जयप्रकाश नारायण शामिल हुए, इतना ही नहीं, लगभग १॥ डेढ़ वर्ष आन्दोलन में काम करने के बाद इस विधायक क्रान्ति के लिए उन्होंने जीवन-दान दिया। उनसे प्रेरणा पाकर सैकड़ों लोगों ने अपने जीवनदान की घोषणा की। आन्दोलन में नई चेतना पैदा हुई। बिहार में २४ लाख एकड़ भूमि लगभग दो ढाई वर्षों में प्राप्त होने के बाद विनोबा ने बङ्गाल में प्रवेश किया और नया मन्त्र देश के सामने रखा। इस देश में उत्पादन के साधनों का कोई व्यक्ति मालिक न रहे, उत्पादन के साधनों पर समाज की मालकियत होगी, ऐसा आत्म-प्रत्ययपूर्वक कहकर उन्होंने भूमि के ग्रामीकरण की माँग पेश की।

माँग पेश होनी ही थी कि गाँव के गाँव ग्रामीकरण के प्रयोग के लिए स्वेच्छा से आगे बढ़ने लगे। उड़ीसा में उनको लगभग १२०० गाँव ग्रामदान में प्राप्त हुए। कोरापुट जिले में तो ६०० गाँव-एक ही जिले-में प्राप्त हुए। उन गाँवों में सामूहिक स्वामित्व, गृहोद्योग, ग्रामोद्योग, बुनियादी शिक्षा, इत्यादि ग्रामराज्य के आदर्शों का प्रयोग करने के लिए सर्वोदय प्रोजेक्ट का कार्यक्रम बनाया गया। तपस्वी कर्मयोगी श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्ध को संचालन का भार सौंप कर विनोबा उड़ीसा से आन्ध्र की ओर आगे बढ़े। उड़ीसा के कार्यकर्ता दुगने उत्साह से नये प्रयोग में जुट गये।

इस दरम्यान देश में भाषावार प्रान्त रचना के कारण एक तूफान खड़ा हुआ। लोगों में कटुता पैदा हुई। उग्र स्वरूप के झगड़े आये दिन होने लगे। गुण्डों के डंडे चलने लगे। पुलिस की लाठी और गोली चलने लगी। लूटपाट, मारपीट, सार्वजनिक सम्पत्ति का विनाश इत्यादि बातें खुलेआम सर्वत्र होने लगी। इस तूफान में भूदान-यज्ञ-आन्दोलन का काम कैसे चल सकेगा, ऐसी आशङ्का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आन्दोलन के हितचिन्तकों के दिल में पैदा हो रही थी। लेकिन क्या बम्बई और क्या गुजरात, क्या पंजाब और क्या महाराष्ट्र, हर प्रान्त में क्रान्ति की ज्योति स्थिर प्रकाश से समाज जीवन को आलोकित करती रही। राष्ट्रीय एकता का एकमात्र अवलम्बन बन कर, भूदान-यज्ञ ने इस देश की अत्यन्त मौलिक सेवा की। भाषावाद, जातिवाद एवं प्रान्तवाद से ऊपर उठने में इस आन्दोलन ने भारतवर्ष की अमर सेवा की।

इधर भूदान-यज्ञ-आन्दोलन का पुष्प खिलता चला जा रहा है। भूमिदान, सम्पत्तिदान, श्रमदान, समयदान, जीवनदान इत्यादि पंखुड़ियाँ एक के बाद एक खिलती गयीं और यह आन्दोलन सर्वस्पर्शी, जीवनव्यापी बन गया। देहात और शहर, दोनों में फिर एक बार जागृत जनशक्ति करवटें बदलने लगी। स्त्री-पुरुष, युवक-युवतियाँ, शिक्षक-छात्र, मालिक-गैरमालिक इत्यादि सभी लोग आन्दोलन की ओर आकर्षित हुए। अनुभव हुआ कि स्त्री-पुरुषों की नसों में नया खून दौड़ने लगा है, चेहरे पर नई ताजगी आयी है।

भूदान-यज्ञ-आन्दोलन ने क्या कार्य किया, इसका संक्षेप में विवरण निम्नलिखित प्रकार का है :

राजनीति : १—लोकशाही का मूल आधार लोकशक्ति है। जनता में उसका प्रत्यय जागृत किया। उसमें पुरुषार्थ की प्रेरणा जगायी।

२—लोकशाही सफल बनाने के लिए सरकार की सर्वकष सत्ता के बदले जनता का जीवनव्यापी सर्वस्पर्शी विधायक पुरुषार्थ अनिवार्य है, यह लोकनीति का सूत्र समझाया।

२—पक्षातीत लोकशाही का विचार देश के सामने आया।

अर्थनीति : १—उत्पादन के साधन सौदे की वस्तु नहीं है, संग्रह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की चीज नहीं हैं, वे उत्पादन के साधनमात्र हैं और इसी नाते उनका समाज में विनियोग होना चाहिए—यह क्रान्तिकारी सूत्र अपढ़, अशिक्षित ग्रामीणों तक पहुँचाया।

२—उत्पादन के साधन अनुत्पादक के हाथ में रहना गलत है। इसलिए अनुत्पादक का स्वामित्व समाप्त करना एवं उत्पादक के हाथ में उन साधनों को सौंप देना हमारा धर्म है, यह मूलभूत क्रांतिकारी सिद्धान्त गाँव-गाँव तक पहुँचाया।

३—उत्पादन के साधनों पर व्यक्ति का स्वामित्व होना गलत है, उससे संग्रह का लालच, शोषण का प्रलोभन इत्यादि संघर्ष के बीज समाज रचना में अनायास पैदा होते हैं, इसलिए उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व समाज का रहे, यह गम्भीर विचार ग्रामीणों के लिए सुलभ कर दिया।

४—तात्पर्य, स्वामित्व के आधार बदलने के लिए जनमानस अनुकूल बनाया। बदलने की पद्धति, साधन एवं प्रक्रिया का प्रात्यक्षिक देश के सामने रखा।

५—अपरिग्रह को सामाजिक मूल्य में परिणत किया।

सांस्कृतिक : १—क्रान्ति की प्रक्रिया में अहिंसा, बन्धुत्वभाव एवं सहयोग को दाखिल किया; अर्थात् इनको जनजीवन में सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा दिला दी।

२—मनुष्य की मूलभूत सत्प्रवृत्ति पर विश्वास ही आदर्श समाज-रचना की सच्ची नींव है, यह समझा कर आस्तिकता को समाज-परिवर्तन के साधन में परिणत किया।

३—सहअवस्थान पर्याप्त नहीं है, मनुष्यों के स्वयंप्रेरित सहजीवन के लिए परस्पर-विश्वास एवं स्नेह अनिवार्य है, यह दिखलाते हुए नया स्नेह-दर्शन संसार के सामने रखा। अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री एवं शान्ति के लिए 'स्नेह' एकमात्र आलम्बन है, इसका भान जगाया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४—लोकशिक्षण द्वारा विचार-परिवर्तन एवं हृदय-परिवर्तन क्रान्ति का अमोघ साधन है, इसका भी प्रात्यक्षिक संसार के सामने रखा।

गत महीने में पलनी में अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ की सभा हुई। उस सभा में एक महत्वपूर्ण निर्णय किया गया। आज तक गांधी स्मारक निधि की मदद से अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ इस आन्दोलन का संचालन करता था। पलनी में यह निश्चय हुआ कि अब आन्दोलन तंत्र-मुक्त तथा निधि-मुक्त बनेगा, भूदान की प्रान्तीय समितियाँ विर्सजित होंगी, कार्यकर्ताओं को स्वाश्रयी बन कर काम करना पड़ेगा।

ता० १ जनवरी १९५७ से भूदान-यज्ञ आन्दोलन की जिम्मेदारी इस देश के हर एक जिम्मेवार नागरिक पर आ गयी है। यदि हम भारतवर्ष में लोकतन्त्र को सफल बनाना चाहते हैं; यदि अहिंसा से जीवन के प्रश्न हल करना सहज-सुलभ है, इसका प्रात्यक्षिक दुनिया के सामने रखना चाहते हैं, यदि विश्वबन्धुत्व को इसी धरातल का एक व्यावहारिक सांस्कृतिक मूल्य बनाना चाहते हैं, तो हमें इस अभिनव वैचारिक क्रान्ति में अपना हाथ बँटाना होगा।

[भूदान-यज्ञ, १५ मार्च, '५७]

बाबा की प्रेम की नौकरी

बाबा ने भूदान-समितियाँ क्यों तोड़ी? इसलिए कि सारे पेन्शनर्स, शिक्षक अपनी तनख्वाह के साथ, असेम्बली के लोग वेतन के साथ, छुट्टियों में बाबा का काम करें। पाँच महीने की तो असेम्बली रहती है। फिर सात महीने की तनख्वाह ज्यादा क्यों दी जाती है? तो, बाबा की नौकरी के लिए! यह सब उन्हें समझाने की बात है। प्रेम से समझाना है। हमारा विश्वास है कि ऐसी हवा तैयार हो रही है। [इंडीयापट्टी, त्रिची, १९-१-'५७]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सेवाग्राम में नयी तालीम की अध्ययन-गोष्ठी

(विमला बहन)

सेवाग्राम में नयी-तालीमी-संघ की ओर से जुलाई के पहले हफ्ते में जो अध्ययन-गोष्ठी हुई, वह बहुत महत्त्वपूर्ण रही। नयी तालीम को ग्रामदान और ग्रामराज के सन्दर्भ में किस तरह अमल में लाया जाय, यह विचार शुरू से ही चल रहा था। उस सम्बन्ध में नयी तालीमी-संघ ने एक प्रस्ताव भी स्वीकृत किया। प्रस्तुत सेमिनार उसी दिशा में एक अमली कदम था। जो चर्चाएँ और भाषण वहाँ हुए हैं, उनमें से कुछ भाषणों का सार यहाँ देना उपयुक्त होगा।

सब लोगों का स्वागत करते हुए, आशा दीदी ने, बारिश के कारण लोगों को होने वाली तकलीफ के लिए पहले क्षमा-याचना की। ग्रामदान और नयी नयी तालीम के सम्बन्धों का जिक्र करते हुए फिर कहा : "ग्रामदान से नयी तालीम का दरवाजा ही खुल गया है। हम चाहते थे कि बाबा के सामने यह गोष्ठी हो, लेकिन उन्होंने कहा कि हमारा सारा ध्यान अभी ग्रामदान की ओर ही लगा हुआ है और यदि यहाँ गोष्ठी होती है, तो हमारा ध्यान उधर बँट जायगा। इसलिए यह आयोजन बाबा के सामने नहीं हो सका। बापू ने जेल से आने के बाद सन् '४५ में नयी तालीम का उद्घाटन किया था। हम अपने उस लक्ष्य तक तो अभी नहीं पहुँचे हैं, लेकिन हम जा उधर ही रहे हैं, वही लक्ष्य हमारा शाश्वत ध्रुवतारा है।"

गोष्ठी के उद्घाटन-भाषण में पू० काका साहब ने, गुजरात विद्यापीठ में बापू ने जो सिद्धान्त बताये थे, उनका जिक्र करते हुए

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहा कि "बापू ने मुख्यतः दो-तीन बातें हमारे सामने रखीं : (१) धन-जन-बुद्धि-शक्ति राष्ट्रसेवा में लगायी जाय, (२) प्रचलित अर्थशास्त्र बदल दिया जाय और आर्थिक, सामाजिक आदि सर्वांगीण दृष्टि ग्रहण की जाय और (३) अध्ययनक्रम न तो दुनिया के प्रचलित अभ्यास-क्रम के अनुसार ही तैयार हो, न हमारे प्राचीन ग्रंथों के ही आधार पर। वह तो प्रत्यक्ष अनुभव के और परिस्थिति के आधार पर ही बने।

"इस दिशा में हम लोगों ने कुछ काम किया और गुजरात विद्यापीठ का रूप सामने आया। उसके बाद नयी तालीमी-संघ की स्थापना हुई। अब लक्ष्य, कार्य और जिम्मेवारी बढ़ गयी है। अतः इस नये गुजरात-विद्यापीठ का अर्थात् नयी तालीमी-संघ का यह कार्य होगा कि देश की जो माँग है, उसकी पूर्ति करें, जीवनदानी राष्ट्र-सेवक निर्माण करें और समाज में स्वतंत्र-वृत्ति का विकास करें। हमको मानव-संस्कृति के आधार पर गाँव का पुनर्निर्माण करना है और वही हमारा लक्ष्य है। आज के ग्रामदानी गाँव भी शहरों के अनुयायी हैं। योजनाएँ भी आज उस पुराने ढाँचे के आधार पर ही बनती हैं। लेकिन हमारी क्रान्ति का आधार ग्राम है और यही क्रान्ति विश्व की बुराइयों का इलाज है। आज एक सन्त की प्रेरणा के ही कारण ऐसा मौका मिला है कि ग्रामों का विकास ग्रामों की दृष्टि से हो।"

जाति-प्रथा के बारे में अपनी वेदना प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि "आज वह समाज के लिए कोढ़ बन गयी है, इसलिए हमको कुटुम्ब-धर्म की स्थापना करनी ही होगी। वस्तुतः वह धर्म ही नहीं है, जो कुटुम्ब में दाखिल नहीं होता और उसका विकास नहीं करता।"

शिक्षाशास्त्र जीवनशास्त्र ही है, यह बताते हुए उन्होंने कहा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कि "ज्ञानगोष्ठी का आधार शुद्ध जीवन का स्पष्ट चित्र होता है। हमको ऐसा स्पष्ट चित्र रखकर चलना है। सीलोन में मुझसे पूछा गया—दो लफ्जों में ग्रामदान का अर्थ बताइये। मैंने कहा, 'सारे समाज को कुटुम्ब बनाने की प्रक्रिया का ही नाम ग्रामदान है।' इस तरह भगवान् ने ग्रामदान द्वारा शिक्षा का स्रोत ही चालू कर दिया है। यह नयी तालीम की प्रयोगशाला ही है।"

श्री शंकररावजी ने साधन-साध्य-विवेक के सम्बन्ध में बड़ा प्रेरक भाषण दिया। उन्होंने बताया ग्रामराज हमारा साध्य है और उसका समानार्थी शब्द अहिंसक समाज ही है, इसलिए अहिंसक तरीके से ही वह प्राप्त किया जा सकता है।

"गाँधीजी ने कहा था : 'जमींदार स्वेच्छा से भूमि-अधिकार छोड़ देंगे।" लोगों के मानसरोवर में जो समर्पण की इच्छा थी, उसे ही विनोबाजी ने रूप दे दिया और भगीरथ का काम करके भूदान-गंगा को अवतरित किया।"

श्री शंकररावजी ने एक बात की ओर विशेष रूप से ध्यान दिलाया कि "नेतृत्व के साथ सेवकत्व का भी विसर्जन करना चाहिए, क्योंकि ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। शासन-निरपेक्ष समाज की वहली शर्त है, व्यवस्थापक-पद को ही हटा दिया जाय, जो नेता के साथ-साथ सेवक से रूप में भी चला आता है!"

श्री शंकररावजी ने आजादी की व्याख्या करते हुए बताया कि "विचार, चिन्तन, क्रिया, इन सबमें मनुष्य का अभिक्रम कायम रहे। वही सच्ची आजादी है। ग्रामसंकल्प, स्वदेशी धर्म और सन्त-संस्कृति के समन्वय से ही ग्रामराज आयेगा।"

श्री शंकररावजी ने अपने दूसरे भाषण में नयी तालीम का रूप स्पष्ट करते हुए बताया कि "अहिंसक क्रान्ति का माध्यम नयी तालीम ही हो सकती है। जहाँ ग्राम-संकल्प सर्वसम्मति से हुआ कि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसके बाद की रचना में से दबाव ही समाप्त हो जाता है और गाँव की सारी शक्ति रचना में लग जाती है। हमको तो सच्चा लोकराज्य कायम करना है। आज के लोकतन्त्र में होता यह है कि पाँच साल में एक बार ही लोग विचार करते हैं और फिर विचारहीन बन जाते हैं। जहाँ मनुष्य विचार नहीं करता, वहाँ उसमें और पशु में फिर फरक ही क्या रह जाता है? अगर कार्य-क्षमता और मानवीय मूल्यों के बीच हमें चुनाव करना हो, तो मानवीय मूल्यों का ही हमें चुनाव करना होगा। इस नये प्रजातन्त्र की स्थापना में नयी तालीम ही कारगर साबित हो सकती है।"

इन लोगों के अलावा श्री दादा धर्माधिकारी, डॉ० ज्ञानचन्दजी, श्री अण्णा साहब सहस्रबुद्धे आदि के विचार-प्रेरक भाषण हुए, चर्चाएँ भी अच्छी हुईं। [भूदानयज्ञ २६ जुलाई '५७]

विद्रोह से केवल बाह्य परिस्थिति में परिवर्तन होता है, और बाह्य परिवर्तन से आन्तर परिवर्तन होना कोई आवश्यक नहीं है, हाँ, वह आन्तर परिवर्तन का प्रतिबिम्ब हो भी सकता है।....

संसार को आवश्यकता है क्रान्ति की। विद्रोह से उथल-पुथल हो सकती है, विध्वंस हो सकता है, लेकिन आवाहन है विधायक सर्जन का। उसके लिये जो प्रतिभा के उन्मेष चाहिये, वे द्वेष और कटुता से भरे हृदयों से कभी नहीं उठ सकते। मङ्गलता और पवित्रता का जन्म क्रोध और घृणा में से नहीं हो सकता।....

विद्रोह और क्रान्ति में जमीन-आसमान का अन्तर है। विद्रोह बाह्य रचनाओं को बदल सकता है, लेकिन समग्रता में क्रान्ति घटित होने का एक ही स्थान है—मानव का अपना हृदय, अपना जीवन।

['पावक स्फुलिङ्ग' में से] —विमला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमें आत्म-निर्भर बनना होगा

(विमला बहन)

परमाणु-बमों के इस युग में विश्वशान्ति को उत्पन्न खतरा संयुक्तराष्ट्र-संघ या ऐसी किसी संस्था से उतने अंश तक दूर नहीं हो सकता, जितने अंश तक व्यक्ति के आचरण से। क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और विश्व-समस्याओं का समाधान प्रत्येक व्यक्ति के विचार और आचरण की शुद्धता पर निर्भर करता है।

भूदान तो पूर्णव्यापी आर्थिक क्रान्ति के एक अंश का केवल प्रतीक है। भूदान-आन्दोलन भूमि-वितरण के कार्य से समाप्त न होगा। चूंकि भारत खेतिहर देश है तथा इसकी अर्थ-व्यवस्था में भूमि की प्रधानता है, इसलिए भूमि-वितरण को बृहत्तर आर्थिक क्रान्ति का संचालन केवल एक प्रतीक समझ कर चुना गया है! वस्तुतः भूदान की स्थिति समाप्तप्राय है और ग्रामदान ने इसका स्थान ग्रहण किया है। सभी प्रकार के शोषण का अन्त हो, यही भूदान का लक्ष्य है। वास्तविक खेत जोतने वाले को अपने श्रम का फल मिले, यही उसका ध्येय है। सर्वोदय-आन्दोलन का विस्तार, जिसका भूदान एक अंग है, शहरी क्षेत्रों की मिलों, कारखानों (फैक्टरियों) तथा अन्य बड़े उद्योगों में किया जायगा, जिससे धनका शोषण समाप्त हो।

सम्पत्तिधारी सभी व्यक्ति समाज के शत्रु नहीं समझे जाने चाहिएँ। धन-संग्रह की कामना प्रत्येक मनुष्य में निहित है, किन्तु समझा-बुझाकर धनी व्यक्ति को सत्य और न्याय का गूढ़ अर्थ हृदयंगम कराना चाहिए। मानवता के शब्दकोश में "शत्रु" या इसके तुल्य अन्य कोई शब्द नहीं है। सर्वोदय हृदय-परिवर्तन पर ज्यादा जोर देता है। कानून बना कर कोई मौलिक परिवर्तन नहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किया जा सकता। यदि कानून प्रभावशाली होता, तो सरकार की मद्य-निषेध-नीति पूर्णतः सफल होती।

गांधीजी ने ऐसे स्वाधीन भारत का स्वप्न देखा था, जिसमें धनी और निर्धन के बीच भेद-भाव न हो और निर्धनता तथा भूख अतीत की चीजें हो जायँ। किन्तु स्वाधीनता के बाद सरकार और जनता उक्त परिवर्तन लाने में विफल रही। अब भी जातीयता, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीय देशभक्ति, भाषावाद, दलीय गुटबन्दी, व्यक्तिगत गुटबन्दी और अन्य दुर्गुण मौजूद हैं। औपचारिक ढंग से लोकतन्त्र तो स्वाधीन भारत में स्थापित हो गया, किन्तु वास्तविक लोकतन्त्र नहीं कायम हुआ। वोट, जो लोकतंत्र में सबसे बड़ा अधिकार है, सदाचार और अन्य गुण पैसे द्वारा खरीदे जा सकते हैं। जनता आत्म-निर्भर नहीं हो पायी है। वह हर बात के लिए सरकार पर निर्भर रहती है। यह स्वाधीनता नहीं है। स्वाधीन देश में प्रत्येक व्यक्ति को स्वाधीन अर्थात् आत्म-निर्भर होना चाहिए।

भूदान-आन्दोलन सन् १९५१ में विनोबाजी द्वारा प्रारम्भ नहीं हुआ, बल्कि यह सन् १९१६ में गांधीजी से शुरू हुआ! सत्य और अहिंसा पर आधारित गांधीजी का यह आन्दोलन ही भारतीय दर्शन और परम्परा की भूमि में जड़ पकड़े हुए हैं।

भूदानयज्ञ, (—गौहाटी के एक भाषण से)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अराजकता की एक झलक !

(विमला बहन)

उस रोज डिब्रूगढ़ से गुवाहाटी आना था। एक्सप्रेस में चढ़ने के लिए तिनसुकिया पहुँची। गार्ड से पूछा, इस गाड़ी में स्त्रियों का दूसरे दर्जे का डिब्बा है ? जवाब मिला "है।" कण्डक्टर-गार्ड साथ आये। देखा तो डिब्बे में ६-७ सज्जन बैठे हुए थे, एक-दो लेटे हुए थे। कण्डक्टर-गार्ड ने कहा—आप लोग इस डिब्बे से उतर जाइये, यह स्त्रियों का डिब्बा है। सज्जनों का एक मुख से जवाब आया—"दूसरे डिब्बे में पहले एकोमोडेशन दीजिये—तो उतरेंगे, वरना हम नहीं उतरेंगे।" मैंने कहा, भाई, वह प्रश्न अलग है। पहले स्त्रियों के डिब्बे में से आप उतरिये। एक सज्जन, जो ऊपर की बर्थ पर लेटे हुए थे, अशुद्ध अंग्रेजी में बेधड़क बोलते हुए कह उठे, हम कोई असभ्य लोग हैं ? कोई जानवर हैं ? हम स्त्रियों को कोई खतरा थोड़े ही पहुँचायेंगे। अब परदे का जमाना नहीं रहा। स्त्रियाँ पुरुषों के डिब्बे में चढ़ती हैं, उनको कोई नहीं उतारता है। हम नहीं उतरेंगे–नहीं उतरेंगे। मैंने कहा—"स्त्रियों के लिए स्वतन्त्र डिब्बे न हों, इसके लिए आप सब मिल कर एक आन्दोलन खड़ा कीजिये। रेलवे-अधिकारियों से लड़िये, उसमें हमें एतराज नहीं है। पर अभी आपको उतरना होगा। वरना गाड़ी आगे नहीं बढ़ेगी। मैं स्टेशन से बाहर उसको नहीं जाने दूँगी।" उत्तर : "करना है सो कीजिये हम नहीं उतरेंगे।" कण्डक्टर गार्ड ने जाकर सारे स्टाफ को बुलाया। गार्ड ने बहुतेरे समझाया। जिस भाषा में स्टाफ के साथ बातचीत चल रही थी, वह लेख में लिखने योग्य नहीं है।

आधे घण्टे तक वह झगड़ा चला। जब गार्ड ने कहा कि गाड़ी जायेगी नहीं, जब तक कि वे नहीं निकल आते हैं। स्त्रियों के डिब्बे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में पुरुष मुसाफिरों को लेकर वह गाड़ी चलने नहीं देंगे, तब जाकर अंग्रेजी, असमिया, बंगाली अनेक भाषाओं में असभ्य शब्दों का उच्चारण करते हुए वे लोग उतरे। मेरे शरीर पर खादी के कपड़े देख कर कांग्रेस व सरकार के साथ मेरा सम्बन्ध जोड़ा गया! डिब्बे के बाहर ४०-५० आदमी इकट्ठे थे। गाड़ी जब तक चलने नहीं लगी, तब तक उनके बीच खड़े होकर मुझको उपदेश दिया गया कि योरप में स्त्रियाँ कैसी निर्भयता से विचरती हैं, रूस में क्या होता है, इस पढ़ी-लिखी स्त्री ने पुरुषों को कष्ट दिया, इत्यादि।

ज्यों-त्यों गाड़ी आगे बढ़ी। डिब्बे में और भी बहनें थीं। एक बहन को रात में २॥ बजे उतरना था। उतरने के लिए डिब्बा खोलना था कि पुरुष यात्री भीतर घुसने लगे। भीतर से सब बहनें बतला रही थीं कि "यह स्त्रियों का डिब्बा है—इसमें कृपा करके आप लोग न घुसें। मेहरबानी करके उतर जाइये।"

"गार्ड ने कहा है—इसी में चढ़ो।" मैंने कहा—गार्ड को बुलाइये।"

हम नहीं बुलावेंगे। जरूरत हो, तो आप जाइये गार्ड के पास। हम कोई राक्षस हैं, जो आपको खा जायेंगे—हम नहीं उतरेंगे।"

उत्तर : "बिना इजाजत के स्त्रियों के डिब्बे में आप हमारे प्रतिवाद के बावजूद चढ़े हैं, प्रार्थना करते हैं—गार्ड को बुलाइये।" "हम नहीं बुलायेंगे।" मैं उतर कर स्टेशनमास्टर के पास गयी। स्टेशनमास्टर, टी० टी०, कण्डक्टर, गार्ड सब मेरे साथ आये।

तिनसुकिया वाला किस्सा दोहराया गया। मेरे लिए मूर्ख, दुष्ट, कट्टर, बेवकूफ इत्यादि अंग्रेजी विशेषणों के तथा असमिया भाषा में उनके समर्थनार्थ विशेषणों के तोहफे नजर किये गये।

स्टेशन-स्टाफ, गार्ड इत्यादि निराश होकर लौटने लगे। गार्ड ने उनसे कहा : "गाड़ी में इस क्लास में जगह नहीं है, आप थर्ड में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाइये। मैं आपको सर्टीफिकेट देता हूँ। रिफण्ड मिल जायेगा। जब एक स्त्री एतराज कर रही है, तो आपका जबरदस्ती जनाने डिब्बे में घुसना नियम के प्रतिकूल है।"

वे भाई झल्ला कर अंग्रेजी में कहने लगे—'मैं तीसरे दर्जे में सफर नहीं कर सकता। मेरा अपना सम्मान है। मैं तीसरे दर्जे वाला जानवर नहीं हूँ।"

मैंने मन में कहा—"हां रे भाई, तेरे पास आत्मसम्मान और इज्जत तो कूट-कूट के भरी है, इसलिए यहाँ आधी रात जनाने डिब्बे में लड़ाई कर रहा है न?"

आखिर गार्ड ने उनको अपने डिब्बे में बिठा लेने का आश्वासन दिया। उनमें एक ने उस अवधि में मुझको लक्ष्य करके जो वक्तव्य डिब्बे से बाहर खड़े हुए श्रोताओं को सुनाया—वह एक नमूना था, स्त्री के प्रति इस देश के दृष्टिकोण का!

यह क्रम लगातार चलता ही रहा। किसी स्टेशन पर किसी बहन को उतरना होता ही और हर जगह इसी तरह की जबरदस्ती होती! दरवाजा खुला कि लोग भीतर घुसते!

मैं पाँच वर्षों से लगभग लगातार परिभ्रमण कर रही हूँ। पुरुष चढ़ आते हैं, जनाने-डिब्बे में और गार्ड को बुला कर उनको उतारना पड़ता है, यह अनुभव पहले भी आया है। लेकिन गार्ड, कण्डक्टर, टी० टी० ये सारे दल-बल सहित आवें और उनकी भी बात न मानी जाय, उनके साथ झगड़ा हो, ऐसा बहुत कम देखा।

माना कि डिब्बों पर स्त्री का चित्र नहीं था। सिर्फ "लेडीज कम्पार्टमेन्ट" लिखा हुआ था। माना कि आजकल रेलवे में बहुत भ्रष्टाचार चलता है और झूठ-मूठ लिख देते हैं, "लेडीज कम्पार्टमेन्ट" और अपने रिश्तेदारों को बिठा देते हैं! माना कि मुसाफिरों को पर्याप्त जगह आजकल किसी भी गाड़ी में नहीं मिलती। फिर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भी जनता से मेरा यही सवाल है कि क्या यह तरीका है पेश आने का ? जब जनाने-डिब्बे के यात्री मना कर रहे हो, तो जिद्द करके चढ़ना, उनसे गंदी भाषा में अपमानकारक बातें कहना, रेलवे के कर्मचारियों से निपट अनादर का व्यवहार करना कहाँ तक ठीक है ? आज ऐसे मुट्ठी भर ही व्यक्ति हैं, लेकिन उनका पुरुषार्थ देखने के लिए जो सौ-पचास हर बार इकट्ठे होते हैं, वे कौतुक भरी निगाहों से उनको प्रोत्साहन ही देते हैं। यही क्रम चलता रहा, तो स्त्रियों के लिए स्वतन्त्र रूप से सफर करना असम्भव होगा।

रेलवे वालों से मेरा अनुरोध है कि स्त्रियों के डिब्बों पर जो चित्र रखा जाता है, वह नितान्त आवश्यक है। वह रखा जाना चाहिए। गाड़ी में जगह न हो, तो टिकट काटना रोक देना चाहिए। रेलवे-कर्मचारियों को रेलवे के नियमों का दक्षतापूर्वक पालन करना चाहिए। वे उन नियमों का पालन नहीं करेंगे, तो उनकी वाणी में यात्रियों को समझाने की शक्ति कहाँ से आयेगी ?

अराजकता की झलक में जीवन के हर क्षेत्रों में देख रही हूँ। इसको कानून या फौज नहीं रोक पायेगी। जनता को ही सावधान हो जाना चाहिए। अन्याय को प्रोत्साहन देना, घूस देकर अन्याय के सामने झुकने की आदत छोड़ देना चाहिए। इस देश की शान्ति और एकता जनता के हाथों में है, इसलिए मैंने यह प्रश्न श्रद्धापूर्वक जनता के सामने रखा है। इसमें कोई व्यक्तिगत शिकायत नहीं है। यह एक सामाजिक समस्या है, जिसका निराकरण सहयोग तथा स्नेह से हम सब कर सकेंगे। आशा है, जनता मेरे इस अनुरोध पर ध्यान देगी।

[भूदान-यज्ञ, १ नवम्बर, '५७]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग्रामदान के बाद क्या होगा ?

(विमला बहन)

ग्रामदान के बाद सबसे पहले मैं यह जानना चाहूँगी कि ग्राम-दानी गाँव के लोगों की वृत्ति कैसी है। स्वामित्व-विसर्जन के बाद उनके मन में कितना अहंकार है? या कितनी नम्रता आयी है? और उनमें एकता बढ़ रही है या घट रही है, इसका मैं अध्ययन करूँगी। आज ग्रामविधान सभा में एक नवयुवक ने सन्देह प्रकट किया कि "सभी आते हैं और प्रलोभन दिखाते हैं। कांग्रेसवाले कहते हैं, 'हम तुम्हारा भला करेंगे,' सोशलिस्ट कहते हैं, 'नहीं, हम तुम्हारा भला करेंगे' और कम्युनिस्ट भाई कहते हैं, 'इन दोनों में से आपका कोई भला नहीं करेगा; दस वर्ष का अनुभव तो आपके सामने है ही! अतः आपके सच्चे हितचिन्तक हमही हैं।' ये सारी बातें सुन कर बुद्धि चकरा जाती है। किसकी सुने और किसकी नहीं, कुछ समझ में नहीं आता। हम किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सकते। अब बीच में ये भूदानवाले आ गये हैं और ये भी बहुत सी प्रलोभन की बातें कर रहे हैं। ये भी हमारा कल्याण करेंगे या नहीं, सन्देह ही होता है।" मैं कहती हूँ कि इनका संदेह ठीक है। यह उनके जीवन के अनुभव का परिणाम है। लेकिन भूदानकर्मी उन्हें याद दिलायें कि भूदानकर्मियों ने यह दावा कभी नहीं किया है कि वे उनका भला करेंगे।

भूदानकर्मी का कर्तव्य

भूदानकर्मियों को किसी भी ग्राम में जाकर किसी भी ग्रामीण भाई को 'हम आपका भला करने आये हैं' या 'हम आपका भला करेंगे' ऐसा नहीं कहना चाहिए। हमें संत का सन्देश पहुँचाना है,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निर्माण की पद्धति समझानी है। "ऐसा करोगे तो ऐसा होगा, सरकार आपको इस प्रकार मदद दे सकती है," यह समझा देना चाहिए। यही हमारा काम है। हमें केवल डाकिये का काम करना है, डाक पहुँचानी है, जिसमें कि उनके लिए कुशल समाचार है। परन्तु निर्माण का काम हम नहीं करेंगे, इसे तो आपको ही करना है। सरकार से मदद भी हम नहीं ला देंगे, वह भी आपको ही लाने जाना है। हम केवल सलाह दे सकते हैं। आवेदनपत्र-निवेदन-पत्र कैसे लिखना, कहाँ भेजना, किसको भेजना आदि बातें हम आपको बता सकेंगे।" इस प्रकार भूदानकर्मी गाँववालों को समझा दें।

हमें सन्त का सन्देश पहुँचाना है। कहीं एक जगह स्थायी रूप से बैठ कर या संस्था खड़ी करके पैसा-टका लाकर नहीं देना है। हाँ, भूदानकर्मी गाँव वालों से किसी सरकारी अफसर की पहचान करा दे सकेंगे या किसी विभाग के अधिकारी से उस गाँव में जाने के लिए प्रार्थना कर सकेंगे। ग्रामीण जनता को सारे नियम बतायेंगे। परन्तु निर्माण का कार्य वे नहीं करेंगे, उसे तो जनता को ही करना होगा।

सब मिलकर सुखी होना है

सभा में यह भी कहा गया कि "जिनके घर में खाने को नहीं, वे क्या काम करेंगे ?" मुझे इस प्रकार की बातें सुनकर बड़ा दुःख होता है। हमें सोचना चाहिए कि अब तो ३४ परिवारों का मानों एक परिवार बनाया है। अब तो हम सही में भाई-भाई बने हैं। अतः एक भाई के पास कोई चीज न हो, तो उसे वह जिस भाई के पास हैं, उस भाई से बिना माँगे मिल जानी चाहिए। बंधु-प्रेम का यही तकाज़ा है। किसी के पास अनाज नहीं है, तो जिसके पास अनाज है वह अनाज दे। परिवार का एक आदमी खाये और एक भूखा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोवे, क्या कभी ऐसा हुआ है। मान लीजिये, माँ ने रोटी खायी और बच्चा बाहर से भागता आया। उसने कहा, "माँ ! मुझे भूख लगी है, रोटी दो !" तो क्या माँ कहेगी, "अब रोटी नहीं है, अभी-अभी मैं खा चुकी। अब शाम को बना दूँगी।"। नहीं, ऐसा कभी नहीं होता। माँ का प्यार अपने बच्चे को भूखा नहीं देख सकता। माँ उसी वक्त चूल्हा जलाती है। इसी प्रकार जब आपके ३४ परिवार एक परिवार में बदल गये हैं, तो आपमें भी यही भावना जाग जानी चाहिए। परिवार का अर्थ क्या होता है ? "एक दूजे की मदद करेंगे, सारे लेंगे सुपन्थ" यही साम्ययोग का सूत्र है। यही ग्रामराज का तत्त्व हैं। हमें इसी मार्ग से जाना है। ग्रामदान हमने इसीलिए किया है। ग्रामदान का हमारा संकल्प सब मिलाकर सुखी होने के लिए है, हम इस बात को न भूलें।

गांववालों का मार्ग-दर्शन

मान लीजियं आज आपने अर्जी दी। वह यहाँ से शहर जायेगी वहाँ से कृषि-विभाग के ऑफिस में जायेगी। फिर वह और ऊपर के अधिकारी के पास जायेगी। इस प्रकार वह क्रमशः जायेगी और क्रमशः ही वापस आयेगी। इस दौरान में हो सकता है, दो महीने लगें या तीन महीने भी लग सकते हैं। तो क्या तब तक आप बैठें रहेंगे ? तब ग्रामदानी कह सकते हैं कि 'हम क्या करेंगे ? सारी फसल चली जायेगी, हम भूखे रहेंगे; क्योंकि और कहीं से तो हम अपना इन्तजाम नहीं कर सकते। साम्ययौग तो साहूकार का द्वार बन्द कर देता है। कहता है, जमीन गाँव की मालिकी की बनी है। इसे अब हम बंधक में नहीं रख सकते और बेच भी नहीं सकते। तब हम कर्जा कहाँ से लायेंगे ?'

मैं अपने भूदानकर्मी भाइयों से कहना चाहती हूँ कि जब आप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग्रामनिर्माण की बात करने जायेंगे, तो उन्हें ठीक तरह से समझा दें। वे देहात में रहते हैं। वहाँ तार-आफिस नहीं होता है, पोस्ट-आफिस नहीं होता है, कहीं पास में कोई शहर भी नहीं होता है। अतः उनका आप खुद ही पूरा मार्गदर्शन करें, उन्हें अपनी शक्ति का भान करा दें, संगठन से सब सवाल हल करने की राह दिखा दें। इतना करने पर भी 'हम आप पर कोई उपकार करने वाले नहीं हैं, शासनकर्ता भी नहीं हैं, हमें तो एक सन्त का संदेश पहुँचाना है', यही भावना आप बनाये रखें।

निर्माण-कार्य विश्वासपूर्वक करे

वितरण इस पद्धति से हो कि सबको संतोष मिले। सबका संतोष तो जरा कठिन ही है। फिर भी किसी के मन में सन्देह रह जाय, ऐसा काम नहीं करना चाहिए। ऐसा होगा तो विश्वास नहीं रहेगा। निर्माण-कार्य में रुकावटें आयेगी। परन्तु आखिर किसी-न-किसी को नेतृत्व तो करना ही है। किसी-न-किसी को मुखिया तो बनाना ही है। किसी-न-किसी पर विश्वास तो रखना ही है। इसके लिए एक बात ध्यान मे रखनी ही होगा कि यह काम गाँव का काम है और हमारा मुखिया भी गाँव का ही है, देखा-परखा हुआ है। उसके लिए अविश्वास कैसा ? हमें तो निर्माण का कार्य करना है। सहकारी संस्था बनानी है, कर्ज देने वाली संस्था बनानी है। संदेह रखेंगे, तो काम नहीं बनेगा। ग्राम-निर्माण में ये ही महत्त्व की बातें हैं।

ग्रामदान का सही अर्थ

"हमने ग्रामदान किया, अब हमारी जिम्मेवारी खतम हुई। अब हम जो माँगेंगे, वह हमें मिल ही जाना चाहिए", यह भावना गलत है। यह राज हमारा है, जवाहरलाल हमारे प्रतिनिधि हैं,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उनसे मदद मिलेगी ही; परन्तु उनकी मदद पर ही हमें निर्भर रहना नही है। आज के हमारे मन्त्री अनुकूल हो सकते हैं, वे हमें मदद दे सकते हैं। परन्तु राजनीति शतरंज के समान है। और फिर आज तो हमारा यह लोकशाही का प्रयोग चल रहा है। अब कोई मंत्री सदा के लिए मंत्री बन कर नहीं रहेगा। हर पाँच साल के बाद मंत्रो बदल जाते हैं। इसलिये कहना चाहती हूँ कि यदि आज के हमारे किसी मंत्री को जगह दूसरा कोई आ जाय और वह आपके इस कार्य में सहयोग देना पसंद न करे, तो आप क्या करेंगे ? तब क्या ग्रामदानी गाँव यह कहेंगे कि "हमने तो मदद पाने के लिए ही ग्रामदान किया था ? हमें अब मदद नहीं मिलती तो हम ग्रामदान वापस ले लेंगे।" इस प्रकार यदि आप सोचेंगे, तो वह गलत होगा। ग्रामदान का यह अर्थ नहीं होता।

ग्रामदान का अर्थ होता है, अब अपने गाँव का कारोबार हम देखने वाले हैं। हम यहाँ के राजा-महाराजा हैं। गाँव का सुख-दुःख हम देखेंगे; गाँव की व्यवस्था हम करेंगे एवं गाँव की हर मुश्किल को हम गाँववाले मिल कर ही आसान करेंगे। हमीं अपना रास्ता निकालेंगे। गाँव का उत्पादन कैसे बढ़ेगा ? गाँव में कपड़ा बना सकते हैं या नहीं ?—आदि सभा प्रकार से हमें सोचना है और जिस तरह गाँव समृद्ध होगा, उसो मार्ग से जाना है। इसमें दूसरे के भरोसे बैठने से काम नहीं चलेगा। दूसरे के भरोसे बैठेंगे, तो हम धोखा खायेंगे। सहायता तो हमें सबकी लेनी है, परन्तु आश्रय किसी का लेना नहीं है। सहायता से बल बढ़ता है। सहायता न मिली तो काम रुकता नहीं। परन्तु आश्रय की बात दूसरी है। आश्रय न मिला, तो काम चलता ही नहीं, वह बन्द पड़ जाता है। क्योंकि आश्रय प्रतीक्षा करना सिखाता है और प्रतीक्षा निष्क्रियता बढ़ाती है। अतः ग्रामदानी गाँव को आश्रित नहीं बनना है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज कांग्रेस का राज है, कल कम्युनिस्टों का भी हो सकता है। हमारी राजधानी में एक भूतपूर्व कम्युनिस्ट महिला मेयर की जगह चुनी गयी हैं—'अरुणा आसफ अली' नाम है उनका। बम्बई में भीं एक कम्युनिस्ट भाई मेयर चुने हैं। कम्युनिस्ट कहते हैं 'हमें बंगाल हाथ में लेना है।' कल आसाम में भी मान लीजिये वे ही लोग चुन कर आये और आपको उनसे मदद न मिली, उन्हें आपका यह कार्य पसन्द न आया; तो आप क्या करेंगे ?

ग्रामदान की शक्ति

भूदान कर्मी ग्रामदानी गाँवों को समझायें कि ग्रामदान की शक्ति उनके संगठन पर आधारित है। 'मदद मिलेगी तभी हम आगे बढ़ेंगे, उन्नति कर सकेंगे' यह भावना ग्रामराज्य निर्माण का संकल्प करने वाले ग्रामदानी गाँवों को शोभा नहीं देती। हम मदद लेंगे, परन्तु मदद के लिए बैठे नहीं रहेंगे। हमारा प्रथम कार्य है कृषि-समिति के जरिये संघटन बनाना और गाँव की आवश्यकताओं का हिसाब लगाना। यही हमारा मूलभूत कार्य है। कृषि के कच्चे माल का पक्का माल गाँव में ही तैयार हो, इसके लिए हमारा दूसरा कार्य है ग्रामोद्योग का, जिससे कि गाँव की लक्ष्मी यहाँ से बाहर नहीं जा सकेगी, बह गाँव में ही रहेगी। देहात की सम्पत्ति की गंगा जो शहरों को आबाद करने जाती है, उसे हम कृषि और ग्रामोद्योग के जरिये गाँव की ओर लाना चाहते हैं। यह एक जवाबदारी (जिम्मेवारी) का कार्य है। हमारे व्यवहार से यदि जनता को यह भ्रम हो गया होगा कि भूदानकर्मी ही हमारा सारा बोझ उठाने वाले हैं, वह हमारी भूल है। भूदानकर्मी गाँववालों से श्रम की उपासना चाहते हैं; उनके बल का दर्शन चाहते हैं। जनता की जागृति में ही गाँवों का उज्जवल भविष्य छिपा हुआ है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शासन और पैसा

विश्वासपात्र लोगों की मार्फत हमारा कारोबार चलना चाहिए हमारा अपने में विश्वास चाहिए। शहर की घूसखोरो की इल्लत गाँवों में नहीं आनी चाहिए। पैसा बुरी चीज है, वह सगे भाई का विश्वास नहीं करता। शासन में भो यही है। शासन और पैसा, ये दोनों सदा दुश्मनो पैदा करते हैं। विश्वास और प्रेम इसके पास नहीं फटकता परन्तु अब तो निर्माणकार्य में गाँव की उन्नति के लिए इनके हाथ में शासन और पैसा दोनों आने वाले हैं। अतः 'यह भगवान् की सत्ता व संपत्ति है', ऐसा समझ कर ही चलना होगा।

हिसाब में एक पंसे की भूल को सुधारने के लिए श्रीसंत एकनाथ महाराज ने रात के बारह बजा दिये। न कुछ खाया, न सोये। उस भूल को खोज कर निकाला तभी उनके मन को शांति मिली। क्योंकि उनको मालूम था कि यह पैसा गुरु का धर्म का है, भगवान् का है।

हृदय तथा बुद्धि शुद्ध रखें

आपने भी अपना-अपना स्वामित्व छोड़ा; सारी जमीन गाँव को अर्पित कर दी। अब यह संपत्ति भगवान् की है, यही भावना आपको मन में रखनी चाहिये। गाँव के लोग अज्ञानी हैं, निरक्षर हैं, शुरू-शुरू में कुछ गोलमाल हो, तो वह उनके ध्यान में भी नहीं आयेगा। कार्यकर्ता कहेंगे, "ये लोग अपढ़ हैं, थोड़ा गोलमाल किया है, क्या होगा? कौन देखने वाला है?" हम एक स्थान पर पाप करते हैं और दूसरे स्थान पर, तीर्थ-स्थान पर, उसे धोने जाते हैं। परन्तु जहाँ पुण्यक्षेत्र हैं, वहीं अगर पाप किया गया तो कहाँ धोने जायेंगे? ग्रामदान पुण्यक्षेत्र है, तीर्थस्थान है। विनोबा का प्रत्येक ग्रामदान आपके असम-निवासियों के लिये 'माधवदेव' का गाँव है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'शंकरदेव' का गाँव है। क्या माधवदेव के घर में ही डाका डालेंगे? क्या शंकरदेव के घर को ही लूटेंगे? इस गाँव की भोली जनता का पैसा अब कोई नहीं खायेगा। ग्रामदान यज्ञकार्य है, धर्म कार्य है, यही भावना हमें अपने हृदय में रखना चाहिए। भगवान् सब देख रहे हैं। उनकी आँखे चारों ओर घूम रही हैं।

एक बड़ा उपयुक्त दृटान्त है। गुरु ने शिष्यों को प्रसाद देकर कहा कि वह ऐसी जगह पर जाकर खाओ जहाँ तुम्हें कोई न देख सके। सारे शिष्य अपनी-अपनी जगह खोजने गये। कोई जंगल में कोई पहाड़ी पर, कोई कहीं-कोई-कहीं। और बेचारा एक शिष्य था, उसे कहीं स्थान नहीं मिला। वह बड़ो ही उलझन में पड़ा। निश्चित समय पर सारे शिष्य लौट आये; वह भी लौट आया। गुरु ने उनसे पूछा। सबने कहा, हमने खा लिया। परन्तु उस शिष्य ने कहा—'मैंने नहीं खाया। गुरु ने पूछा-'क्यों नहीं खाया ?' शिष्य कहा–कैसे खाता ? मैं जहाँ कहीं भीखाता, तो अन्तरयामी भगवान् सर्वत्र हैं। उनकी आँख से नहीं बच पाता। तब गुरु ने कहा— 'यही मेरा सच्चा शिष्य निकला !' तात्पर्य यही है कि भगवान् सर्वत्र हैं। इसलिए भूदानकर्मी और ग्रामदानी जनता को हृदय तथा बुद्धि शुद्ध रख कर ही निर्माण का कार्य करना है। यह समस्या आयेगी। उन्हें सावधान करना आपका काम है।[1]

[भूदान यज्ञ २५-७-५८]

---

१. असम के ग्रामदानी गाँव, डाकुआ में ता० १९-४-५८ को किये गये भाषण का अंश।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्नेह-गंगा की धारा में

[१]

—विमला बहन

प्रास्ताविक

३१ जुलाई, १९५९ की बात है। सलोनी संध्या का सुहावना रूप निखर रहा था। इंग्लैण्ड में इस वर्ष "इण्डियन समर" बहार लुटा रहा था। हर रोज सूरज की मोठी धूप इंग्लैण्ड निवासियों के दिल में उमंग और उत्साह को लहरें पैदा करती। कहते हैं, २०-२५ वर्षों में ऐसी सुनहली ग्रीष्म ऋतु इंग्लैण्ड में देखी नहीं गयी थी। तो, उस संध्या को निरभ्र आकाश में अस्तमान सूर्य की आरक्त प्रभा छिटक रहो थी। हम विण्डसर से लन्दन जा रहे थे। श्री अर्नेस्ट बाडर, जिन्होंने व्यक्तिगत स्वामित्व का विसर्जन करके मजदूरों के साथ सह-स्वामित्व स्वेच्छा से ग्रहण किया है, स्वयं गाड़ी चला रहे थे। उनकी पत्नी पीछे की सीट पर बैठी थीं। आँखें मूंद कर विश्राम कर रही थीं। विश्राम की आवश्यकता भी थी। उस दिन सुबह से हम लगातार घूम जो रहे थे। वुलस्टन से सुबह चले थे। वैलिंगबरो, नार्थम्प्टन, बकिंगहॅम, आक्सफर्ड, ईटन होते हुए विंडसर गये और संध्या को विंडसर से लंदन की ओर बढ़ रहे थे। श्री बाडर एक कुशल ड्राइवर हैं। सुन्दर, स्वच्छ रास्ते पर मोटर तेजी से दौड़ रही थीं। सहसा बाडर साहब ने पूछा, 'कहो विमल, इन ४ महीनों की विदेश-यात्रा में तुमने खास क्या देखा? क्या सीखा?'

आकाश की सुन्दरता पर जो चित्त मुग्ध हो गया था, उसको मैं बरबस धरती पर लायी। कह बैठी, 'जहाँ कदम रखा, वहाँ स्वजन देखे, हर जगह स्नेह पाया। सीखा यह कि स्नेह हर मनुष्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के हृदय को नन्दादीप की भाँति आलोकित करता है। स्नेह पूर्व-पश्चिम के भेद नहीं जानता। स्नेह वह अमर सूत्र है, जो भेदों को चीरता हुआ मानव-मानव को जोड़ता है। स्नेह मानव का धर्म है—जैसे प्रकाश सूर्य का, शीतलता जल का और असीमता आकाश का धर्म है।' श्री बाडर अड़सठ साल के वृद्ध पुरुष हैं। चेहरे पर झुर्रियाँ हैं। विशाल ललाट पर शिकनें भी पड़ी हैं। चेहरा हमेशा गम्भीर रहता है। मेरी बात सुनते-सुनते कोमल स्नेह उनकी आँखों से छलकने लगा। आवाज मृदु हुई। स्निग्ध स्वर से कहने लगे—'तुम ठीक कहती हो। यह एकता की प्रतीति दिव्य वस्तु है। विश्व-शान्ति का यही एकमेव आधार है।'

मैं साढ़े चार महीने यूरोप में घूमती रही, मानो स्नेह-गंगा की धारा में खेलती रही। उसकी लहरों के साथ कूदते-फाँदते युगोस्लाविया से इटली और इटली से स्विट्झरलैंड, स्विट्झरलैंड से हालैंड और हालैंड से पश्चिम जर्मनी, इस प्रकार बढ़ती चली गयी। डेनमार्क, नार्वे और स्वीडेन देखा। इंग्लैण्ड में तो ६ हफ्ते रहना हुआ। इस अवधि में अनेक अध्यात्मप्रेमी मिले। कितने ही भारत-प्रेमी मिले। गांधी-विनोबा की विचारधारा याने सर्वोदय ही विश्व-शान्ति का अधिष्ठान हो सकता है, ऐसा प्रत्ययपूर्वक कहने वाले मिले। उन सबकी कहानियाँ लिखने बैठूँगी, तो एक बड़ा पोथा बन जायगा। अन्तर्राष्ट्रीय युवक शिविरों में, समर स्कूलस् में, इण्टरनेशनल पीपल्स कॉलेज में, फार्मर्स स्कूलस् में, फ्रेण्डस् इयरली मीटिंग में, डेविड हागेट के 'कम्युनिटी हाउस' में, मेरी ऑसबोर्न के थॅच्ड कॉटेज में तथा ब्रुडरहॉफ कम्युनिटी में स्नेह की जो अमृत-वर्षा हुई, उसकी कुछ बूँदें स्मृति में संजो कर लायी हूँ। उनको शब्द-रूप देने का यह नम्र प्रयास है। आशा है। जय-जगत् के उपासकों को यह पसन्द आयेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[२]

"मैं लोला को भारत भेजूंगी"

२६ अप्रैल, १९५९ की बात है। बेलग्रेड में हमारा अध्ययन-मण्डल शहर देखने निकला था। साथ में 'सोशलिस्ट अलायन्स ऑफ द वर्किंग पीपल ऑफ युगोस्लाविया' के भेजे हुए दुभाषिया श्री मिलॅको मार्कोविच थे। डॅन्यूब और सावा का संगम देखने हम सिटाडेल हिल पर घूम रहे थे। श्री मार्कोविच श्रम-आन्दोलन की गवेषणासंस्था में आग्नेय एशिया के विभाग में काम करते हैं। उम्र होगी ३० के आसपास। लम्बा छरहरा बदन, गेहुआँ रंग, चौड़ा ललाट। बाल पीछे की ओर मुड़े हुए। काली आँखें और मुस्कुराता चेहरा! भारत में ६ महीने और ब्रह्मदेश में २ वर्ष रहने के कारण भारत की काफी जानकारी रखते हैं। अंग्रेजी पर तो अच्छा प्रभुत्व है। कहने लगे—'मेरी पत्नी भारत पर तथा भारतीयों पर फिदा है! भारतीय चित्रकला और शिल्पकला पर वह आशिक है। एक साम्यवादी साप्ताहिक में काम करती है। शाम को आपसे मिलने आयेगी।'

और शाम को वह आयी। मझोला कद, गोरा रंग, भूरे बाल, छोटी-छोटी आँखों में अपूर्व सौम्यता और स्निग्धता। चेहरे की मुसकान तो जैसे जीवन की सुगन्ध लेकर फुदक रही हो। मैं उसके साथ पैदल घूमने निकल पड़ी। भूदान-आन्दोलन ने मुझे पैदल चलने का शौक बख्शा है। भारत के बारे में हजारों प्रश्न झोरिना पूछने लगी। विनोबा और भूदान के विषय में उत्कट जिज्ञासा से सवाल पूछे उसने। फिर मैंने भी संकोच छोड़ कर उसके घर के बारे में पूछना शुरू किया। पता चला, उसके एक बेटा है। प्यार से कहते हैं उसको—लोला। झोरिना कहने लगी—'मैं काम पर जाती हूँ—जाना पड़ता है। दोनों मिल कर कमाते हैं, तब कहीं जाकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ठीक से जी सकते हैं। लेकिन लोला को नौकरानी के पास दिन भर छोड़ रखना पड़ता है। मेरा जी छटपटाता है। उसको छोड़ कर जाने को मन नहीं करता। लगता है, जैसे उसके साथ अन्याय कर रही हूँ।'

बच्चे को माँ का प्यार बचपन में न मिले, यह भी कोई सभ्यता है ? झोरिना की भावपूर्ण मुद्रा विषाद के बादलों से मलिन हो गयी। शायद आँखें भी डबडबा आयी। मेरा हाथ उसके हाथ में था। मेरा हाथ कुछ जोर से दबाते हुए झोरिना कहने लगी--"विमला तुम्हारा देश कितना अच्छा है ! वहाँ माँ घर पर रह सकती है। रहती भी है। बच्चे माँ की गोद में खेलते हैं ! माँ खिलाती-पिलाती है, तो उसके साथ-साथ बच्चे को प्यार से अच्छे संस्कार भी सिखाती है। काश ! मैं भारत में पैदा होती ! फिर मैं मेरे बच्चे को एक आदर्श भारतीय नागरिक बनाती। लेकिन युगोस्लाविया में हूँ, तो क्या हुआ ? मैं लोला को जरूर भारत भेजूंगी।"

युगोस्लाविया के डेढ़ महीने के मुकाम में हम कई बार मिले। झोरिना ने दो बार हमको घर पर बुलाया। लोला तो सचमुच बड़ा ही प्यारा बच्चा था। होगा डेढ़ साल का। मानो गुलाब का गेंद हों। स्वस्थ, प्रसन्न और हँसमुख। झोरिना ने शाकाहारी भोजन हमें खिलाया। अपने मित्रों से हमारा परिचय कराया। झोरिना से मेरी दोस्ती बढ़ती चली गयी। ६ जून को वह हवाई जहाज के अड्डे तक साथ आयी। मेरे लिए ताजे नयनाभिराम फूल लायी थीं। जहाज में चढ़ते समय भी कानों में झोरिना के शब्द गूंज रहे थे—"मैं लोला को भारत भेजूंगी।"

[भूदानयज्ञ ६ नवम्बर '५९]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[३]

"बेटी मैं प्रतीक्षा करूँगी"

ज्युरिच में भरत नानावटी तथा गजेन्द्र झवेरी के साथ चाय पी रही थी। इतने में दरवाजे की घंटी बजी। दो हँसमुख नवयुवक अन्दर आये। भारतीय पद्धति से हाथ जोड़ कर उन्होंने कहा "नमस्ते"! हड़बड़ा कर मैं उठ खड़ी हुई। अभिवादन करके उन्हें बैठने का अनुरोध किया। एक युवक ने मुझसे कहा—"आप ही विमला ठकार हैं?" जवाब की न अपेक्षा थी, न आवश्यकता थी। युवक कहता गया: "बर्न के भारतीय राजदूतावास से आपकी जानकारी हमें प्राप्त हुई। यह रॉबर्ट मेरा छोटा भाई है। भारत जाकर भूदान-आन्दोलन में काम करना चाहता है। आप यहाँ होटल में ठहरने के बजाय हमारे घर चलिये? घर पर ठहर कर अपना काम कीजिये और फुरसत के समय में हम दोनों को विनोबा तथा भूदान के विषय में बतलाया कीजिये।" रॉबर्ट ने भाई की बात खतम होने से पहले ही 'हाँ बहन, जरूर हमारे घर चलिये'–कहना शुरु किया और कहता गया कि "हमसे बन पड़ेगी उतनी सेवा हमारा सारा परिवार करेगा।"

ज्युरिच कँटॉन की सरकार ने मेरे लिए कार्यक्रम बनाया था। दिन भर भिन्न-भिन्न संस्थाओं में जाना था। शाम को काम समाप्त होने पर होटल लौटी, तो देखा कि वॉल्टर-रॉबर्ट की युगलजोड़ी एक छोटी-सी पुरानी मोटर लेकर वहाँ हाजिर है। सामान मोटर में रखा गया। हम ज्युरिच से तीन-चार मील दूर कृषि विद्यालय की बगल में एक छोटी-सी कॉलनी में पहुँचे। सामने एक बड़ा-सा मैदान था। उसके परले किनारे बड़ी-सी पहाड़ी थी, जिस पर वृक्षों के झुरमुट थे। आसमान में पंछियों के झुण्ड चहकते हुए कहीं जा रहे थे। हम घर पहुँचे। मजदूरों की चाल में वॉल्टर के माता-पिता रहते थे। पिता बढ़ई है—यह सुना। चार कमरे का छोटा-सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मकान था। एक रसोई का कमरा। एक ड्राइंग रूम। एक कमरा वॉल्टर-रॉबर्ट के उठने-बैठने और सोने का, और चौथा उनके माता-पिता का शयनागार। वॉल्टर था बड़ा लड़का। उम्र होगी २१ की। रॉबर्ट १९ साल का और उनकी बड़ी बहन अरना, होगी २६ साल की। उसकी करुण कहानी सुन कर हृदय वेदना से भर गया। कोई एक-ढेढ़ साल पहले अरना ने जीवन-साथी चुन कर विवाह निश्चित किया होगा। पिछले साल वह बीमार हुई। अस्पताल में लिवा ले गये। जाँच-पड़ताल हुई। पता चला कि कैन्सर है! ४ महीने अस्पताल में पड़ी रही। बाद में घर लौटी, लेकिन बड़ी बहादुर और समझदार लड़की। अलग कमरा लेकर रहने लगी।

मेरे जाने से सारा एबनोथेर परिवार प्रसन्नता से खिल उठा। वॉल्टर-रॉबर्ट ने अपना कमरा मुझे दिया। कमरे में पाँव रखा तो लगा, जैसे किसी भारतीय घर में प्रवेश किया है! दीवार पर भारत का बड़ा नक्शा टँगा था। विनोबा की छवि दूसरी दीवार पर मुस्करा रही थी, तो टेबल पर भगवान् बुद्ध समाधिस्थ थे। किताबें शेल्फ पर तरतीब से रखी हुई थीं। गांधीजी तथा नेहरू की पुस्तकें, स्वामी विवेकानन्द तथा रामतीर्थ की पुस्तकें, रोमा रोलाँ की और लुई फिशर की भारत-विषयक पुस्तकें, अफ्रीका पर अनेक पुस्तकें, इस प्रकार सरसरी नजर से देख गयीं।

मेरे लिए शाकाहारी भोजन बनाया था। पूरा परिवार स्नेहशील एवं आतिथ्यशील था। वैसे था जर्मन परिवार। घर पर बोलते भी थे जर्मन भाषा। रॉबर्ट की माँ अंग्रेजी समझ नहीं सकती थी ओर मैं जर्मन समझ नहीं सकती थी। फिर भी हम एक-दूसरे को बिना भाषा के समझ सकीं! ड्राइंग रूम में रॉबर्ट के पिता के अनेक पैंटिंग्ज टँगे हुए थे। वह दिखा कर माँ मेरे साथ खुश हो हँसती थी।

रात में सारे परिवार ने भूदान के बारे में पूछा। रॉबर्ट के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारत में कई मित्र हैं। भूदान का जितना अंग्रेजी साहित्य मिल सका, वह सारा रॉबर्ट-वॉल्टर पढ़ गये थे। भारत जाकर भूदान में काम करने के लिए रॉबर्ट पैसा इकट्ठा कर रहा है। बड़ा होनहार लड़का है! वह एक दिन भारत जरूर आयेगा।

चार दिन उनके घर पर मैं रही। उनके लिए भारतीय ढंग की रसोई बनायी। आलू-गोभी की तरकारी उन लोगों ने कैसे छक कर खायी थी, वह आज भी याद आता है! रॉबर्ट की माँ ने मेरा सूटकेस खोल कर सारे कपड़े देखे। उनकी पैनी नजर ताड़ गयी कि दो महीने से लगातार घूमते रहने के कारण मेरे कुछ कपड़े फट गये थे। कुछ पर लोहा नहीं किया गया था। कुछ ऊनी कपड़ों को धोने की जरूरत थी। दूसरे दिन शाम को काम पर से लौटी तो देखा कि माँ ने सब ठीक-ठाक करके रखा था। मैं सकुचाई। भीतर ही भीतर मारे संकोच के सिमट गयी। माँ ने कंधे पर हाथ रख कर कहा—"जैसे ये तीन, वैसे तू चौथी। तू भी मेरी लड़की है। मेरी भारतीय लड़की! संकोच नहीं करना बेटी—यह तो माँ का काम माँ ने किया।"

उस परिवार के बारे में बहुत कुछ लिख सकती हूँ। लेकिन संयम से लिखना होगा, वरना स्विटजरलैंड से आगे बढ़ना मुश्किल होगा। हम आपस में इस प्रकार घुलमिल गये कि चार दिन बाद जब विदा होने का समय आया, तो सबके हृदय भारी थे। आँखों में आँसू थे। मेरा माथा चूम कर माँ ने कहा—"मैं प्रतीक्षा करूँगी बेटी—जल्दी वापस आना।" रॉबर्ट-वॉल्टर ने कहा—"विनोबाजी को हमारे प्रणाम निवेदन करना बहन!"

आज रॉबर्ट का हिन्दी पत्र आया। लिखता है—"प्रिय बिमल टैरा मिजाज कैसे है? मेरा बुरा हिन्दी को हँसना नहीं।" हँसूंगी क्यों मेरे भाई! तुम्हारी लगन, निष्ठा और भारत-निष्ठा के सामने मैं नतमस्तक हूँ।●

[२० नवम्बर '५९]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[४]

"आप विनोबा को पहचानती हैं ?"

मैं हँनोवर से कोपेनहेगन जा रही थी। दूसरे दर्जे के डिब्बे में उस दिन भीड़ कुछ कम थी। मैं "स्विट्जरलैंड इन ए पर्सपेक्टिव" नाम की किताब पढ़ रही थी। काफी दिलचस्प किताब थी। कुछ समय बाद किसी ने कोमल स्वर में धीरे से पूछा—"आप विनोबा को पहचानती हैं ?" कानों पर मुझे यकीन नहीं हुआ। सोचा, यहाँ पश्चिम जर्मनी में विनोबा के बारे में कौन पूछेगा ? शायद भ्रम हुआ हो ! बात अनसुनी-सी करके मैं फिर पढ़ने लगी। मन ही मन मैंने कहा—यह कोई भारत थोड़े ही है कि लोग विनोबा को जानेंगे। यह है योरप ! इतने में किसी ने पूछा—"माफ कीजिये, लेकिन मैं पूछती हूँ, क्या आप विनोबा को पहचानती हैं ?"

अबोध शिशुवत् मैंने पूछा—"कौन विनोबा ? किसके बारे में आप पूछ रही हैं ?" जवाब आया—"विनोबा, दी सेकंड गांधी आफ इण्डिया"—विनोबा, जो भारत के नये गांधी हैं।

चौंक कर प्रश्नकर्त्री की तरफ मैं गौर से देखने लगी। १३-१४ साल की एक जर्मन लड़की मुझसे विनोबा के बारे में पूछ रही थी। निरोगी, स्वस्थ शरीर अपने में सुन्दरता समाये रहता है। उसकी रग-रग में से सुन्दरता फूट पड़ती है। स्वास्थ्य की सुगन्ध वातावरण को भर देती है। लड़की की आँखों में जिज्ञासा का लुभावना भाव था। आपने कभी बच्चों को प्रश्न करते देखा है ? सारा स्वरूप बदल जाता है, उनका, प्रश्न पूछते समय। भौंहें चढ़ जाती हैं, आँखें जिज्ञासा में चमकने लगती हैं, होंठ सिमट कर प्रश्न-चिह्न बन जाते हैं। मासूम बालक क्षण में सजीव प्रश्न ही बन जाता है। भोले बालकों का शरीर वक्तृत्वमय बन कर उद्दीप्त भरा हुआ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुतूहल से निहारने लगता है, मानों विश्व का अजब महान् सत्य उनको सामने वाला व्यक्ति दिखाने बैठा हो।

मुझे शरारत सूझी ! मैंने पूछा—"ये विनोबा करते क्या हैं ?" लडकी अपनी सीट पर से उठकर मेरे पास आयी। धम्म से बगल में बैठ कर मेरे सामने दोनों भौंह नचाते हुए कहने लगी--"ओ हो ! मालूम पड़ता है भारतीय होकर आप 'भूदान' आन्दोलन के विषय में कुछ जानती नहीं !" बेचारी 'भूदान' कहे भी तो क्या कहे ? हिन्दी-मराठी शब्दों को तोड़-मरोड़ कर कुछ अजब-सा उच्चारण करना गैर-भारतीयों का खेल ही है। हम भी कुछ कम नही हैं। अंग्रेजी भाषा के शब्द जिस विश्वास से बोलते हैं, उनके सामने तो स्वयं अंग्रेज हार मान जायँ। धड़ल्ले के साथ हम जब 'इण्डियन इंग्लिश' बोलते हैं, तो हमको कहाँ तनिक भी संकोच होता है ? खैर, तो लड़की मेरे अज्ञान पर रहम खाते हुए बतलाने लगी—"देखो, तुम्हारा भारत बहुत गरीब है न ?" मैंने स्वीकार किया कि वास्तव में है तो भारत बहुत ज्यादा गरीब। लड़की ने कहा—"इस गरीबी को मिटाने के लिए गांधी के शिष्य विनोबा गाँव-गाँव पैदल घूमते हैं। ज़मीन माँग कर गरीबों को दिलाते हैं। बिलकुल ईसा मसीह के जैसी करुणा विनाबा में है। उन पर ईसा के आशीर्वाद सदैव उतरेंगे।"

मेरी पलकें गीली हो चुकी थीं। वह लड़की नहीं, क्रिश्चियन धर्म बोल रहा था। 'ईसा के आशीर्वाद विनोबा पर उतरते रहेंगे।'—यह सुन कर हृदय पुलकित हो उठा। मैंने लड़की से कहा—"माफ करना बेटी, मैंने तुझे बेकार छेड़ा। मैं भूदान आन्दोलन में काम करती हूँ। इतना ही नहीं, विनोबा से मेरा व्यक्तिगत परिचय भी है। विनोबा का मुझ पर बहुत स्नेह है। सच कहूँ, स्नेह करना उनका स्वभाव ही है।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं विनोबा को पहचानती हूँ, यह सुनकर लड़की उछल पड़ी। छलांग मारकर सामने वाली सीट पर बैठी एक प्रौढ़ स्त्री के पास गयी और उल्लासमय शब्दों में कहने लगी—'माँ वह भारतीय विनोबा को पहचानती है। उनके साथ काम करती है। चलो, उनसे बात करो।' वह स्त्री भी मेरे पास आकर बैठी। परिचय हुआ। ब्रेमेनहावन में वह समाजशास्त्र तथा इतिहास की प्राध्यापिका है। उसकी लड़की परसाल अन्तर्राष्ट्रीय ग्रीष्म शिविर में गयी थी। वहाँ किसी नार्वेजियन वक्ता का "विनोबा और उनका जीवन-कार्य" इस विषय पर भाषण हुआ था। बस, उस दिन से लड़की लगभग प्रतिदिन विनोबा के बारे में सोचती रहती है। कहती है, शिक्षण समाप्त होने पर विनोबा के पास जाऊँगी।'

फिर क्या था? प्रश्नों की झड़ी लग गयी। विनोबा-नेहरू का एक चित्र मेरे पास था, वह मैंने उसको दिया। विल्फ्रेंड बेलॉक की नयी किताब–"गाँधी-विनोबा की नयी समाज क्रान्ति" मेरे पास थी, वह भी उसको दी। उस बहन ने अपनी तस्वीर और एक बॉल-पेन्सिल मुझे भेंट दी। चार घंटे हमने साथ सफर क्या किया, जीवन भर के लिए मित्र बन गये। समाज-शास्त्र तथा इतिहास के बारे में चर्चा हुई। उस बहन से मुझे काफी सीखने को मिला। कान्टिनेन्ट पर यूनिवर्सिटीयों का काम कैसे चलता है और प्राध्यापक-छात्र सम्बन्ध कैसे हैं, इत्यादि पर भी बातचीत चली।

अपने घर चलने के लिए उन माँ-बेटी ने मुझे आग्रहपूर्वक निमन्त्रित किया। जब एक-दूसरे से विदा होने लगे, तो लगा जैसे पुराने साथी-बिछुड़ रहे हों!

डेनमार्क, नार्वे तथा स्वीडन होते हुए जब मैं इंग्लैण्ड पहुँची, तो उस जर्मन प्राध्यापिका का पत्र लंदन में मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। जो पेन्सिल भेंट दी थी, उसके 'रीफिलस् भी पत्र के साथ भेजे हुए

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

थे और बहन ने लिखा था कि भारत लौटने से पहले हमारे घर आना। हमारे मित्रों को सर्वोदय और भूदान के विषय में सुनने की उत्कंठा है।

कहने को तो मैं विदेश में घूम रही थी, लेकिन कोई पराया-सा लगा ही नहीं। बस में, रेल में, जहाज पर कोई-न-कोई ऐसे मिल ही जाते थे, जिनको-गांधी-विनोबा में दिलचस्पी थी और जो भूदान के बारे में जानना चाहते थे।

आज भी जर्मनी की याद आती है, तो ट्रेन में मिली हुई उस नन्हीं-सी बिटिया का प्रश्न कानों में गूँज उठता है—"क्या आप विनोबा को पहचानती हैं ?" वह व्यक्ति का प्रश्न नहीं था, वह योरप भारत से पूछ रहा था कि 'क्या विनोबा को पहचानते हो ? आठ साल से जो गाँव-गाँव में घूम कर जो ग्राम-स्वराज्य का अलख जगा रहा है, उसकी वाणी में युग का आह्वान मुखरित हुआ है, यह चीन्हते हो या नहीं ?'

भारत क्या जवाब देगा ? [भूदानयज्ञ २७ नवम्बर '५९]

[५]

"मैं अस्पताल में मरना नहीं चाहता"

दो जुलाई की सुबह सात बजे मैं ओस्लो पहुँची। कोपेनहेगन से जहाज द्वारा एक जुलाई की शाम को रवाना हुई थी। जहाज का सफर पहली बार कर रही थी, इसलिए काफी तकलीफ हुई। डेक की मुसाफरी वैसे भी तकलीफदेह तो रहती ही है। खासकर रात को जब जहाज झूले की तरह झूलने लगा, तो जी मिचलाने लगा था। उलटियों ने भी थोड़ा सताया था, जब गँगवे (गलियारी) पार करके बंदरगाह पर उतरी, तो एक ऊँचे-पूरे हँसमुख वृद्ध पुरुष ने स्वागत किया। आप थे श्री डेडरिच लुन्द। श्री डेडरिच लुंद तथा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उनकी पत्नी सिगरिड लुंद नार्वे के ख्यातनाम 'क्वेकर' हैं। इण्डो-नार्वेजियन फिशिंग स्कीम के सिलसिले में भारत आये थे, शायद पाँच साल दक्षिण भारत में, केरल में रहे थे। आर्यनायकम् पति-पत्नी, मार्जरी साइक्स तथा सेवाग्राम के सारे परिवार से, तालीमी संघ के सदस्यों से लुंद पति-पत्नी का खासा अच्छा स्नेह-सम्बन्ध था। मार्जरी बहन के परिचय-पत्र के कारण ही मैंने श्री लुंद से पत्र व्यवहार किया था।

पहले तो उन्होंने यह बतलाते हुए माफी माँगी कि उनकी पत्नी घर पर नहीं मिलेंगी। सिगरिड लुंद छुट्टियाँ मनाने पहाड़ों में कहीं चली गयी थीं। टैक्सी में बैठे-बैठे श्री लुंद ने ओस्लो के प्रेक्षणीय स्थानों की जानकारी दी। घर पहुँचे। अहाते में सुन्दर-सा बगीचा था। किस्म-किस्म के फूल चारों तरफ खिले हुए थे। छोटा-सा दुमंजिला मकान था। जिस कमरे में मेरा सामान रखा गया था, वहाँ कदम रखने पर देखा कि पलंग पर संबलपुर डिजाइन का खादी का पलंगपोश बिछा हुआ था। टेबल पर खादी का ही मेजपोश था।

स्नानादि से निवृत्त होकर डायनिंग रूम में भोजन के कमरे में गयी। टेबल पर शाकाहारी नाश्ते का सामान सजा कर रखा हुआ था। एक छोटा-सा पुर्जा मेरे नाम लिखा हुआ था। श्री लुंद को जरूरी काम से बाहर जाना पड़ा था, इसलिए खेद प्रकट करते हुए उन्होंने क्षमा-याचना की थी। दिन भर मैं कोऑपरेटिव युनियन के दफ़तर में थी। शाम को लौटी तो रसोई घर से भारतीय भोजन की सुगंध आ रही थी। श्री लुंद कहीं भी नहीं दिखे, इसलिए रसोई घर की ओर मुड़ी। वहाँ एक केरल कन्या और श्री लुंद भोजन बनाने में व्यस्त थे। मैंने कहा—यह क्या कर रहे हैं आप? लुंद ने जवाब दिया—"तुम्हारे बहाने भारतीय भोजन का मजा लूटना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चाहता हूँ।" मैंने उनके हाथ से चावल का बरतन ले लिया और कहा कि आप चल कर बाहर बैठें, मैं अभी आयी। टेरेसा से, उस केरल-कन्या से मालूम हुआ कि वह ओस्लो में नर्सिंग सीखती है। श्री लुंद पति-पत्नी स्कॉलरशिप देकर उसे नार्वे लाये हैं। भोजन के बाद गपशप चली। भारत के संस्मरण सुनाते-सुनाते श्री लुंद गद्गद हो उठे। गरीब भारत के हृदय की जो अमीरी उन्होंने देखी थी, उसका स्मरण आते ही श्री लुंद भावविभोर हो उठे थे। उन्होंने कहा कि "भारत का 'मानव' योरप के मानव से कहीं अधिक प्रगल्भ है। शिक्षित न होने पर भी सुसंस्कृत है। आध्यात्मिकता उनके खून में घुलमिल गयी है।"

सोने से पहले श्री लुंद प्रार्थना करना चाहते थे। नीचे कालीन बिछा हुआ था। उस पर हम तीनों जा बैठे। स्थितप्रज्ञ के श्लोक, भजन, एकादश व्रत—'यथासांग' (विधिवत्) प्रार्थना चली। प्रार्थना समाप्त होने पर श्री लुंद मेरे पास आये। मेरे कंधे पर हाथ रख कर कहने लगे—भाई चाइल्ड, बेटी, मैं बहुत कृतज्ञ हूँ। मुझे इस प्रार्थना से बहुत शान्ति मिला करती है। बापू की प्रार्थना चित्त को प्रसन्न कर देती है।"

दूसरे दिन ओस्लो से २० मील पर एक गाँव में हमें जाना था। अन्तर्राष्ट्रीय युवक-शिविर में मुझे भाषण करना था। लुंद मुझे ले गये। शिविर में २५ युवक थे, ५-६ युवतियाँ भी थीं। भारत की दो लड़कियाँ थीं। एक बम्बई की रोहिणी भागवत और दूसरी मद्रास की वल्लिचारी। घाना की एक बहन थी, तो तीन थी फ्रांस की। इंग्लैण्ड, जर्मनी, स्वीडन तथा नार्वे के युवक शिविर में थे। प्रास्ताविक भाषण में शिविर-संचालक ने भूदान-आन्दोलन का इतिहास तथा स्वरूप संक्षेप में बतलाया और कहा कि हम शान्ति-सेना के विषय में जानना चाहते हैं। लगभग ४० मिनट शान्ति-सेना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तथा लोकशाही में शान्ति-सेना की अनिवार्यता पर मैंने विचार रखे। श्री लुंद एकाग्रचित्त हो सुन रहे थे। प्रवचन के बाद कुछ समय तक प्रश्नोत्तर चले। लौटते समय श्री लुंद कहने लगे—"क्या ही अच्छा होता, तुम और कुछ दिन नार्वे में रह कर कालेजों में जाती और विनोबा की बात बतलाती !"

तीसरे दिन हम ओस्लो यूनिवर्सिटी में समाज-शास्त्र के प्राध्यापक का काम करने वाले नवयुवक गलतुंग से मिलने गये। श्री गलतुंग 'पीस रिसर्च' (शान्ति सम्बन्धी शोध-कार्य) का काम करते हैं। "पोलिटिकल इथिक्स ऑफ गांधी" नाम की किताब भी उन्होंने लिखी है। भूदान सम्बन्धी किताब लिखना चाहते हैं। उनके घर लगभग २-३ घंटे हमने बिताये। विनोबा और भूदान पर ही चर्चा चली। हिन्दुस्तान का नक्शा लेकर विनोबाजी की पद-यात्रा की दिशा तथा मार्ग गलतुंग ने पूछा। शास्त्रीय प्रज्ञा की मदद से श्री गलतुंग, श्री जीन शार्प तथा उनके साथी सर्वोदय-विचार का तलस्पर्शी अन्वेषण कर रहे हैं। काश ! हमारे भारतीय तरुणों में ऐसी शुभ प्रेरणा होती !

ओस्लो में मेरी वह आखिरी रात थी। दो दिन तक भूदान-सर्वोदय की बातें सुनकर श्री लुंद बड़े प्रभावित हुए थे। रात को उनके लिए मैंने भजन गाये। कमरे में धूपबत्ती जल रही थी। मैंने ही जलायी थी। भजन समाप्त हुए। कमरे में नीरव शान्ति थी। श्री लुंद की भी मूँदी हुई आँखें अश्रुप्लावित थीं। मैंने उनके पास जाकर धीरे से पुकारा—चाचा ! हाँ, मैंने उनको चाचा कहा। तीन दिन से उस वृद्ध सज्जन ने जिस स्नेह से मेरा आतिथ्य किया था और मैंने अपना घर समझ कर जिस स्नेह से उनके सब कामों में हाथ बँटाया था—रसोई बनाने में, बरतन मलने में, बगीचे को पानी देने में और घर की सफाई में—उस स्नेह ने हमें एक बना दिया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

था। स्नेह के सामने देश, धर्म, वर्ण की दीवारें अपने आप ढह जाती हैं। तो मैंने कहा, "चाचा, आपको भजन पसन्द आये, इससे मैं बहुत खुश हूँ।" रूमाल से आँसू पोंछते-पोंछते श्री लुन्द चाचा मुस्कराये। उठ खड़े हुए। मुझे सीने से लगा कर भर्रायी आवाज में उन्होंने कहा—"परमात्मा सदैव तेरा साथ दें।" मेरा माथा चूम कर उन्होंने भाव भरे शब्दों में कहा, "तूने चाचा कहकर मेरे मन का भाव प्रकट किया। मुझे लगता है जैसे बिछुड़ी बेटी को ही फिर पाया मैंने। भजन का अर्थ मैं समझा नहीं। लेकिन भारतीय संगीत में, जाने कैसा जादू है! जैसे करुणारस में भिगो-भिगो कर स्वररचना की हो।"

आधी रात तक बातें चली। श्री रामकृष्ण परमहंस, श्री विवेकानन्द से लेकर अरविन्द, श्री रमण महर्षि, विनोबा और श्री कृष्णमूर्ति तक अनेक योगी, संत और ऋषियों के बारे में बातें चलीं।

हम उठने को हुए, तो लुन्द चाचा ने कहा—'विमल, मैं अब, ७२ साल का हूँ। इच्छा है कि भारत में आकर मरूँ। ज्यादा-से-ज्यादा २-३ साल और काम कर सकूँगा। फिर शरीर क्षीण होगा। जर्जर होगा। बीमार हो जाऊँगा। फिर मुझे रखा जायेगा यहाँ के किसी अस्पताल में। लेकिन सच कहूँ, मैं अस्पताल में मरना नहीं चाहता। मरना चाहता हूँ उनके बीच, जो मुझ पर स्नेह करते हों। भारत में वृद्धों की सेवा करने में तुम लोग अपना गौरव मानते हो। यहाँ वह भावना = ही नहीं।"

अब रुदन मेरे भीतर उमड़ने लगा। उस वृद्ध की व्यथा मेरे अंतरंग को बींध गयी। मैंने कहा—"अभी तो आपने मुझे बेटी कह कर पुकारा था। आप क्यों अस्पताल में मरेंगे चाचा? आइये, भारत जरूर आइये। मैं आसाम के ग्रामदानी गाँवों में काम करती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हूँ। वहाँ मेरी छोटी-सी बाँस की कुटिया है, वहाँ रहिये। हो जाय हम लोगों के सेवा भाव की परीक्षा!"

हम दोनों हँस पड़े। दूसरे दिन सबेरे वर्षा ने भीषण रूप धारण किया। ऐसे बरस रही थी, जैसे किसी का बदला लेने की ठानी हो। उस मूसलाधार वर्षा में मेरे बार-बार मना करने पर भी चाचा स्टेशन आये। मुझे गाड़ी में चढ़ा कर अनमने से कहीं चले गये। मैं सोचने लगी—क्यों एकाएक चले गये होंगे? इतने में लम्बे डग मारते हुए श्री लुँद चाचा ट्रेन के पास आये। मेरे हाथ में फलों की की टोकरी, चॉकलेट तथा बिस्किट के डिब्बे थमा कर चुपचाप खड़े हुए।

कभी-कभी वाणी की अपेक्षा मौन में अधिक वाक्सिद्धि होती है। मुझे भी सूझता नहीं था कि उनको धन्यवाद कैसे दूँ! वे भी कुछ कह नहीं पा रहे थे। बहुत मुश्किल से उन्होंने कहा—"विमला, मुझे तुम्हारी बहुत याद आयेगी।" [भूदानयज्ञ ११ दिसम्बर '५९]

[६]

हालैण्ड में बनारसी ब्लाउज-पीस

स्विट्ज़रलैंड के बाद बौन और कोलोन होते हुए रॉटरडैम गयी। स्टेशन पर श्री मुंत्झ अपने नौ साल के लड़के के साथ आये थे। एक होटल में सामान रखा गया। नहाने-धोने से फारिग होकर हम श्री मुंत्झ के घर गये। चाय और नाश्ते के साथ-साथ भारतीय संगीत के रेकार्डस् सुनाये गये। बाद में श्री मुंत्झ, उनकी पत्नी और लड़का बॉब के साथ मैं घूमने निकली। पहले तो हम गये ॲमस्टरडैम। राजधानी की नगरी, लेकिन शान्त और गम्भीर! पुराना राजमहल, शहीद स्मारक, फव्वारा वगैरा देख कर हम हैग गये। वहाँ एक इण्डोनेशियन रेस्तराँ में भारतीय भोजन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बनवाया गया। इण्डोनेशियन होटल के कर्मचारी भारतीय व्यक्ति को देख कर प्रसन्न हुए। जब उनको पता चला कि मैं विशुद्ध शाकाहारी भोजन करती हूँ, तो उनका मुखिया धीरे से मेरे पास आया और स्नेह से कहने लगा—"चिन्ता मत कीजिये। बिलकुल शुद्ध शाकाहारी भोजन, चावल और सब्जी बना कर लाता हूँ। आप 'लार्ड' नहीं खायेंगी। हाँ-हाँ, मैं जानता हूँ, आपके लिए ऑलिव के तोल्मे बनाऊँगा।"

उसकी बातचीत का ढंग बिलकुल आत्मीयता का और घरेलू था। उसकी आस्था ग्राहक के लिए नहीं, भारतीय बहन के लिए थी। मेरे अंतस्थल को उस स्नेहस्पर्श से जो शीतलता मिली, उसको शब्दों में बाँधना बूते से बाहर की बात है।

जहाँ बैठी थी, वहाँ से एक पार्क, बगीचा दिखायी दे रहा था। हरे भरे वृक्ष और नाना प्रकार के फूल देखकर आँखें ठण्ढक पा रही थीं। वेटर के स्नेह भरे शब्दों से हृदय सुखी हो रहा था। यदि हमारे पास कोई अनमोल निधि है तो वह है—प्रेम। परस्पर सम्बन्धों का आधार प्रेम पर रखना ही एक-दूसरे को सुखी बनाने की कुञ्जी है।

उस दिन मुझे सचमुच बहुत अच्छा भोजन मिला। होटल के मैनेजर को तथा सब कर्मचारियों को हृदयपूर्वक धन्यवाद देकर हम जाने निकले।

इतवार था। समुद्र के तट पर पहुँचे, तो देखा कि एक तरफ सागर की लहरें उठती-मिटती खेल रही हैं, तो दूसरी तरफ मानव-समुद्र को ज्वार आ रहा है। हजारों, अक्षरशः हजारों स्त्री-पुरुष झुण्ड बना कर इधर-उधर घूम रहे थे। कोई होटल के प्रांगण में बैठे आइस्क्रीम खा रहे थे। कोई संगीत की लय में लय मिला कर नाच रहे थे। कोई तैरने की तैयारी में थे, तो कोई नहा कर धूप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में आराम से लेटे हुए थे। चारों तरफ भीड़ थी। छोटी-छोटी दूकानें थी, बुक-स्टाल्स थे। मुझे बड़ा अजीब लगा। भारतीय मेले की जैसी भीड़ थी। फर्क इतना ही, और वह बहुत बड़ा फर्क था कि गन्दगी या गाली-गलौज का नामोनिशाँ वहाँ नहीं था। लेकिन इतवार को आराम करने के लिए जो लोग घर से निकलते हैं, वे इतनी भीषण भीड़ में और कोलाहल में कैसे विश्राम पाते होंगे, यह सवाल बराबर मन में उठा !

मोटर रखने की जगह पर सात-आठ सौ से ज्यादा मोटरें खड़ी थीं। मैंने श्री मुंत्स से प्रार्थना की कि जल्दी वापस चला जाय। भीड़ में जी घबराता है। जाने कैसी परेशानी होने लगती है। मोटर तक पहुँचने में हमें ३५ मिनट लगे। जब उस समुद्र किनारे तीन-चार मील दूर गये, तब कहीं जाकर मैंने चैन की साँस ली।

शाम को घर लौटे। श्री मुंत्झ भारत दो बार आ चुके हैं। गांधी-विनोबा के नाम एवं कार्य की जानकारी रखते हैं। साहित्य भी रखते हैं। छोटे जहाज बनाने का उनका एक कारखाना है। हम लोग भूदान के बारे में बातचीत कर रहे थे, इतने में छोटा बॉब्र अपनी सारी किताबें और खिलौने मुझे दिखाने लाया। उसके माता-पिता डाँटने को हुए। मैंने उन्हें रोका। बॉब ने मैत्री के सबूत के लिए ही तो सारा सामान लाया था। बॉब के साथ बैठ कर मैंने एक-एक किताब देखी, चित्र देखे, खिलौने देखे। इतने में वह भागा ! दौड़ते हुए लौटा, तो देखा कि उसके सिर पर गाँधी टोपी, हाथ में काली ऊँची टोपी, बगल में काश्मीरी टोपी थी। टोपी-सम्मेलन था ! हम खिलखिला कर हँस उठे। उसने एक टोपी मुझे पहना दी। हम दोनों ने एक-दूसरे को 'सैल्यूट' किया। उठ खड़े हुए। बॉब ने अपना एक फोटो मुझे दिया ! कहने लगा—'तुम मेरे दोस्त हो, इसलिए देता हूँ। अब तुम्हारा फोटो दो।' भाग्यवश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरे पास पासपोर्ट के लिए निकाले हुए फोटो की कुछ प्रतियाँ बची थी। उनमें से एक प्रति बॉब को दी।

रात को लौटने लगी तो बॉब मोटर तक पहुँचाने आया। मुझे अपने पास रोकना चाहता था, पर मैं रुक न सकी। उसका चेहरा मुरझाया। अश्रुसिक्त आवाज में उसने कहा—'गुड नाइट'। मोटर चली। रात को नींद में बॉब की गांधी टोपी लगायी हुई छबि मुसकरा रही थी।

दूसरे दिन मुंत्झ-दम्पति स्टेशन पर आये विदा करने। मेरे हाथ में एक छोटा-सा बण्डल थमाने लगे। पूछा, क्या है? बोले, खोल कर देखिये। खोला तो बनारसी जरीदार ब्लाउज-पीस चमचमा रहा था। मेरी नजर में आश्चर्य का भाव देख कर श्रीमती मुंत्झ ने कहा—'मित्र जिस देश का हो, उस देश की चीज हम उसको भेंट करते हैं, ताकि उसका उपयोग किया जाय। विभिन्न देशों की छोटी-मोटी चीजें घर में सजा कर रखी हैं।'

दूसरों की भावना का कितना सूक्ष्म विचार वे लोग करते हैं। व्यवहार में सौहार्द व्यक्त करना वे जानते हैं और मैं थी कि धन्यवाद देने के लिए मुझे शब्द नहीं मिल रहे थे। यह मैंने बार-बार अनुभव किया कि भावना जब उत्कट हो उठती है, तो मुझे शब्द ढूंढ़े नहीं मिलते। मानों, मुझे कोई धक्का देकर शब्दसृष्टि से बाहर निकाल रहा हो। वाणी हठात् तिरोधान हो जाती है और मैं बुत-सी हो जाती हूँ। वही हाल उस दिन हुआ। ज्यों-त्यों संकोच भरी मुस्कान होठों पर आयी होगी। धन्यवाद का भाव शायद दृष्टि में व्यक्त हुआ होगा। गार्ड ने सीटी बजायी। मैंने दोनों हाथ जोड़ कर उस स्नेहशील दम्पति को प्रणाम किया। गाड़ी चली। मेरी सीट पर वह बनारसी कपड़ा चमचमा रहा था। मन ही मन मैं हंसी। हालैंड में भेंट मिला बनारसी कपड़ा! ● [१८।१२।५९]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक आदर्श विद्यालय

विमला बहन

मैं गत ता० १४ से १९ दिसम्बर तक बम्बई में थी। उस दरमियान विलेपार्ले के 'चंदूलाल नाणावटी कन्या विनय मन्दिर' में जाने का मौका मिला। साढ़े दस बजे विद्यालय पहुँची। उस समय शिक्षक और छात्राएँ मिल कर सामूहिक कताई कर रही थीं। साथ में प्रार्थना भी चल रही थी। मेरे प्रवचन के बाद मुख्याध्यापक ने विद्यालय की सारी जानकारी दी। विद्यालय में काम करने वाला नौकर कोई नहीं है। शिक्षक और छात्राएँ ही मिल कर पूरे विद्यालय की सफाई का काम करते हैं। समूचा विद्यालय खादीधारी है। वातावरण में नम्रता, विनय और सादगी का सौरभ है। बम्बई में वह विद्यालय, मानो लंका में विभीषण का घर है।

यह विद्यामन्दिर जून' ५४ से 'श्री चन्दूलाल नाणावटी वीमेन्स इनस्टिट्यूट एण्ड गर्ल्स हाईस्कूल' के उपक्रम में बनाया गया। विद्या-मन्दिर में श्रेणी ५ से ११ तक शिक्षा दी जाती है। कन्या सुज्ञ गृहिणी बने, इस दृष्टि से प्रत्येक श्रेणी में गृह-विज्ञान की शिक्षा बतौर एक विषय के प्रविष्ट कर दी गयी है।

चरित्र और सदाचार की बुनियाद पर जीवन का माधुर्य तथा आनन्द हम सब पायें, यह विचार पाठशाला की गृहविज्ञान की शिक्षा में एक मूलतत्त्व के रूप में प्रविष्ट किया गया है। इस दृष्टि से गृह-विज्ञान की शिक्षा में निम्नलिखित बातें समाविष्ट की गयी हैं :

(१) कौटुम्बिक सद्भाव तथा बाल-प्रेम की भावना उत्पन्न करना।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२) प्राथमिक उपचार तथा बाल-संवर्धन।
(३) रसोई बनाना।
(४) स्वच्छता तथा सफाई का ज्ञान प्राप्त करना।
(५) अपने तथा बालकों के कपड़ों की सिलाई तथा कपड़ों पर कढ़ाई-काम करना।
(६) गृह-व्यवस्था तथा गृह-शोभा की कला प्राप्त करना।
(७) चूड़ियाँ, खिलौने, पर्स इत्यादि बनाना।
(८) बाग-बगीचे का काम करना।
(९) चित्रकला, संगीत तथा नृत्य के प्रति रुचि बढ़ाना।
(१०) शरीर-स्वास्थ्य का ज्ञान सम्पादन करना तथा स्वास्थ्य का विकास करना। बीमार की सेवा करना।

शीलवर्धन तथा सदाचार की शिक्षा दूसरे विषयों की तरह वर्ग में सिखाई नहीं जा सकती, परन्तु घर, पाठशाला तथा समाज के वातावरण में प्राप्त की जा सकती है। उसके अनुकूल वातावरण बनाने के लिए शाला में निम्नलिखित व्यवस्था की गयी है:

(१) शाला का मुद्रा-लेख है: "सत्यं, शिवं, सुन्दरम्।" छात्राओं को पहनने के लिए दिये हुए कपड़े पर इसे अंकित किया गया है।

(२) शाला के भवन में प्रवेश करने के साथ ही तीन अक्षरों का चित्र सूत्रों के साथ ध्यानमन्त्र के तौर पर रखा गया है: (क) मैं कुछ भी अयोग्य नहीं देखूंगा। (ख) मैं कुछ भी दुःखदायी शब्द नहीं बोलूंगा। (ग) मैं किसी भी तरह की निन्दा नहीं सुनूंगा।

(३) रोज शाला में प्रवेश करते ही सब मौन व्रत धारण करके प्रवेश करें और प्रार्थना व सूत-कताई का कार्यक्रम होने तक मौन रखें, ऐसा नियम है।

(४) दैनिक काम का आरम्भ आधे घण्टे की सामूहिक सूत-कताई तथा प्रार्थना से होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(५) हर रोज शाम को शिक्षा-कार्य की पूर्णाहुति सफाई के काम से होती है।

(६) शिक्षा-स्थान की सफाई, रसोई-घर की सफाई, स्नान-गृह और शौचालय की सफाई हर एक शिक्षक तथा छात्र के लिए आवश्यक है।

(७) सबके लिए खादी की पोशाक आवश्यक है। हर साल २० सूत-गुंडियाँ कातनी पड़ती हैं।

(८) शिक्षण के सभी कार्य में तथा पाठशाला के व्यवस्था-कार्य में हुक्म-धाम-धमकी के बजाय सद्भावना तथा विश्वास से काम लिया जाता है। और हर कोई अपनी-अपनी जिम्मेदारी संभालता है, ऐसी परिपाटी चलायी है। स्वयं-प्रेरित शिक्षण का प्रयोग शाला के सब कामों में किया गया है। छात्राएँ आदि कोई नियम भंग करें तो शिक्षक डाँटते-धमकाते नहीं। परन्तु अपने दोष के लिए वह स्वयं शाला-समाज का उत्तरदायी है, ऐसा माना जाता है; और छात्राएँ भी इस बात को समझती हैं तथा उस दोष के लिए स्वयं शाला समाज को दैनिक प्रार्थना के बाद निवेदन करती हैं और यदि अपने दोष के लिए अपनी लापरवाही महसूस हो तो शाला-समाज के सन्मुख अपनी क्षमा-याचना प्रकट करती हैं, ऐसी पद्धति स्वयं-प्रेरित शिक्षा की पद्धति मानी गयी है।

(९) शाला का सहकारी स्टोर (संग्रह) हमेशा खुला रहे और छात्राएँ खुद के लिए आवश्यक चीज अपने आप उठा लें, ऐसी व्यवस्था रखी गयी है।

(१०) शाला के पुस्तकालय की आलमारियाँ खुली रहें, उसमें से अपनी गरज की पुस्तकें छात्राएँ अपने आप ले लें और पढ़कर व्यवस्थित रीति से रखें, ऐसी व्यवस्था की गयी है। पढ़ने में विशेष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रुचि पैदा हो और विश्वास, उत्तरदायित्व तथा व्यवस्था की तालीम मिले, इसलिए यह पद्धति रखी गयी है।

(११) श्रेणी ८ से ११ तक की हरएक छात्रा को समाज-सेवा का परिचय हो, इस हेतु से शाला में हरएक क्षेत्र में समाज-सेवा कार्य का समावेश नियुक्त किया जाता है।

(१२) परीक्षा-काल में शिक्षक तथा छात्राओं में परस्पर सम्पूर्ण विश्वास से काम हो—इस दृष्टि से शिक्षक निरीक्षण याने सुपरविजन नहीं करते।

साप्ताहिक 'नोंध'—डायरी, दैनन्दिनी

साप्ताहिक 'नोंध' में छात्राओं को स्वयं लिखने के विषयों में निम्न प्रश्नोत्तरी की जानकारी आवश्यक है।

(१) स्फूर्ति : क्या अभ्यास (अध्ययन, पढ़ना-लिखना, चिन्तन-मनन) करने में आलस्य आता है? अभ्यास करने में थकान आती है? बेचैनी लगती है? मन का और शरीर का चापल्य है?

(२) व्यवहार : क्या वर्ग में छात्राओं के साथ विनयपूर्ण व्यवहार के लिए सजगता रखी है? प्रार्थना शान्तिपूर्वक हुई है? शिक्षक और बड़ों के प्रति आदरयुक्त व्यवहार किया गया है? रेल-गाड़ी या बस में अन्य लोगों के साथ शिष्ट व्यवहार किया है?

(३) उत्साह : क्या गृहपाठ स्वतन्त्र रीति से और ठीक ढंग से किया है? वर्ग में चालू अभ्यास ध्यानपूर्वक सीखे हैं? शाला में या घर पर करने के लिए दिया गया कार्य उत्साहपूर्वक पूर्ण करने का प्रयत्न किया है? जो भी कार्य हो, वह स्वच्छ और अच्छी रीति से बने, ऐसा आग्रह रखा है?

(४) उत्तरदायित्व : क्या वर्ग में, प्रार्थना में, मैदान में नियमानुसार व्यवहार किया है? शिक्षक और वर्गमंत्री की सूचनाएँ आदरपूर्वक स्वीकार की हैं? कताई, सफाई, स्टोर, पुस्तकालय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और रसोई घर की व्यवस्था के नियमों का पालन किया है। सौंपा हुआ कार्य करने में कर्तव्य को पूर्णतया निभाया है ?

(५) अक्षर : क्या मरोड़दार, सीधे समान अक्षर दागमुक्त, स्वच्छ लिखाई का आग्रह रखा है। शुद्ध शब्द-संधि और विराम-चिन्हों का आग्रह रखा है ? अनुक्रमणिका रखने का आग्रह रखा है ?

(६) स्वच्छता : क्या पोशाक और बाल स्वच्छ है ? नोटबुक स्वच्छ है ? जहाँ-तहाँ कूड़ा-कचरा फेंकने का और न थूकने का नियम का पालन किया है ? पड़ा हुआ कूड़ा-कचरा देखने पर उसे उठाया है ?

(७) नियमितता : क्या ठीक समय पर शाला में आये हैं ? गृहपाठ नियमित किया है ? क्या बीमारी के कारण के सिवा गैर-हाजिर न रहने का प्रयत्न किया है ? प्रार्थना समय पर और कताई नियमित करते हैं ? [भूदानयज्ञ २१ जनवरी '६०]

सर्वोदय ही बुद्ध का सन्देश है—"बहुजनहिताय बहुजन-सुखाय"—इसमें 'बहु' शब्द संख्यावाचक नहीं है। इसका संकेत 'सर्वजनहिताय' की ओर है। ऐसा अर्थ नहीं होता तो अहिंसा का विचार सामने आता ही नहीं।

"लोकानुकम्पायै" में अनुकम्पा शब्द है।

अनु = पीछे-पीछे, साथ (with, together) सहानुभूति + करुणा। जिस समाज में वर्गभेद रहेंगे, वहाँ अनुकम्पा के लिए अवकाश नहीं। वेदान्त का अद्वैत + बुद्ध की अहिंसा = आज का युगधर्म बनता है।

[भूदानयज्ञ—२८-१२-५६ से] —विमला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

: ३ :

नख-दर्पण

—दादा धर्माधिकारी

[नाखून जितने दर्पण में जैसे मुँह देखा जा सकता है, उसी तरह (१९५५ में साबरमती के विचारशिविर में दिये गये एक प्रवचन में कुल सात मिनिटों में कहे गये इन सूत्रात्मक वाक्यों में श्र० दादा ने भूदान आदि यज्ञों का सुरेख स्वरूप-दर्शन करा दिया है। उस समय के 'भूमिपुत्र' पाक्षिक में वह प्रकाशित भी हो चुका है। श्र० विमला दीदी के उस समय के भूदान-विषयक लेखों के इस सङ्कलन की पूर्णाहुति में श्र० दादा के इन सूत्र-चित्र-वाक्यों का समावेश पाठकों को उपयोगी प्रतीत होगा ऐसे विश्वास से यह प्रस्तुत है। —सं०]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूमिदान किसलिए ?

तीन कारणों से—

१—खेती प्रधान देश में समाजपरिवर्तन का प्रारम्भ जमीन की व्यवस्था के परिवर्तन से होता है !

२—आज जिस तरफ़ जमाने का रुख है उससे इतना स्पष्ट है कि अब पूरी दुनिया की अर्थरचना अन्नप्रधान और खेतीप्रधान होने वाली है।

३—जमीन केवल अन्न-उत्पादन का साधन नहीं है। जमीन वसुन्धरा भी है। सभी खनिज जमीन में ही हैं, और अन्य सभी चीजें भी हमें जमीन में से ही मिलती हैं।

इसलिये क्रान्ति का प्रारम्भ जमीन से होगा ! क्योंकि

१—एशिया के देश खेतीप्रधान हैं।

२—जमाने का रुख खेतीप्रधान अर्थरचना की तरफ है।

३—भूमि वसुन्धरा है। इसलिये हमने भूमि से आरम्भ किया।

क्या हम एक के पास से मालिकी लेकर दूसरे को मालिकी देना चाहते हैं ?

बिलकुल नहीं, हम स्वामित्व की नींव बदल डालना चाहते हैं। यह नींव बदलने का अर्थ है उत्पादक की भूमिका बदलना।

इसके लिये क्रमशः हमें उत्पादन के स.धन उत्पादक को सौंप देने होंगे। जो जोतता हो उसी के कब्जे में जमीन हो, जो जोतता नहीं उसका जमीन पर स्वामित्व न हो। उत्पादक का स्वामित्व स्थापित हो, अनुत्पादक का स्वामित्व हटे, और आगे चलकर स्वामित्व किसी का भी न रहे। उत्पादन के साधन पर स्वामित्व किसी का न हो।

अतः स्वामित्व की नींव बदलने का अर्थ क्या ? अनुत्पादक के स्वामित्व का निराकरण और उत्पादक को स्वामित्व की भूमिका।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्पादक की भूमिका बदलने का अर्थ क्या ? उत्पादक भी स्वयं को उत्पादन के साधनों का मालिक न माने; साधनों का समाजीकरण हो। आरम्भ भूदान से हो, परिसमाप्ति ग्रामदान एवं ग्रामीकरण द्वारा हो।

सम्पत्तिदान किसलिए ?

(१) संग्रह के विसर्जन के लिये (२) जीविका के शुद्धीकरण के लिये (३) अनुत्पादक व्यवसायों के निराकरण के लिये।

आप एक करोड़ में से पचास लाख मुझे दे दो और पचास लाख अपने पास रखे रहो इसे सम्पत्तिदान नहीं कहा जायेगा। आपको ऐसा सङ्कल्प करना होगा कि मैं जो अनुत्पादक रोजगार करता हूँ उस अनुत्पादक रोजगार को ही समाज में से हटाना है। इस रोज़गार के लिये मुझे जो गलत काम करने पड़ते हैं उन्हें घटाता जाऊँगा। यह होगा आजीविका का शुद्धीकरण। संग्रह-विसर्जन यह नहीं कि आय का छठा भाग देता रहूँगा, साथ ही सम्पत्ति बढ़ाता भी जाऊँगा। संग्रहविसर्जन और अनुत्पादक धन्धों का निराकरण साथ ही साथ होगा।

अनुत्पादक व्यवसाय कितने प्रकार के हैं ?

१—ब्याज पर चलने वाले; २—भाड़े पर चलने वाले;
३—दलाली / लाईसेन्स पर चलने वाले;
४—गुनाहों पर चलने वाले (वकील)
५—दूसरों बीमारियों पर चलने वाले (डॉक्टर)
६—लोगों के व्यसनों पर चलने वाले (कलाल)

इन में से डॉक्टरी, वकालत, आदि उपयोगी सेवायें तो बनी रहें पर उनमें से नफ़ाखोरी मिट जाय, व्यसन पर निभते धन्धे सर्वथा हटा दिये जायें ब्याज, भाड़ा, दलाली आदि में से अमानवीय नफ़ाखोरी और घूसखोरी हटायी जाय—तो यह सम्पत्तिदान होगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रमदान किस लिये ?

मेरे सामने दो सिद्धान्त हैं। जो लोग श्रम नहीं करते वे श्रम करें?—श्रम की प्रतिष्ठा के लिये। जो लोग आज श्रम करते हैं वे श्रमदान क्या करें? श्रम को बाजार में से उठा देने के लिए। श्रम विनिमय की वस्तु न रहे; विक्रय की वस्तु न रहे।

जिनके पास सम्पत्ति और भूमि नहीं है, वे भी दाता बनें, दीन न रहें। उनके पास भी देने के लिये कुछ है, और वह सबसे बड़ी वस्तु है, यह गौरव उन्हें अनुभव में आये। वह हैं श्रम सम्पत्ति; जो कि उत्पादन का मुख्य साधन है। उसी का दान वे करें जिससे वे भी समाज में प्रतिष्ठित नागरिक बन जायें।

यह काम तलवार से न होगा।

क्योंकि तब तो तलवार की ही सत्ता स्थापित होगी : हमें मानव की सत्ता प्रतिष्ठित करनी है।

यह कानून से भी न होगा।

हमें लोगों को शान्तिपरायण तो बनाना है, किन्तु कानूनबाज नहीं बनाना है। लोभ सत्ताभिमुख न हों। Litigation (कायदे-बाजी) नहीं होनी चाहिये। Law.abiding (कानून पालने वाले) होना अलग बात है, और Litigant—कानून से लड़ने वाले होना अलग है। इसलिये हम जितना सुधार और क्रान्ति करना चाहते हैं वह कानून के विरोध में नहीं है, किन्तु इसमें कानून की अपेक्षा नहीं है, वह कानून-निरपेक्ष है।

यहाँ तलवार का विरोध है, कानून का विरोध नहीं, किन्तु यह काम कानून-निरपेक्ष है; सत्ता-निरपेक्ष है।

तो, प्रक्रिया क्या होगी ?

क्रान्ति में भी, न्याय में भी, सम्पत्ति के विसर्जन में भी नाग-रकों का परस्पर सहयोग होग; अर्थात् परस्पर समर्पण होगा। यह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दान की प्रक्रिया कहलाती है। यह नहीं कि एक दान देनेवाला—दानी हो, और दूसरा दान लेने वाला—आदानी हो। यह द'न की प्रक्रिया नहीं है। एक दाता हो दूसरा आदाता हो—यह हमारी भूमिका नहीं है। यहाँ सभी दानी हैं और सभी आदानी। सब देने वाले हैं और सभी लेने वाले हैं। यहाँ दान किसी व्यक्ति को नहीं दिया जाता, यह दान समाज के प्रतिनिधि विनोबा को दिया जाता है जो पूरे समाज के लिये है।

वितरण

वितरण भी कोई व्यक्ति नहीं करता। जिस दिन दान होता है, उसी दिन से भूमि भूमिहीनों की हो जाती है। फिर वितरण या तो भूमिहीनों के एकमत से होता है या चिट डाल कर किया जाता है। जब भूमिहीन एवं एकमत हो कर वितरण करते हैं तब भगवान् उनके मुख से बोलते हैं, जब वैसा नहीं होता तब अव्यक्त भगवान् ही वितरण कराते हैं, वह भी जनता के दरबार के बीच ही। कोई पक्ष नहीं, सरकार नहीं, विनोबा भी नहीं। क्योंकि वह सम्पत्ति या भूमि भगवान् की हो चुकी होती है। यही भूमि-वितरण की प्रक्रिया है।

॥ हरिः ॐ तत् सत् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रद्धा, व्यक्ति और संघ

—दादा धर्माधिकारी

हम में अन्धश्रद्धा न हो, लेकिन गहरी श्रद्धा जरूर हो। हमारे समाज में वह गहरी श्रद्धा है। वह न होती तो जितना काम हुआ वह भी न हो पाता।

पहले व्यक्ति पर श्रद्धा होती है, फिर वह विचार की तरफ बढ़ती है। वह एक प्रक्रिया है। संघ जो बनता है वह दो प्रकार का होता है।

(१) उन लोगों का संघ बनता है जिनका एक-दूसरे पर व्यक्तिगत प्यार बहुत होता है।

(२) उन लोगों का संघ बनता है, जिनमें प्यार भी है और जो समझते हैं कि धर्म के लिए हमें इकट्ठा होना जरूरी है। ये दोनों बातें साथ रहते हुए काम करने के लिए जरूरी हैं। कहा गया है कि वह झूठा है जो कहता है कि मैं भगवान् से प्यार करता हूँ, लेकिन जो अपने भाइयों से प्यार नहीं करता। जब वह उन भाइयों से प्यार नहीं करता जिन्हें सामने देखता है तो वह उन भगवान् से प्यार कैसे करेगा जिन्हें कभी प्रत्यक्ष देखा नहीं।

परस्पर प्यार के लिए यह जरूरी है कि सम्मिलित त्याग और सम्मिलित पराक्रम के कार्यक्रम भी उठाये जायें, जिनमें साहस भी हो।

[भूदान यज्ञ-११ मार्च '६०]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रान्ति की इक आग हूँ मैं खेल मुझ से ना करो।
खेल ही के खेल में कहीं जल उठे घर-बार सारा !
झुलस कर लपटों में इस की खाक होगो ज़िन्दगी।
बरबाद अपने आप को अपने हो हाथों ना करो।
आँच में इस आग की धोखे से जो भी आ गये।
खो कर अमन औ' चैन को, लुत्फे तबाही पा गये।
इश्क के परवाने हैं हम, मौत के दीवाने हम,
शौक़ जीने से अगर है, दूर हम से सब रहो !
खेल हम से ना करो !

[मौन के अनुनाद]

—विमला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरी कोशिश है कि हिन्दुस्तान में ऐसा समाज निर्माण हो कि जो पक्षातीत लोकनीति से समाज को ठीक रास्ते से रखने के लिए अपनो काया, वाचा, मन लगाता रहे। वह समाज ऐसा नहीं होगा कि जो व्यवहार और समाज के बहुत से कार्यों के लिए उदासीन रहेगा, बल्कि वह दक्ष और सदा सावधान रहेगा और हर बात को तटस्थ बुद्धि से देखेगा। लोकनीति का एक-एक विचार पक्का करने में हम अपना सारा बुद्धि-बल खर्च करेंगे। आज जो संशय की परिस्थिति है, वह अपने देश के लिए बहुत ही खतरनाक है। उसमें से भारत को मुक्त करना है, तो प्रतिक्षण सोचना होगा और काम पूरा करना होगा।

—विनोबा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi